यज्ञ

अंक – 11 वर्ष – 2018

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

झलकियाँ

2017-18

निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

हमारे संस्थान की वार्षिक हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का 11वां अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। पत्रिका के इस मंच के माध्यम से मैं आप सभी को संबोधित करना चाहूँगा कि जिस प्रकार आज, हमारा प्रतिष्ठित संस्थान अपने विभागों अर्थात जीएसडी, अनुसंधान, एमडीपी, आईपीडी, डब्ल्यूटीओ, एमएसएमई सेंटर आदि के बेहतरीन कार्य–निष्पादन के फलस्वरूप भारत के बिजनेस स्कूलों में अग्रणी बना हुआ है, ठीक उसी प्रकार संस्थान को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा वर्ष 2016–17 का 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्रदान किया गया। यह पत्रिका अपने स्वरूप, सामग्री और प्रस्तुति से अन्य कार्यालयों/संस्थानों से दो कदम आगे है। यही कारण है कि अब सभी को इसके नए अंक की प्रतीक्षा बनी रहती है।

भले ही मैंने कुछ माह पूर्व संस्थान का कार्यभार संभाला है, परंतु सौभाग्यवश मैं पहले से ही इसकी संपूर्ण रूप–रेखा से परिचित रहा हूँ। संस्थान प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, इसके लिए प्रशासनिक एवं शैक्षिक खंड में कार्य प्रगति पर है जिसका सुखद परिणाम शीघ्र ही प्राप्त होगा। अन्य कार्यों के साथ–साथ, इस पत्रिका का प्रकाशन, हमारे शासकीय दायित्वों का एक अंग है। इस दायित्व के साथ, हमारा उद्देश्य संस्थान के सदस्यों की लेखन प्रतिभा को उजागर करना है। पत्रिका में संस्थान की वर्ष भर की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को भी स्थान दिया जाता है ताकि सभी इन से अवगत रहें।

मैं "यज्ञ" के सफल प्रकाशन एवं भारत के बिजनेस स्कूलों में संस्थान का वर्चस्व बनाए रखने के लिए सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों व छात्रों को साधुवाद देता हूँ। "यज्ञ" के निरंतर प्रकाशन के लिए हिंदी कक्ष एवं संपादकीय मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी संस्थान में इस प्रकार के प्रयास जारी रहेंगे।

इस अवसर पर मेरी आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मनोज पंत

(प्रो. मनोज पंत)

संदेश

मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि भारत के अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अपनी गृह–पत्रिका "यज्ञ" वर्ष 2018 के 11वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। संस्थान द्वारा गृह–पत्रिका का हिंदी भाषा में प्रकाशन, सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में जारी दिशा–निर्देशों के पूर्णतया अनुपालन में एक महत्वपूर्ण कदम है। यद्यपि संस्थान की मुख्य गतिविधियों के केंद्र में अंतरराष्ट्रीय बिजनेस है जो अभी तक एक भाषा विशेष की परिधि में ही संभव प्रतीत होता है, तथापि हिंदी भाषा में रचित लेख, आलेख, कहानियां, कविताएं एवं संस्मरण आदि सभी सदस्यों एवं छात्रों की प्रतिभा एवं राष्ट्रीयता के द्योतक हैं। यह न केवल एक श्रेष्ठ संकलन का प्रतीक है, वरन् इसमें सभी की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान द्वारा अपनी शैक्षणिक गतिविधियों का बेहतरीन कार्य–निष्पादन सराहनीय है। साथ ही, केंद्र सरकार की राजभाषा नीतियों का शतप्रतिशत अनुपालन का प्रयास भी प्रशंसनीय है। यह अन्य शैक्षणिक संस्थानों एवं कार्यालयों के लिए एक प्रेरणास्रोत तथा अनुकरणीय है। संस्थान ने राजभाषा कार्यों के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए समय–समय पर और हाल ही में वर्ष 2016–17 के लिए माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा प्रदान 'क' क्षेत्र के लिए **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'** के तहत प्रदत्त **तृतीय पुरस्कार** से अपनी पात्रता को पूर्णतया प्रतिष्ठित किया है। भविष्य में, मुझे विश्वास है कि संस्थान इस स्तर को और श्रेष्ठता प्रदान करेगा।

गृह–पत्रिका "यज्ञ" के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(रजनीश)
संयुक्त सचिव
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

संदेश

संस्थान की गृह–पत्रिका "यज्ञ" के 11वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए हर बार की तरह एक सुखद अनुभव है। साहित्यिक अभिव्यक्ति भाषा की जड़ों की गहराई का मापदण्ड होती है। कोई व्यक्ति किसी भाषा में अपनी स्थानीय वास्तविकताओं की कितनी अभिव्यक्ति कर पाता है यह उस व्यक्ति की उस भाषा की पैठ का मापक हो सकता है। संस्थान के सभी सदस्यों ने "यज्ञ" का सफल प्रकाशन कर अपने हिंदी ज्ञान की बानगी देते हुए सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप, हिंदी के प्रयोग एवं प्रसार में एक सराहनीय कार्य किया है जिसके लिए वे प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

संस्थान राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय शिक्षण–प्रशिक्षण तथा अनुसंधान कार्यों के साथ–साथ संघ की राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति कटिबद्ध है। इस संवैधानिक दायित्व का पालन करने के अलावा, हिंदी हमारी राष्ट्रीय, भाषाई और सांस्कृतिक एकता की भी द्योतक है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनें ताकि हिंदी को हमारे देश में यथोचित स्थान प्राप्त हो।

मैं भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की गृह–पत्रिका "यज्ञ" के लगातार सफल एवं सुन्दर साज–सज्जा युक्त प्रकाशन के लिए हिंदी कक्ष एवं संपादन मंडल को बधाई देता हूँ। इसके अतिरिक्त, अपनी लेखन प्रतिभा से योगदान करने वाले संस्थान के सदस्यों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने श्रम एवं प्रतिभा का सदुपयोग कर इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान किया है। मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से यह पत्रिका रूचिकर व ज्ञानवर्धक सामग्री और आकर्षक साज–सज्जा से सभी को आकर्षित करेगी ।
धन्यवाद।

प्रमोद गुप्ता

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

संदेश

यह मेरे लिए हर्ष का विषय है कि उत्कृष्ट प्रबंधन संस्थानों में शामिल हमारा संस्थान प्रति वर्ष हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का प्रकाशन कर राजभाषा के प्रचार–प्रसार में संलग्न है और अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन कर रहा है। हम इन कार्यकलापों के माध्यम से अपने समाज और संस्कृति के विकास के लिए प्रयासरत हैं। गृह–पत्रिका संस्थान की समस्त गतिविधियों का एक पुंज है, हम सब निरंतर उससे जुड़े हुए हैं।

आज हमारा देश दुनिया के विकसित देशों के लिए एक बहुत बड़ा बाजार है, जिसमें अपने–अपने उद्योग तथा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए घोर प्रतिस्पर्धा बनी हुई है। इसी प्रतिस्पर्धा ने विश्व को हिंदी के साथ–साथ भारत की अन्य भाषाओं को स्थान देने के लिए विवश कर दिया है। ऐसी परिस्थिति में, जो देश विश्व पटल पर अपनी भाषा की पहचान एवं उपयोगिता सिद्ध करेगा वही अपने राष्ट्र का स्तर भी स्थापित करेगा। हिंदी हमारी संपर्क भाषा होने के अतिरिक्त, व्यापार एवं वाणिज्य की भी भाषा रही है। प्रौद्योगिकी स्तर पर भी अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी की स्वीकार्यता अत्यधिक पाई गई है। इस प्रकार, भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार, भविष्य में हिंदी विश्व भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है। वैसे भी, भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान प्राप्त हिंदी के उपयोग एवं प्रचार–प्रसार में हमारा नैतिक कर्तव्य तथा योगदान अपेक्षित है।

"यज्ञ" पत्रिका का पूर्व अंक अपने लेखों, कविताओं–कहानियों के साथ–साथ आकर्षक रूप में प्रकाशित हुआ था। यह संस्थान के सदस्यों के महत्वपूर्ण योगदान तथा हिंदी कक्ष के कठिन प्रयासों से ही संभव हो सका था। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए बधाई प्रेषित करता हूँ और मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी ऐसे प्रयास जारी रहेंगे।

धन्यवाद।

(डॉ. के. रंगराजन)
अध्यक्ष,
कोलकाता परिसर

संपादकीय

प्रिय साथियों,

सादर अभिनन्दन !

संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का निरंतर प्रकाशन हमारे संगठनात्मक प्रयासों को दर्शाता है जो किसी संस्था के निर्बाध रूप से प्रगति पथ पर अग्रसर होने का मूल मंत्र है। "यज्ञ" के अंक–11 की प्रस्तुति हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है, जो अपने उत्कृष्ट स्वरूप के साथ संस्थान की समग्र गतिविधियों को समेटे एक दर्शिका की तरह हमारे समक्ष है। हमारा संस्थान अग्रणी बिजनेस स्कूलों में अपना स्थान बनाए रखने के साथ–साथ अपने शासकीय दायित्वों के अनुरुप राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के प्रति पूर्णतः जागरूक है। माननीय राष्ट्रपति द्वारा संस्थान को प्रदान किया गया वर्ष 2016–17 का "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" व "यज्ञ" का प्रकाशन एक प्रमाण है। इस संपूर्ण प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में संस्थान काकुशलतापूर्वक प्रशासनिक संचालन, प्रतिभाशाली संकाय व छात्र ही हमारा संसाधन है।

किसी भी शैक्षिक संस्थान के अल्युमनाई और छात्र भी उस संस्थान को प्रगति के उच्च शिखर पर ले जाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। आईआईएफटी अल्युमनाई के साथ एमबीए(आईबी) बैच 2017–18 के छात्रों ने भविष्य की योजनाओं के लिए मार्गदर्शन व शंकाओं के निवारण में देश के विभिन्न महानगरों में चैप्टर मीट के नाम से अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसी के साथ ही, संस्थान के छात्रों द्वारा व्यापार संबंधी विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन तथा आपसी सौहार्द एवं सामाजिक जागृति को ध्यान में रखते हुए बिग फाइट, मैराथन, रक्तदान शिविर, अल्युमनस ऑफ द ईयर, विवान, अद्वैत 1.0, तितनोमाची, बैटल बाई लेक्स, क्वॉ वादिस, ट्रेजर हंट के अंतर्गत अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। समाज के पिछड़े वर्ग को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए गैर–सरकारी संस्थाओं के साथ कार्य किए गए हैं, जो राष्ट्र के प्रति छात्रों के समर्पण को दर्शाता है।

"यज्ञ" में संस्थान की वर्ष भर की उन्नयन राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रियाकलापों की संक्षिप्त झलक हमें गौरवांवित होने का अहसास कराती है। पुरस्कारों को अन्य संस्थानों के तुलनात्मक प्रदर्शन के लिए एक बेंचमार्क माना जाता है। आईआईएफटी के छात्रों ने अग्रणी संगठनों और प्रीमियर बी–स्कूलों द्वारा आयोजित प्रमुख प्रतियोगिताओं

में भाग लिया और पुरस्कार जीत कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। कोलकाता केन्द्र सहित संस्थान के सभी सदस्यों व छात्रों ने मौलिक लेख, कहानी, कविता, विचार एवं अनुभव रूपी आहुति देकर अपनी लेखन प्रतिभा, शासकीय कार्यों के प्रति जागरूकता, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा समन्वयता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

पत्रिका के माध्यम से संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपने विचार व कार्यक्षेत्र विशेष से संबंधित लेख जैसे– जीएसटी के अंतर्गत ई–वे बिल, बेहतर मानव संसाधन प्रबंधनः संगठन की कार्यकुशलता का आधार, जीवन के व्यावहारिक पक्ष तथा निजता को सामने रखते हुए लेख एवं संस्मरण जैसे – अकेलापनः है कोई उपचार?, सौंधी खुशबू – से अवगत कराया है। बदलते सामाजिक परिवेश व परिणामस्वरूप उपजे दोषों के निराकरण व जीवन को योजनाबद्ध बनाने के उद्देश्य से लिखे गए मौलिक लेख–आलेख जैसे – बेटे का माँ को पत्र, तनावः अमूर्त दैत्य, जो मानव ऊर्जा नष्ट करता है, प्रकृति की हस्ती, संपूर्णता की ओर, रिटायरमेंट बनाम नई जिंदगी का आगाज़, जब बेहद उदास और हताश हो जाएं, आदि हमारे लिए प्रेरणादायी तथा एक जांच बिंदु के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। वहीं राजभाषा हिंदी के संबंध में भाषा और हम, हिंदी को जनमानस का स्वरूप देना होगा और क्यों न करें हम हिंदी का प्रयोग? आदि लेख हमें स्वतंत्र भारत में राजभाषा हिंदी की स्थिति, उसके स्वरूप और उपयोगिता के संबंध में लेखकों के मंतव्य को दर्शाते हैं। संस्थान के सदस्यों व छात्रों ने अभिव्यक्ति के परिष्कृत माध्यम कविता में सफल प्रयोग करते हुए, अंग्रेज़ चले गए इन्हें छोड़ गए!, प्रेम का दिन, सफलता की एक शाम, जैसी कविताओं को पाठकों को समर्पित किया है और अपनी भावनाओं को संसूचित किया है।

हमारा सतत् प्रयास रहता है कि हम अपने काम में निरंतर सुधार करते हुए उद्देश्य पूर्ति पर केंद्रित रहें। राजभाषा हिंदी के प्रयोग का कार्य एक संगठित कोशिश है। ''यज्ञ'' पत्रिका को बेहतरीन सामग्री और साज–सज्जा के साथ प्रकाशित किया जाए, इसमें आप सभी का किसी न किसी रूप में चाहे लेख, कविता, संस्मरण, अनुभव या अपने कार्य संबंधी सामग्री के तौर पर योगदान की अपेक्षा की जाती है। अतः सभी से विनम्र अनुरोध है कि ''यज्ञ'' पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया/सुझावों/विचारों से हमें बेझिझक सूचित करें जिससे हम उन्हें ध्यान में रखते हुए अपने आगामी अंक को और अधिक पठनीय, उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बना सकें।

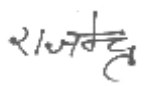

(राजेन्द्र प्रसाद)
हिंदी अधिकारी

विषय-सूची

अंक-11 वर्ष 2018

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	निदेशक की कलम से		1
2	संदेश – संयुक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय		2
3	संदेश – कुलसचिव		3
4	संदेश – अध्यक्ष, कोलकाता केंद्र		4
5	संपादकीय		5
6	संस्थान की गतिविधियां		9
7	संस्थान की उपलब्धियां		22
8	राष्ट्रीय कार्यक्रम		26
9	छात्र गतिविधियां		30
10	छात्र उपलब्धियां		35
11	ई–वे बिल की आवश्यक्ता क्यों ?	डॉ. राम सिंह एवं राजेन्द्र प्रसाद	37
12	बेटे का माँ को पत्र	अमिता आनंद	39
13	अकेलापनः है कोई उपचार?	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	41
14	भाषा और हम	राहुल सिंह	42
15	सफलता की एक शाम	संतोष कुमार	43
16	सौंधी खुशबू	एस. बालासुब्रमणियन	44
17	संस्थान का प्लेसमेंट कक्ष	संजीव कुमार	46
18	अंग्रेज़ चले गए इन्हें.....	कनक खरे	49
19	गर्मी के लिए शीतल पेय	नेहा विनायक	50
20	माइक्रोसॉफ्ट वर्ड – कीबोर्ड.....	नेहा विनायक	51
21	हिंदी : विच्छेद या संधि	अतुल कुमार	52
22	अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस	सतपाल सिंह	54
23	प्रकृति की हस्ती	राम सिंह मीना	56
24	प्रेम का दिन	राम सिंह मीना	57
25	तनावः अमूर्त दैत्य, जो.....	गौरव गुलाटी	58
26	बेहतर मानव संसाधन प्रबंधनः.....	राकेश कुमार ओझा	60
27	कहाँ पर बोलना है	रंजीत महतो	61
28	हिंदी को जनमानस की.....	देशराज	62
29	क्यों न करें हम हिंदी का प्रयोग ?	आर. एस. पटवाल	64

विषय-सूची

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
30	पर्यावरण और हमारा कर्त्तव्य	नीरू वर्मा	67
31	संपूर्णता की ओर	नीरू वर्मा	69
32	रिटायरमेंट बनाम नई जिंदगी.....	राजेन्द्र प्रसाद	70
33	जब बेहद उदास और.....	शकुन्तला अरोड़ा	73
34	संस्थान में राजभाषा हिंदी		75
35	स्वागत – नव नियुक्त		77
36	संस्थान में हिंदी सप्ताह		78
37	सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई		82
38	राजभाषा हिंदी का प्रादुर्भाव		83
39	वि.रा.भा.का. समिति सदस्य		88

संरक्षक
प्रो. मनोज पंत, निदेशक

संपादकीय मंडल
डॉ. रामसिंह
देशराज
प्रदीप कुमार खन्ना
राजेन्द्र प्रसाद

सहयोग
समस्त आई.आई.एफ.टी परिवार

प्रकाशक

हिंदी कक्ष
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी-21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली-110016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। हिंदी कक्ष का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान के बारे में

भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से 2 मई 1963 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) की स्थापना की गई थी। संस्थान ने अपनी 55 वर्षों की यात्रा के दौरान शैक्षणिक गतिविधियों के आयाम को व्यापक रूप से विस्तृत किया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार का पूरा क्षेत्र शामिल है। आज, संस्थान अपने ज्ञान और संसाधन आधारित समृद्ध विरासत के साथ देश और विदेशों में अपने मजबूत पूर्व छात्र नेटवर्क के लिए जाना जाता है।

अपनी चहुंमुखी उपलब्धियों की पहचान के लिए, संस्थान को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा मई 2002 में 'मानित विश्वविद्यालय' का दर्जा दिया गया और इसे डिग्री देने व अपने स्वयं के डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए प्राधिकृत किया गया।

राष्ट्रीय आकलन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) ने आईआईएफटी को 2015 में 3.53 के समग्र सीजीपीए स्कोर के साथ उच्चतम ग्रेड 'ए' से प्रत्यायित किया। आईआईएफटी एएसीएसबी से प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है और इस संबंध में एएसीएसबी द्वारा आईआईएफटी के आईएसईआर को स्वीकार कर लिया गया है।

वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के साथ संस्थान का निकट और स्थायी संबंध है तथा यह भारत व विदेशों दोनों स्तर पर प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक घरानों और शैक्षिक संस्थानों के साथ संबंध स्थापित कर रहा है। इन संबंधों ने संस्थान को प्रशिक्षण और अनुसंधान से संबंधित अपनी गतिविधियों का विस्तार और समग्र रूप से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने में मदद की है।

प्रबंधन बोर्ड, संस्थान का प्रमुख कार्यकारी निकाय है। प्रबंधन बोर्ड में 11 सदस्य हैं और इसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक करते हैं। सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, संस्थान के अध्यक्ष हैं। संस्थान के निदेशक संस्थान के प्रमुख कार्यकारी हैं और संस्थान के मामलों पर पर्यवेक्षण और नियंत्रण करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शिक्षा, अनुसंधान और सहयोग को संवर्धित करने और उसमें वृद्धि के लिए आईआईएफटी में निम्नलिखित विभाग एवं केंद्र हैं:–

संस्थान के विभिन्न विभाग व केंद्र

स्नातक अध्ययन विभाग (जीएसडी)

संस्थान का स्नातक अध्ययन विभाग (जीएसडी) पूर्णकालिक एवं दीर्घावधि कार्यक्रमों के लिए एक नोडल विभाग है। यह विभाग प्रशासनिक और शैक्षिक सहयोग प्रदान करने के अतिरिक्त, इन सभी कार्यक्रमों में सहभागियों की प्रवेश संबंधी गतिविधियों का संचालन भी करता है। संस्थान ने अपने प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2018–20 के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे, जिसके लिए कोलकाता सहित दिल्ली परिसर में 350 सीटों के लिए 61,969 आवेदन प्राप्त हुए। इस कार्यक्रम के लिए संस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 20 शहरों में एक कॉमन परीक्षा आयोजित की गई।

इसके अतिरिक्त, विभाग द्वारा 2 वर्ष 6 माह का एमबीए सप्ताहांत डिग्री कार्यक्रम भी चलाया जाता है जिसे विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। साथ ही, जीएसडी विभाग के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय बिजनेस में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम व आयात–निर्यात में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं, जिनके लिए प्रवेश प्रक्रियाएं आयोजित करने का कार्य भी जीएसडी विभाग द्वारा किया गया। ये सभी कार्यक्रम जीएसडी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. सुनीथा राजू व श्री भुवन चंद्र, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (शैक्षणिक) की देख–रेख में सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

- एमबीए (अंतरराष्ट्रीय बिजनेस) डिग्री कार्यक्रम – पूर्णकालिक।
- एमबीए (अंतरराष्ट्रीय बिजनेस) डिग्री कार्यक्रम – सप्ताहांत।
- अंतरराष्ट्रीय बिजनेस में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम।
- आयात–निर्यात में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम – सप्ताहांत।

51वां दीक्षांत समारोह – संस्थान द्वारा 28 जुलाई 2017 को नई दिल्ली में अपने 51वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्रों को पीएचडी तथा इंटरनेशनल बिजनेस में एमबीए की डिग्री प्रदान की गईं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय तत्कालीन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने दीक्षांत भाषण दिया व संस्थान द्वारा गत वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को पदक/पुरस्कार एवं डिग्री प्रदान कीं।

51वें दीक्षांत समारोह के दौरान तत्कालीन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन व संस्थान के सदस्य

इस अवसर पर संस्थान की चेयरमैन तथा वाणिज्य सचिव, भारत सरकार, श्रीमती रीता तेवतिया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और आईआईएफटी के तत्कालीन निदेशक श्री विनय कुमार ने उपस्थित सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

अंतरराष्ट्रीय परियोजना विभाग (आईपीडी)

संस्थान का अंतरराष्ट्रीय परियोजना विभाग (आईपीडी), अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों प्रकार के प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित करके अफ्रीका में अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं में क्षमताओं का विकास करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आईआईएफटी ने अफ्रीकी देशों में अगले पांच वर्षों में 40 क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विदेश मंत्रालय से 20 करोड़ रुपए के अनुदान की स्वीकृति प्राप्त की है। यह विभाग अफ्रीकी देशों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऑन–कैम्पस व ऑफ–कैम्पस कार्यक्रमों का आयोजन करता है। संस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंस मैनेजमेंट (आईएफएम) के सहयोग से वर्ष 2001 से दार–ए–सलाम (तंजानिया) में एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) कार्यक्रम चला रहा है। इसी श्रृंखला में 10 जुलाई 2017 को आईएफएम, तंजानिया में 12 छात्रों के नामांकन के साथ एमबीए (आईबी) 2017–18 बैच का उद्घाटन किया गया तथा 4 दिसम्बर 2017 को एमबीए (आईबी) 2016–17 बैच का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। 28 छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में आईपीडी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. सतिन्द्र भाटिया द्वारा समारोह की अध्यक्षता की गई।

सीएलएमवी देशों के लिए 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार' में डिप्लोमा कार्यक्रम

24 अप्रैल 2017 को संस्थान के दिल्ली परिसर में कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम (सीएलएमवी) देशों के प्रतिनिधियों के लिए इंटरनेशनल ट्रेड (पीजीडीआईटी) में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम प्रारंभ किया गया। इस 11 माह के कार्यक्रम में कुल 44 छात्रों में म्यांमार से 18, वियतनाम से 15, लाओस से 9 और कंबोडिया से 2 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दीक्षांत समारोह

सीएलएमवी देशों के छात्रों के लिए 15 मार्च 2018 को पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कार्यक्रम के समापन के अवसर पर दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सभी संबंधित देशों के राजदूत उपस्थित रहे। कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया।

सीएलएमवी देशों के प्रतिनिधियों हेतु आयोजित पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कार्यक्रम के समापन के अवसर पर आयोजित दीक्षांत समारोह

तत्कालीन आईआईएफटी, निदेशक, श्री अजय कुमार भल्ला के साथ सीएलएमवी देशों के प्रतिनिधियों का समूह फोटो

वर्ष के दौरान, अफ्रीकी देशों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर विभिन्न कार्यकारी क्षमता विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया:

- 19 से 22 सितम्बर 2017 के दौरान एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम लुआंडा, अंगोला में सहभागी संगठन ''एजेंसिया पैरा अ प्रोमोकाव डू इनवेस्टमेंटो ई एक्सपोर्टाकोज डे अंगोला (एपीआईईएक्स)'' के साथ मिलकर आयोजित किया गया। इसमें कुल 92 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- 5 अक्टूबर 2017 के दौरान एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, यह कार्यक्रम कैरो, इजिप्ट में सहभागी संगठन 'फॉरेन ट्रेड ट्रेनिंग सेंटर' के साथ मिलकर आयोजित किया गया, जिसमें 25 भागीदारों ने भाग लिया।

शोध अध्ययन

संस्थान के आईपीडी विभाग ने 'इजरायल एफटीए' और 'माल ढुलाई के क्षेत्र में भारत के लिए वार्ता की स्थिति' पर अध्ययन रिपोर्ट तैयार की और सितंबर 2017 में वाणिज्य विभाग, भारत सरकार को अंतिम रिपोर्ट सौंपी गई।

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग (एमडीपी)

यह विभाग अंतरराष्ट्रीय व्यापार, अंतरराष्ट्रीय विपणन, वित्त, निर्यात–आयात प्रबंधन, नीतिगत प्रबंधन, मानव संसाधन, आईटी और सॉफ्टवेयर प्रबंधन, कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर), ई–शासन, विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड), डॉलर–रुपए का मूल्यांकन आदि के क्षेत्र में सरकारी/पीएसयू, कॉरपोरेटों और निजी क्षेत्र के अधिकारियों/कार्यपालकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

भारतीय व्यापार सेवा परिवीक्षार्थियों के साथ माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद व प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी व संकाय सदस्य

एमडीपी विभाग द्वारा वर्ष के दौरान आईएएस तथा अन्य अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों, जैसे कि भारतीय वन सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के लिए विभिन्न सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। आईआईएफटी, भारतीय व्यापार सेवा परिवीक्षार्थियों के लिए 9 मास का आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक नोडल संस्थान है। इसके अतिरिक्त, संस्थान भारतीय राजस्व सेवा, भारतीय विदेश सेवा, भारतीय

आर्थिक सेवा, भारतीय सांख्यिकीय सेवा आदि के अधिकारी प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। एमडीपी विभाग कार्यरत कार्यपालकों के लिए विभिन्न ऑनलाइन डिप्लोमा और प्रमाण–पत्र कार्यक्रमों का संचालन करता है जिसमें वर्ष के दौरान आयोजित किए गए प्रमुख कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं:

- अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा (हाइब्रिड) ।
- अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय रणनीति में कार्यपालक स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
- अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय एवं वित्त में स्नातकोत्तर प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।
- निर्यात एवं आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।

हाल ही में सशस्त्र बलों के सेवारत अधिकारियों हेतु "वैश्विक आपूर्ति'' श्रृंखला प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है, जिसका उद्देश्य सेवानिवृत्ति के पश्चात उनके पुनर्वास में मदद करना है। यह कार्यक्रम पुनर्वास महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से संचालित किया गया है।

निर्यात बंधु कार्यक्रम – एमडीपी विभाग भारत सरकार की निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत देश भर के निर्यातकों व उद्यमियों के लिए निर्यात–आयात पर ऑनलाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रमों की एक श्रृंखला भी संचालित करता है। संस्थान की चेयरपर्सन (एमडीपी) डॉ. विजया कट्टी, संकाय सदस्यों व कंप्यूटर सेंटर में सहायक प्रणाली प्रबंधक श्री एस. बालासुब्रमणियन के अथक प्रयासों से इन कार्यक्रमों के अंतर्गत अब तक 24 बैचों के द्वारा 1000 से भी ज्यादा उद्यमियों व निर्यातकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

निर्यात बंधु कार्यक्रम के सहभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुऐ प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी

अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग

आईआईएफटी का अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग देशज और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ शैक्षिक गठबंधन कायम करके संस्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे संयुक्त प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें। इन संस्थानों के साथ छात्र व संकाय आदान–प्रदान शैक्षिक सहयोग का एक अभिन्न अंग है। संस्थान, विख्यात देशज और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की सदस्यता प्राप्त करके शैक्षिक सहयोग को और मजबूत बनाता है। विभाग राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सम्मेलनों में संकाय की भागीदारी को भी सुविधाजनक बनाकर संकाय विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।

ब्रैडली प्रतिनिधिमंडल का दौरा

6 अक्टूबर 2017 को ब्रैडली विश्वविद्यालय से 15 सदस्यों (14 छात्र एवं 1 संकाय) के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली का दौरा किया। ब्रैडली विश्वविद्यालय की ओर से इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व डॉ. राजेश अय्यर, विपणन के सहयोगी प्रोफेसर द्वारा किया गया था। संस्थान की ओर से इस वार्ता में आईआईएफटी निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, आईसीसीडी चेयरपर्सन डॉ. रवि शंकर, डॉ. रुप्पल वालिया शर्मा तथा डॉ. जैकलिन सिम्स ने भाग लिया।

6 अक्टूबर 2017 को ब्रैडली विश्वविद्यालय से आए 15 सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी व संकाय सदस्य

अनुसंधान विभाग

अनुसंधान का संस्थान के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह ज्ञान के सृजन और प्रशिक्षण के बीच एक मजबूत सेतु प्रदान करता है। इसने अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय परिदृश्य का विश्लेषण करने और उपयुक्त कॉर्पोरेट कार्यनीतियां विकसित करने के लिए पर्याप्त परामर्श क्षमता विकसित की है। संस्थान, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रकार की परियोजनाओं के लिए सफलतापूर्वक बोली लगाता है। अनुसंधान विभाग समय–समय पर समकालीन विषयों पर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करता रहता है, जो बहुपक्षीय निकायों, सरकारी क्षेत्र एवं प्रसिद्ध शैक्षिक संस्थानों के प्रख्यात व्यक्तियों को एक मंच पर लाते हैं। वर्ष 2017 के दौरान, विभाग द्वारा चलाए जाने वाले पीएचडी कार्यक्रम व आयोजित की गई परियोजनाएं निम्न प्रकार हैं:

- निर्यात प्रबंधन व नियमावली का अनुपालन।
- कैमिकल व पैट्रोकैमिकल क्षेत्र पर एफटीए का प्रभाव।
- महाराष्ट्र के लिए निर्यात रणनीति का विकास।
- स्त्रोत केंद्र के रूप में भारत का प्रचार करने के लिए चुनौतियां एवं रणनीति।

7 सितम्बर 2017 को संस्थान में पीएचडी कार्यक्रम–2017 का उद्घाटन

पीएचडी कार्यक्रम – अनुसंधान विभाग द्वारा चलाया जा रहा पीएचडी कार्यक्रम अब लोकप्रियता के शिखर पर है। पीएचडी कार्यक्रम–2017 का उद्घाटन 7 सितम्बर 2017 को किया गया तथा लिखित परीक्षा, समूह चर्चा एवं साक्षात्कार के आधार पर कुल 20 अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया गया। वर्ष 2016–17 में 9 छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। इस प्रकार, अभी तक संस्थान ने कुल 29 पीएचडी डिग्री प्रदान की हैं।

''भारत एक स्त्रोत केन्द्र एवं निवेश गंतव्य'' पर सम्मेलन

कपड़ा मंत्रालय, सरकार भारत द्वारा 30 जून से 2 जुलाई 2017 के दौरान गांधी नगर, गुजरात में 'टेक्सटाइल इंडिया 2017' नामक तीन दिवसीय मेगा इंटरनेशनल कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। कार्यक्रम के भाग के रूप में, वस्त्र मंत्रालय ने 2 जुलाई 2017 को ''भारत एक स्त्रोत केन्द्र एवं निवेश गंतव्य'' के रूप में सम्मेलन के आयोजन हेतु अधिकृत किया था। तत्कालीन वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। इस अवसर पर आईआईएफटी दिल्ली से प्रोफेसर डॉ. राकेश मोहन जोशी ने ''इंडिया एज ए ग्लोबल सोर्सिंग हब चुनौतियाँ और रणनीतियां'' (खरीददार घरानों और प्रोड्यूसर्स के परिप्रेक्ष्य) के अध्ययन से निष्कर्ष प्रस्तुत किए और भारत और चीन के व्यापार संबंधों पर प्रकाश डाला।

30 जून से 2 जुलाई 2017 के दौरान गांधी नगर, गुजरात में आयोजित 'इंडिया एज ए ग्लोबल सोर्सिंग हब' कार्यक्रम में संस्थान की ओर से अनुसंधान विभाग के चेयरपर्सन डॉ. आर.एम. जोशी

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद

संस्थान में डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, डब्ल्यूटीओ बातचीत–सम्बद्ध ज्ञान और प्रलेखन के एक स्थाई संग्रहस्थल के रूप में कार्य करने के अतिरिक्त, सामान्यतः व्यापार में और विशेष रूप से डब्ल्यूटीओ के मामले में एक अनुसंधान इकाई है। भारत सरकार द्वारा इससे नियमित रूप से अनुसंधान आयोजित करने और स्वतंत्र विश्लेषणात्मक इनपुट उपलब्ध कराने के लिए कहा जाता है, जिससे कि उसे डब्ल्यूटीओ व अन्य फोरमों यथा मुक्त तथा प्राथमिकतापूर्ण व्यापार करार (एफटीए/पीटीए) और विस्तृत आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए) दोनों में, इसकी विभिन्न व्यापार

वार्ताओं में अपनी स्थिति विकसित करने में मदद मिल सके। इसके अतिरिक्त, केंद्र, बहुत से समारोह आयोजित करके अपने आउटरीच और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से उद्योग और सरकारी इकाइयों तथा साथ ही अन्य विशेषज्ञों के साथ सक्रिय रूप से विचार–विमर्श करता रहता है, जिससे कि यह विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं के बीच मतैक्य निर्माण हेतु एक प्लेटफार्म के रूप में कार्य कर रहा है।

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित कार्यकलापों के पीछे तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना हैः (1) डब्ल्यूटीओ में सक्रियतापूर्वक भागीदारी में भारत के व्यापार वार्ताकारों और नीति निर्माताओं की सहायता करना तथा सम्बद्ध बहुपक्षीय व्यापार बातचीत में सहायता प्रदान करना, (2) साझीदारों के बीच पकड़ तथा प्रसार कार्यकलापों के माध्यम से प्रमुख व्यापार मुद्दों की समझबूझ में वृद्धि करना, और (3) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से डब्ल्यूटीओ व अन्य व्यापार–सम्बद्ध मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए भारत में तथा अन्य विकासशील देशों में क्षमताओं का विकास करना।

वर्ष 2017–18 के दौरान डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गएः–

अफगानिस्तान के लिए व्यापार क्षमता के निर्माण का उद्घाटन

जिनेवा स्थित अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र (आईटीसी) के साथ एक परियोजना के तहत डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र (सीडब्ल्यूएस), भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) द्वारा आयोजित अफगानिस्तान के लिए व्यापार क्षमता निर्माण के परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 9 अक्तूबर 2017 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में किया गया। उद्घाटन समारोह में अफगानिस्तान के वाणिज्य एवं उद्योग उप मंत्री महामहिम कमिला सिद्दीकी; भारत की वाणिज्य सचिव श्रीमती रीता तेवतिया; तथा भारत में अफगानी दूतावास के मिशन के उप प्रमुख श्री मिरवायस बालखी ने भाग लिया। इसके अलावा, आईआईएफटी के निदेशक, डॉ मनोज पंत, डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र के प्रो. मुकेश भटनागर भी उपस्थित थे।

9 अक्तूबर 2017 को आईआईएफटी, नई दिल्ली में अफगानिस्तान के लिए व्यापार क्षमता निर्माण के परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

कार्यक्रम के दौरान व्यापार और आईपीआर, सेवाओं में व्यापार, गैर–शुल्क उपाय, व्यापार विवाद, व्यापार उपाय और व्यापार डेटा जैसे कई विषयों को कवर किया गया। परियोजना का उद्देश्य अफगानिस्तान की व्यापार–संबंधी क्षमता को विश्व व्यापार में उसकी प्रभावी और सार्थक भागीदारी के निर्माण के महत्व की पहचान करना था। डॉ. पंत ने कहा कि इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम की लंबी अवधि से प्रतिभागियों को विभिन्न व्यापार समझौतों के तकनीकी पहलुओं की समझ में सहायता मिलेगी और उन्हें अपने विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान का अग्रणी बनाएगी।

पोस्ट–एमसी 11 चरण में विश्व व्यापार संगठन पर विचार–मंथन

वाणिज्य विभाग और विश्व व्यापार संगठन अध्ययन केंद्र द्वारा 19–20 फरवरी 2018 को पोस्ट–एमसी 11 चरण में विश्व व्यापार संगठन पर एक दो–दिवसीय विचार–मंथन बैठक का आयोजन किया गया था। इसके प्रतिभागियों में उद्योग, सरकार, शिक्षाविद, विचारक समूह, नागरिक समाज और व्यापार नीति विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल थे।

इस दो–दिवसीय विचार–मंथन बैठक के आयोजन का उद्देश्य पोस्ट–एमसी 11 चरण में विश्व व्यापार संगठन पर विचारों को हासिल करने के लिए यथासंभव व्यापक रूप से परामर्श करना था। एजेंडा व्यापक था, जिसमें कृषि, सेवाओं, निवेश सुविधा, ई–कॉमर्स, संस्थागत मुद्दे, विकास, एमएसएमई जैसे कई मुद्दों को शामिल किया गया था। बैठक में विश्व व्यापार संगठन के मौजूदा वार्तालाप के एजेंडे में और साथ ही कुछ देशों द्वारा भविष्य की वार्ता के लिए प्रस्ताव किए जा रहे दोनों मुद्दों पर व्यापक भागीदारी और विचारों का एक स्पष्ट और गहन आदान–प्रदान देखा गया।

19–20 फरवरी 2018 को पोस्ट–एमसी 11 चरण में विश्व व्यापार संगठन पर दो–दिवसीय विचार–मंथन बैठक को संबोधित करते हुए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु

डब्ल्यूटीओ सचिवालय के साथ भागीदारी में 5 से 7 मार्च, 2018 के दौरान 'एशियाई जांच अधिकारियों के लिए क्षेत्रीय व्यापार उपाय कार्यशाला' के दौरान आईआईएफटी चेयरमैन श्रीमती रीता तेवतिया व निदेशक प्रो. मनोज पंत

कार्यक्रम के दौरान अपनी टिप्पणी में, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने चर्चा किए गए मुद्दों की गहराई एवं विस्तार और प्रतिभागियों द्वारा प्रदान की गई अंतर्दृष्टि पर अत्यधिक संतोष व्यक्त किया। उन्होंने जोर दिया कि विशेष और अंतर व्यवहार, विश्व व्यापार संगठन के ढांचे का एक महत्वपूर्ण पहलू है और यह भारत के लिए अपरक्राम्य है। जबकि अन्यों द्वारा उठाए जा रहे नए मुद्दों में से कुछ भारत के लिए भी प्रासंगिक हो सकते हैं। मौजूदा मुद्दे यथा कृषि महत्वपूर्ण आजीविका मुद्दे हैं, जो भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

एशियाई जांच अधिकारियों के लिए क्षेत्रीय व्यापार उपाय कार्यशाला

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान ने नई दिल्ली में डब्ल्यूटीओ सचिवालय के साथ भागीदारी में 5 से 7 मार्च 2018 तक 'एशियाई जांच अधिकारियों के लिए क्षेत्रीय व्यापार उपाय कार्यशाला' का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमती रीता तेवतिया, वाणिज्य सचिव, भारत सरकार द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत; श्री सुनील कुमार, अपर सचिव एवं नामित प्राधिकरण, डीजीएडी और श्री जेसी क्रेयियर, वरिष्ठ परामर्शदाता, नियम डिवीजन, विश्व व्यापार संगठन ने भी भाग लिया।

कार्यशाला के दौरान विभिन्न विश्व व्यापार संगठन के सदस्य राज्यों से जांच करने वाले प्राधिकारियों को प्रतिकारी कर्त्तव्यों और सुरक्षा उपायों को लागू करने के संबंध में उनके देश के व्यवहारों को साझा करने के लिए एक साथ लाया गया। कार्यशाला का उद्देश्य विश्व व्यापार संगठन के नियमों के अनुरूप, निष्पक्ष और कुशल तरीके से प्रतिकारी और सुरक्षा उपायों से जांच करने के लिए एशियाई विकासशील सदस्यों की तकनीकी क्षमता विकसित करने के लिए उनकी सहायता करना था।

कार्यशाला में विश्व व्यापार संगठन के पंद्रह सदस्य राज्यों, अर्थात् ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, चीन, चीनी ताइपेई, भारत, इंडोनेशिया, जापान, मलेशिया, यूरोपीय संघ, खाड़ी सहयोग परिषद, फिलीपींस, थाईलैंड, तुर्की, संयुक्त राज्य अमेरिका और वियतनाम के जांच प्राधिकारियों ने भाग लिया।

भारतीय व्यापार और निवेश कानून (सीटीआईएल) केंद्र

यह केंद्र वर्ष 2016 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में स्थापित किया गया है। केंद्र का प्राथमिक उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश कानून से संबंधित कानूनी मुद्दों का ठोस और गहन विश्लेषण प्रदान करना है। केंद्र का कार्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के विभिन्न क्षेत्रों जैसे डब्ल्यूटीओ कानून, निवेश कानून और आर्थिक एकीकरण से संबंधित कानूनी मुद्दों में एक अग्रणी की भूमिका का निर्वहन करना है। सीटीआईएल का मिशन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के व्यापक पहलुओं पर अंतरराष्ट्रीय बातचीत को प्रभावित करने हेतु रचनात्मक विचारों, विश्लेषण और दृष्टिकोणों की पहचान प्रदान करना है। यह केंद्रीय तथा राज्य सरकारों, विचार मंडलों, शोध केंद्रों, राष्ट्रीय कानून विद्यालयों व कानूनी शिक्षा प्रदान करने वाले अन्य संस्थानों, कानूनी शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून, स्वतंत्र कानूनी पेशेवरों, उद्योग और निजी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वालों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़ना है। केंद्र को व्यापार और निवेश से संबंधित जानकारी के तैयार भंडार के रूप में भी माना जाता है, जिसमें चालू व्यापार वार्ता और विवादों पर अद्यतन जानकारी शामिल हैं।

19 दिसम्बर 2017 को /@ctil_india के सहयोग से नई दिल्ली में ''वार अगेंस्ट आईएसडीएसः रीबेलियन विदआउट ए कॉज ऑर लॉस्ट बैटल?'' पर पैनल चर्चा का आयोजन

19 दिसम्बर 2017 को/ctil_india के सहयोग से @SaieInIndia द्वारा एनटीएच कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली में ''वार अगेंस्ट आईएसडीएसः रीबेलियन विदआउट ए कॉज ऑर लॉस्ट बैटल?'' पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

भारतीय कानूनी सेवा क्षेत्र में सुधारों पर ''बार नेतृत्व शिखर सम्मेलन''

भारतीय राष्ट्रीय बार एसोसिएशन (आईएनबीए) के सहयोग से वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एंव उद्योग मंत्रालय तथा व्यापार एवं निवेश कानून केंद्र (सीटीआईएल), भारतीय विदेश व्यापार संस्थान व्यापार द्वारा 11 नवंबर 2017 को नई दिल्ली में भारतीय कानूनी सेवा क्षेत्र में सुधारों पर ''बार नेतृत्व शिखर सम्मेलन'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सत्य पाल सिंह, माननीय मानव संसाधन विकास (उच्चतर शिक्षा) राज्य मंत्री, भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों और कानूनी क्षेत्र के कई प्रमुख वकीलों एवं पेशेवरों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की।

शिखर सम्मेलन ने भारतीय कानूनी सेवा क्षेत्र के उदारीकरण के आसपास के मुद्दों और चिंताओं का पता लगाया। शिखर सम्मेलन में तीन प्रमुख मुद्दों पर चर्चा शामिल थीः (1) भारत में मध्यस्थता का आयोजन; (2) भारतीय कानूनी नियामक क्षेत्र में सुधार; और (3) भारतीय कानूनी सेवाओं का उदारीकरण।

इस अवसर पर केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने एक वीडियो संदेश के माध्यम से शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए वैकल्पिक विवाद समाधान (एडीआर) तंत्र के बढ़ते हुए महत्व पर जोर दिया और कानूनी समुदाय को व्यवसाय करने में आसानी लाने के लिए इस तंत्र का उपयोग तेजी से करने के लिए प्रोत्साहित किया।

11 नवंबर 2017 को नई दिल्ली में ''भारतीय कानूनी सेवा क्षेत्र में सुधारों पर बार नेतृत्व शिखर सम्मेलन'' का आयोजन

क्षेत्रीय व्यापार केंद्र (सीआरटी)

यह केंद्र स्वायत्त विचार–मंडल के रूप में हाल ही में वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है।

क्षेत्रीयता की दृष्टि के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को देखते हुए सीआरटी नीति उन्मुख शोध पर ध्यान केंद्रित करना अनिवार्य है। अनुसंधान, क्षमता निर्माण और आउटरीच कार्यक्रमों के व्यापक क्षेत्रों में माल में व्यापार, सेवाओं में व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और विकास संबंधी मुद्दों को शामिल किया गया है।

क्षेत्रीय व्यापार और उसके बाद (आरटीबी) मासिक आधार पर दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से समाचार, ट्रैकिंग व्यापार और आर्थिक सहयोग के प्रयास करता है; कुछ विख्यात विशेषज्ञों के परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है; संक्षेप में कुछ सांख्यिकीय रुझान का विश्लेषण करता है; और क्षेत्रीय व्यापार का निरीक्षण प्रस्तुत करता है।

रीजनल ट्रेड एंड बियॉड, सं.1(1) नवंबर 2017
रीजनल ट्रेड एंड बियॉड, सं.2(1) दिसम्बर 2017

प्रौद्योगिकी में अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र (सीआईटीटी)

प्रौद्योगिकी व्यापार में भारत की क्षमता को वास्तविक रूप देने और संस्थागत जटिलताओं का समाधान करने के प्रमुख उद्देश्य से, आईआईएफटी द्वारा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग,

भारत सरकार की सहायता से अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी व्यापार केंद्र (सीआईटीटी) की स्थापना की गई। वर्ष 2002 में प्रारंभ किए गए केंद्र के कार्यकलापों को नीति निर्माताओं तथा उद्योगों को प्रौद्योगिकी व व्यापार इंटरफेस के मुद्दों एवं अवसरों पर संवेदनशील करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। केंद्र ने भारत में व्यापार साझीदारों के द्वारा संबंधित प्रौद्योगिकी पहचान, निवेश व समावेश के लिए नीति अनुसंधान एवं क्षमता निर्माण से संबंधित अपने कार्यकलाप जारी रखे हैं।

केंद्र ने वर्ष 2017 के दौरान दो निम्न महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करते हुए संपन्न की हैं:

- प्रथम अध्ययन, "क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास संकेतकों का मान्यकरण" था, जिसका उद्देश्य भारतीय उद्योग में अनुसंधान एवं विकास की वृद्धि के मानदंड के माध्यम से विश्व स्तर पर मान्य निगरानी तंत्र लाना है।

- द्वितीय अध्ययन, ''ऑनलाइन जीईएम प्लेटफार्म के अपने संक्रमण हेतु डीजीएसएंडडी की क्षमता और संगठन संरचना'' वाणिज्य विभाग, डीजीएसएंडडी द्वारा प्रायोजित था।

कार्यशाला

केन्द्र द्वारा 10 अक्टूबर 2017 को नई दिल्ली स्थित संस्थान में ''राष्ट्रीय एसएंडटी प्रणाली में उभरते और समकालीन अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार संकेतक और नीति क्रियान्वयन–एक व्यापक अध्ययन'' पर कार्यशाला आयोजित की गई।

एमएसएमई अध्ययन केन्द्र

एमएसएमई अध्ययन केन्द्र ने इस अवधि में राष्ट्रीय स्तर पर नई विदेश व्यापार नीति 2015–20 के अंतर्गत घोषित "केंद्रित बाजारों में व्यवसाय करना" पर अनुसंधान परियोजनाएं और परामर्श कार्य आयोजित करने की दिशा में विभिन्न निर्यात संवर्धन परिषदों के साथ सहयोग किया है। इन परिषदों में हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद, चर्म निर्यात परिषद, ईईपीसी आदि शामिल हैं। विस्तार की दृष्टि से केंद्र ने निर्यात प्रबंधन पर अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करने के उद्देश्य से संयुक्त पहल के रूप में सीआईआई के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। वर्ष 2017 के दौरान ''निर्यात स्टार्टअप बनाने की दिशा में'' अपना वार्षिक उद्यमिता शिखर सम्मेलन का आयोजन किया है तथा भारत के खुदरा निर्यात के लिए ई–कॉमर्स की तलाश पर चर्चा करते हुए रिपोर्ट जारी की है।

एलआईआईएफटीः काईट्स स्टार्टअप कांक्लेव

एमएसएमई अध्ययन केंद्र के लिए कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व निधि के अंतर्गत मित्सुबिशी कॉरपोरेशन इंडिया लिमिटेड और मेटल वन इंडिया कॉरपोरेशन द्वारा स्थापित आईआईएफटी इनक्यूबेशन सेल ''काईट्स'' की पहल पर निर्यात स्टार्टअप तैयार करने की दिशा में: वार्षिक उद्यमिता शिखर सम्मेलन'' का आयोजन किया गया। आईआईएफटी में ई–सेल और उड़ान के सहयोग से रविवार, 20 अगस्त 2017 को लिफ्ट (आईआईएफटी में लॉन्च पैड) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री अमिताभ कांत (आईएएस), सीईओ, नीति आयोग ने किया और डॉ. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी ने इसकी अध्यक्षता की। इसमें हमारे प्रतिष्ठित अतिथियों श्री एच.के. मित्तल, सलाहकार और सदस्य सचिव (एनएसटीईडीबी) ने डॉ. के. रंगराजन, प्रमुख, एमएसएमई की उपस्थिति में भाग लिया।

10.10.2017 को संस्थान में ''राष्ट्रीय एसएंडटी प्रणाली में उभरते और समकालीन अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार संकेतक और नीति क्रियान्वयन – एक व्यापक अध्ययन'' पर कार्यशाला का आयोजन

20 अगस्त 2017 को लिफ्ट (आईआईएफटी में लॉन्च पैड) के उद्घाटन समारोह में (दाएँ) प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी

ई–कॉमर्स के माध्यम से भारतीय एमएसएमईज की निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना – पैनल चर्चा

एमएसएमई इकाइयों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त रूप से विभिन्न गतिविधियों पर काम करने की दिशा में एमएसएमई अध्ययन केंद्र का उद्योग एसोसिएशन और निर्यात संवर्धन परिषदों के बीच एक तालमेल है। वर्तमान में ''विनिर्माण क्षेत्र में भारत के खुदरा निर्यात के लिए ई–कॉमर्स की तलाश करने की संभावना'' पर एमएसएमई–आईआईएफटी और एफआईसीसीआई–एमएसएमई डिविजन की एक रिपोर्ट 30 मई 2017 को फिक्की में एमएसएमई के श्री एस.एन. त्रिपाठी, एएसएंडडीसी द्वारा जारी की गई।

''विनिर्माण क्षेत्र में भारत के खुदरा निर्यात के लिए ई–कॉमर्स की तलाश करने की संभावना'' पर रिपोर्ट का विमोचन करते दाएं से क्रमशः संस्थान से डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी व डॉ. के. रंगराजन, प्रमुख, कोलकाता सेंटर

एएसीएसबी इंटरनेशनल का प्रत्यायन

एएसीएसबी इंटरनेशनल–एसोसिएट टु एडवांस कॉलेजिएट स्कूल्स ऑफ बिजनेस, टाम्पा, फ्लोरिडा, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में स्थित एक गैर–लाभकारी निगम है तथा विश्व के सबसे शीर्ष बी–स्कूल एएसीएसबी द्वारा मान्यता प्राप्त है। एएसीएसबी शिक्षण, शोध, पाठ्यक्रम विकास और छात्र शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में स्कूलों को अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है तथा व्यापार और लेखा कार्यक्रमों के लिए स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डॉक्टरेट स्तर पर विशेष प्रत्यायन प्रदान करता है।

आईआईएफटी जनवरी 2014 में एएसीएसबी का सदस्य बना। चूंकि आईआईएफटी ने शीर्ष अंतरराष्ट्रीय बिजनेस स्कूलों में अपनी एक स्थायी स्थिति स्थापित करने का लक्ष्य रखा है, अतः अपने सभी डिग्री, कार्यकारी और डॉक्टरेट कार्यक्रमों की अंतरराष्ट्रीय स्थिति संस्थान को वैश्विक मान्यता सुधारने में मदद करेगी। संस्थान वर्तमान में एएसीएसबी से अंतरराष्ट्रीय प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। एएसीएसबी के कार्यान्वयन के एक भाग के रूप में, प्रत्यायन समिति द्वारा संस्थान की आईएसईआर अद्यतन रिपोर्ट क्रमशः 2016 और 2017 में स्वीकार कर ली गई हैं। संस्थान ने एश्योरेंस ऑफ लर्निंग (एओएल) मैनेजमेंट सिस्टम भी पेश किया है जो बताता है कि एक कार्यक्रम पूरा करने के बाद संस्थान स्नातकों के लिए क्या करना चाहता है।

एएसीएसबी प्रतिनिधियों के साथ बैठक

संस्थान में 23 अगस्त 2017 को एएसीएसबी इंटरनेशनल, एशिया पैसिफिक ऑफिस, सिंगापुर के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में एएसीएसबी इंटरनेशनल के प्रतिनिधियों अर्थात सुश्री एनी लो, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व एशिया प्रशांत क्षेत्र की चीफ ऑफिसर, सुश्री एमी मेमन, प्रबंधक (प्रत्यायन सेवा) तथा सुश्री हाना जैनल्डिन, समन्वयक (सदस्य सेवा तथा सेमिनार) को परिचित कराना था। परिचयात्मक बैठक के दौरान एएसीएसबी दल के सदस्यों के साथ संस्थान की ओर से कुलसचिव व चेयरपर्सन सहित संकाय सदस्यों ने बातचीत की और संस्थान की प्रगति रिपोर्ट तथा भविष्य की कार्रवाइयों यथा एओएल मैनेजमैंट के भाग के रूप में सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में ''क्लोज द लूप'' के बारे में चर्चा की गई।

अध्यक्ष (अनुसंधान), डॉ. आर.एम. जोशी और अध्यक्षा (एमडीपी), डॉ. विजया कट्टी, प्रोत्साहन और त्वरित समर्थन के लिए सुश्री एमी मेमन, प्रबंधक, प्रत्यायन सेवाएं, एएसीएसबी (आईआईएफटी संपर्क अधिकारी) का आभार व्यक्त करते हुए।

कंप्यूटर केंद्र

संस्थान में अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर केंद्र का संचालन किया जाता है जिसमें छात्रों व संकाय सदस्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों व शोध गतिविधियों के लिए अधिकांशतः सूचना एवं प्रौद्योगिकी संबंधी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। समय के साथ आईआईएफटी का ऑनलाइन शिक्षा की शुरूआत में ऑनलाइन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु ब्रॉडबैंड सुविधाओं का उपयोग करते हुए ऑनलाइन सत्र चलाना संभव हुआ है।

इसी क्रम में निर्यात बंधु योजना के तहत निर्यात तथा आयात प्रबंधन में ऑन–लाइन प्रमाण–पत्र कार्यक्रम तथा संकाय सदस्यों व पीएचडी छात्रों के लिए वर्चुअल प्राइवेट तथा एंटी–प्लेगिरिस्म चैक उपकरण का प्रारंभ किया गया। इन सभी कंप्यूटरों में नोवेल ग्रुपवाइज, माइक्रोसॉफ्ट लाइनिक कॉम्यूनिकेशन, ओरेक्ल, वीबी, माइक्रोसॉफ्ट प्रोजेक्ट, जावा, एसपीएसएस, ई–व्यूज, एसएएस आदि एपलिकेशन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं।

संस्थान, दिल्ली परिसर स्थित कंप्यूटर केंद्र

विदेश व्यापार पुस्तकालय

संस्थान में पाठकों की आवश्यकतानुसार अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य पर मुद्रित या इलैक्ट्रॉनिक रूप में सूचना संसाधन उपलब्ध हैं। इसके विशेष प्रकाशनों, रिपोर्टों, डेटाबेस, ई–जर्नल्स, प्रिंट जर्नल्स, लेखों आदि की संख्या बढ़ाने और अद्यतन करने हेतु नियमित रूप से प्रयास चलते रहते हैं। दिल्ली परिसर का विदेश व्यापार पुस्तकालय सूचना संसाधन के रूप में एक सुव्यवस्थित संग्रह है जो वर्तमान में विभिन्न विषयों जैसे – सांख्यिकीय सिद्धांत, बैंकिंग, उद्योग, प्रबंधन, विपणन, उपभोक्तावाद, भूराजनैतिक आर्थिक प्रणाली, सेवाएं, कंप्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, यातायात तथा व्यवसाय संचार आदि पर विदेश व्यापार पुस्तकालय के प्रभावशाली पुस्तकें/सीडी–खण्ड, सजिल्द आवधिक प्रकाशन हैं। संस्थान परिसर में ई–संसाधन पर विशेष संग्रह है तथा विश्व व्यापार संगठन संसाधन केंद्र भी एक विशिष्ट केंद्र के रूप में है जहां विशेष रूप से विश्व व्यापार व संबंधित मुद्दों पर महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

संस्थान, दिल्ली परिसर स्थित विदेश व्यापार पुस्तकालय

भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बनकर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत–भारती होकर विराजती रहे।

–विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की यात्रा वर्ष 1963 से प्रारंभ होकर आज अपने इस शिखर तक के पड़ावों की श्रृंखला में वर्ष 2002 में कोलकाता केंद्र की स्थापना का विस्तारण एक महत्वपूण उपलब्धि रहा है। संस्थान के कोलकाता केंद्र का भव्य भवन, दिल्ली परिसर की तर्ज पर सभी आधुनिक सुविधाओं अर्थात श्रवण–दृश्य उपकरणों के साथ पूर्णतया वातानुकूलित लेक्चर हॉल, 500 लोगों के बैठने की क्षमता का एक सभागार, एमडीपी केंद्र, कंप्यूटर केंद्र, पुस्तकालय, आंतरिक खेलों, खेल–कूद के मैदान के साथ विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट आवासीय सुविधाओं से परिपूर्ण है। वर्ष 2017–18 के दौरान, कोलकाता परिसर पर सभी शैक्षणिक गतिविधियों में निरंतर वृद्धि हुई है। पूर्णकालिक और सप्ताहंत कार्यपालक बैचों के अलावा, परिसर ने एमडीपीज पर अपनी पहुँच और इसके अनुसंधान पर गहनता बढ़ाई है। केंद्र में अनेक प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा परिसर से बाहर आयोजित किए गए इन कार्यक्रमों में संकाय सदस्यों को शामिल किया गया। संकाय सदस्यों ने प्रतिष्ठित प्रकाशकों के साथ पुस्तकें लिखीं और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में पेपर भी प्रकाशित किए गए तथा समय–समय पर आयोजित संगोष्ठियों व कार्यशालाओं में उत्कृष्ट पेपर प्रस्तुति के लिए संस्थाओं ने इन संकाय सदस्यों को विभिन्न अवार्ड प्रदान किए। कोलकाता केन्द्र के प्रमुख व प्रोफेसर, डॉ. के. रंगराजन की देख–रेख में ये सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

इंड–आईबी शोध कार्यशाला

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) द्वारा एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (एआईबी) के सहयोग से कोलकाता परिसर पर 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार के मुद्दों में शोध पत्र विकास' पर एक ''इंड–आईबी शोध कार्यशाला'' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. के रंगराजन, प्रोफेसर एवं प्रमुख कोलकाता केंद्र द्वारा आईआईएम बैंगलोर व एआईबी–इंडिया चैप्टर चेयर प्रो. एस. रघुनाथ, प्रोफेसर एलिजाबेथ रोज (यूनिवर्सिटी ऑफ ओटैगो, न्यूजीलैंड – एआईबी फेलो एवं पूर्व एआईबी उपाध्यक्ष) तथा प्रो. सुरेंदर मुंजाल की उपस्थिति में किया गया। इस कार्यशाला को इंटरनेशनल बिजनेस थ्योरी और मेथोड्स में एक कोर्स के दो घटकों और प्रकाशन के साथ प्रतिभागियों की सहायता के लिए कार्यशाला में विभाजित किया गया था।

इस कार्यक्रम के लिए लक्ष्य समूह डॉक्टरेट के छात्र और प्रबंधन के कनिष्ठ संकाय थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापार (आईबी) सिद्धांतों और ढांचों की गहन समझ हासिल करने, भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आईबी विद्वानों के साथ मजबूत शोध संबंध बनाने, और आईबी अनुसंधान एजेंडा को वरिष्ठ अधिकारियों की वर्तमान सलाह के साथ विकसित करने का एक अवसर प्रदान करना था। कार्यशाला में परस्पर वार्ता सत्रों, चर्चाओं और प्रस्तुतियों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में गहरी अंतर्दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया गया।

इंड–आईबी शोध कार्यशाला के सहभागियों के साथ कोलकाता केन्द के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन तथा डॉ. सैकत बैनर्जी

कोलकाता परिसर पर कंप्यूटर केंद्र

आईआईएफटी कोलकाता परिसर में छात्रों के लिए सभी उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर लैब है। परिसर में छात्रों के लिए वाई–फाई सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यहाँ क्षेत्रीय लिबसिस, प्रोवेस, इंडिया ट्रेड्स सेवाएं दी गई हैं तथा आईआईएफटी दिल्ली में उपलब्ध आईटी सेवाओं को एनएलडी लाइनों के माध्यम से कोलकाता परिसर में दिया जा रहा है।

कोलकाता परिसर स्थित कंप्यूटर केंद्र

कोलकाता परिसर स्थित पुस्तकालय

पुस्तकालय

कोलकाता सेंटर का पुस्तकालय, परंपरागत संसाधनों के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक तथा वास्तविक जानकारी सहित धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। पुस्तकालय में प्रबंधन एवं इससे संबंधित मुद्दों पर लगभग 3500 पुस्तकें/सीडी तथा 70 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। लगभग सभी व्यावसायिक दैनिक समाचार–पत्र भी इसके आवधिक अनुभाग में उपलब्ध हैं। यहाँ प्रबंधन, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, गणित, विपणन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, मनोविज्ञान, अनुसंधान परिचालन, कारोबारी संचार, विज्ञापन तथा सामान्य पठनीय आदि दस्तावेजों को संग्रह किया गया है। पुस्तकालय में संसाधन, मुख्य रूप से अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं जैसे – बांग्ला, हिंदी, स्पेनिश, जर्मन, इटेलियन, फ्रेंच में उपलब्ध हैं। संग्रह ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस सूची तथा प्रसारण बार कोडिड प्रणाली की सुविधा के साथ पूरी तरह से स्वचालित है। पुस्तकालय अपने ई–ब्रेरी नामक डेटाबेस से सुसज्जित है, जो अपने उपयोगकर्ताओं को सरकारी अवकाशों को छोड़कर वर्ष भर अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

संस्थान की उपलब्धियां

माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद से वर्ष 2016–17 का "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" तृतीय प्राप्त करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

14 सितम्बर 2017 को विज्ञान भवन में आयोजित 'हिंदी दिवस' के अवसर पर संस्थान को माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा वर्ष 2016–17 का "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' तृतीय प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। संस्थान को समय–समय पर ''क" क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए भारत के राष्ट्रपतियों द्वारा प्रदान किए गए पुरस्कारों की श्रृंखला में यह पांचवा पुरस्कार है। संस्थान अपनी अन्य गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपने संवैधानिक दायित्व के प्रति वचनबद्ध है।

स्थापना दिवस

हर वर्ष की भांति 2 मई 2017 को संस्थान ने अपना 54वां ''स्थापना दिवस'' मनाया। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के तत्कालीन निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला एवं वरिष्ठ संकाय सदस्यों व अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करते हुए किया गया। श्री अजय कुमार भल्ला, तत्कालीन निदेशक, आईआईएफटी द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। राजभाषा के प्रचार–प्रसार के अंतर्गत संस्थान द्वारा गत एक दशक से हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थान की इस हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" के 10वें अंक का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर श्री भल्ला जी ने आमंत्रित आईआईएफटी के पूर्व संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों का अभिवादन किया तथा संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में योगदान के लिए संस्थान के सभी सदस्यों, छात्रों व अल्युमनाई के कार्यों की सराहना की। संस्थान के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता ने पूरे कार्यक्रम की रूप–रेखा तैयार कर इस आयोजन को सफल बनाया।

2 मई 2017 को संस्थान के 54वें स्थापना दिवस के अवसर पर हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" के 10वें अंक का विमोचन करते हुए संस्थान के तत्कालीन निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला व गणमान्य सदस्य।

2 मई 2017 को संस्थान के 54वें स्थापना दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए तत्कालीन निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला

यूजीसी विशेषज्ञ समिति का दौरा

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के साथ–साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अंतर्गत मानित विश्वविद्यालय भी है। इस प्रकार, आयोग द्वारा विनियमों के अंतर्गत निधार्रित मानदंडों के आधार पर प्रत्येक पांच वर्षों में मानित विश्वविद्यालयों की समीक्षा की जाती है। इसी क्रम में 15 से 17 नवम्बर 2017 के दौरान आयोग की विशेषज्ञ समिति द्वारा कोलकाता केन्द्र सहित दिल्ली परिसर का दौरा किया गया। संस्थान के सभी सदस्यों के सहयोग से विशेषज्ञ समिति के इस दौरे का सफल आयोजन किया गया, जिसके फलस्वरूप सकारात्मक परिणाम रहे।

आईआईएफटी का रिकार्ड समय में अंतिम प्लेसमेंट

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान ने अपने सबसे बड़े बैच 2016–18 की अंतिम प्लेसमेंट प्रक्रिया को **उद्योग क्षेत्र के अग्रणियों से ऑफर के साथ रिकार्ड समय में पूरा किया है।** इससे संस्थान अपने पाठ्यक्रम को पूरा करने वाले बैच को शीघ्रतम नियोजित करने वाले मुख्य बी–स्कूलों की श्रेणी में आ गया है।

कुल 31 छात्रों को दक्षिण अमेरिका, थाईलैंड, अफ्रीका और दक्षिण–पूर्व देशों में शीर्ष भर्तीकर्ताओं द्वारा अंतरराष्ट्रीय व्यापार की भूमिका में नौकरियां प्रदान की गई हैं, जिसमें पिछले साल से 55 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। चार छात्रों को प्रति वर्ष 1,50,000 अमरीकी डालर का पैकेज प्राप्त हुआ है और साथ ही इसके दूसरे स्तर पर 7 छात्रों को प्रति वर्ष 80,000 अमरीकी डालर की पेशकश की गई है जो वैश्विक परिदृश्य में स्वयं एक नई स्थिति को दर्शाता है।

आईआईएफटी छात्रों को देशीय औसत वेतन 19.23 लाख प्रति वर्ष की पेशकश की गई है जो गत वर्ष देशीय औसत वेतन 18.27 लाख प्रति वर्ष रहा है। अधिकतम देशीय वेतन पिछले वर्ष 26 लाख प्रति वर्ष से बढ़कर 29 लाख प्रति वर्ष देखने को मिला है।

बैच के कुल 288 छात्रों की संख्या के साथ, आईआईएफटी ने प्री–प्लेसमेंट ऑफर की संख्या में 29.10 प्रतिशत की वृद्धि की है। पिछले साल 74 की तुलना में कुल 93 प्री–प्लेसमेंट ऑफर दिए गए थे जो आईआईएफटी के छात्रों की प्रतिभा और कर्मठता में भर्तीकर्ताओं के विश्वास की पुष्टि करता है। नियोजन के लिए 110 कंपनियों ने अपनी भागीदारी की पुष्टि की थी, लेकिन प्लेसमेंट 94 भर्तीकर्ताओं और 35 कंपनियों जिनमें प्रमुख ब्रांड जैसे अर्सिसियम, एवेनडस कैपिटल, बीएमडब्ल्यू, सीपी समूह, डेलॉयट यूएसआई (एसएंडओ), ईएक्सएल, पेप्सिको, टेक महिंद्रा, यस बैंक शामिल हैं, के साथ समाप्त हुई जो कि आईआईएफटी से पहली बार जुड़े थे।

विश्व स्तर पर व्यापार में अपने नेतृत्व के लिए स्वीकृत आईआईएफटी ने सभी क्षेत्रों में शानदार कौशल दिखाए हैं और शीर्ष नियोक्ताओं द्वारा परिसर का दौरा उसी का एक प्रमाण है। बिक्री एवं विपणन क्षेत्र में एयरटेल, एकेजी नोबेल, बजाज ऑटो, ब्रिटानिया, डेल, फिलपकार्ट, गोदरेज, गूगल, जीएसके, हेवलेट–पैकार्ड, आईटीसी, लावा, एमएसआईएल, रेमंड, स्टरलाइट पावर, टाटा ग्रुप, टेट्रा पैक और वोडाफोन जैसे कुछ नियमित नियोक्ता हैं, जबकि वित्त क्षेत्र के दिग्गजों जैसे एक्सिस बैंक, सिटी बैंक, क्रिसिल, डीबीएस, एडलवाइस, गोल्डमैन सैक्स, एचएसबीसी, आईसीआईसीआई बैंक, जेपी मॉर्गन चेस एंड कं., नोमुरा, यस बैंक आदि ने बड़ी संख्या में आईआईएफटी छात्रों की भर्ती की है।

यूजीसी की विशेषज्ञ समिति के सदस्यों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ दाएं से चौथे स्थान पर संस्थान से डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी

''कृषि 2022 – नई पहल''

कार्यक्रम में संस्थान की सहभागिता वर्ष 2022 तक किसान की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से, कृषि सहकारिता और किसान कल्याण विभाग ने 19–20 फरवरी 2018 के दौरान ''कृषि 2022 – नई पहल'' शीर्षक के तहत एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में कृषि नीति सुधार, बाजार आधारिक संरचना, लॉजिस्टिक, कृषि स्टार्टअप, टिकाऊ कृषि, कृषि निवेश और जोखिम प्रबंधन आदि पर मुद्दों को उजागर किया गया। सम्मेलन के दौरान डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी ने संस्थान का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. तमन्ना चतुर्वेदी ने व्यापार नीति और निर्यात संवर्धन की पृष्ठभूमि पर पेपर तैयार किए और उन्हें माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह की उपस्थिति में प्रस्तुत किया। पेपर में सुझाई कार्यवाही को आगे लागू करने के लिए नीति आयोग को प्रस्तुत किया गया।

हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम

निर्यात के क्षेत्र में देश के विभिन्न स्थानों से अभ्यर्थियों की भारी माँग पर संस्थान के एमडीपी विभाग द्वारा 16 जुलाई से 12 अगस्त 2017 के दौरान निर्यात बंधु योजना के अंतर्गत हिंदी माध्यम से ऑन–लाइन ''निर्यात–आयात व्यापार में प्रमाण–पत्र'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य हिंदी भाषी क्षेत्रों के अधिकाधिक उद्धमियों व निर्यातकों को लाभान्वित किया जा सके। इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम की अवधि 4 सप्ताहांत में 20 सत्रों की थी तथा कक्षाएं शनिवार को 2.00 बजे (अपराह्न) से 6.00 बजे तक और रविवार को 10.00 बजे (पूर्वाह्न) से 5.00 बजे तक चलाई गईं। इस कार्यक्रम को एमडीपी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. विजया कट्टी, संकाय सदस्यों, कंप्यूटर सेंटर से सहायक प्रणाली प्रबंधक श्री एस. बालासुब्रमणियन तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से सफल बनाया गया। संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार में यह एक सराहनीय कदम था।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम के सहभागियों के साथ तत्कालीन निदेशक श्री अजय कुमार भल्ला, समूह फोटो

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार की पहल पर संस्थान के एमडीपी विभाग द्वारा वर्ष 2017 (अप्रैल–अगस्त) के दौरान संपूर्ण भारत के जिला रोजगार अधिकारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अल्पावधि में कुल 26 कार्यक्रमों के तहत 719 सहभागियों को कैरियर काउंसलिंग तकनीक के क्षेत्र में प्रशिक्षित किया गया। इन कार्यक्रमों के दौरान सहभागियों की मांग के अनुसार हिंदी अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा में प्रशिक्षण दिया गया। भारत सरकार की इस बहु–महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य रोजगार के इच्छुक युवाओं का सही मार्ग दर्शन करना था। इन कार्यक्रमों को सफल बनाने में संस्थान से एमडीपी विभाग की चेयरपर्सन डॉ. विजया कट्टी व सह–आचार्य डॉ. एम. वेंकटेशन का सराहनीय योगदान रहा।

25 फरवरी, 2018 को काकीनाडा केन्द्र के शिलान्यास के दौरान केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु तथा आईआईएफटी से प्रोफेसर डॉ. विजया कट्टी व कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता

काकीनाडा केन्द्र की स्थापना

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग (आईआईपी) काकीनाडा (आंध्र प्रदेश) द्वारा निर्यात विपणन एवं प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए संयुक्त रूप से एक केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया था। इस केन्द्र के निर्माण हेतु केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने रविवार 25 फरवरी 2018 को शिलान्यास किया। इस अवसर पर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री अन्य शीर्ष अधिकारियों के साथ तथा आईआईएफटी से प्रोफेसर डॉ. विजया कट्टी व कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता भी उपस्थित थे। यह आधुनिक ढांचागत सुविधाओं के साथ एक उन्नत परिसर होगा जिसे चरणबद्ध रूप में तीन से पांच वर्षों में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। केन्द्र के परिसर हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा 25 एकड़ जमीन आवंटित की गई है

एमए अर्थशास्त्र में डिग्री कार्यक्रम का प्रारंभ

संस्थान द्वारा वर्ष 2018 से व्यापार और वित्त में विशेषज्ञता के साथ एमए अर्थशास्त्र में डिग्री कार्यक्रम प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत अर्थशास्त्र में लागू नीतिगत मुद्दों पर जोर दिया जाएगा। हालांकि संस्थान का पोर्टफोलियो दीर्घकालिक एमबीए और पीएचडी कार्यक्रम में फैला हुआ है जिसमें दो साल का एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस), दो साल छह महीने का एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) सप्ताहांत, एक्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन इंटरनेशनल बिजनेस आदि शामिल हैं। आईआईएफटी द्वारा पेश एमए अर्थशास्त्र (व्यापार और वित्त में विशेषज्ञता) की भारत में अर्थशास्त्र में सबसे पसंदीदा मास्टर प्रोग्राम बनने की संभावना देखी गई है।

शिक्षाविदों और कॉर्पोरेट के लिए व्यापार और वित्त रोमांचक क्षेत्र बन गए हैं। माल, सेवाओं और पूंजी के प्रवाह ने अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण की ओर अग्रसर किया है जिससे उन्हें अपनी सीमाओं के बाहर परिवर्तनों के प्रति कमजोर बना दिया है। अतः एमए अर्थशास्त्र (व्यापार और वित्त में विशेषज्ञता) कार्यक्रम, निम्नलिखित उद्देश्यों को हासिल करने का प्रयास करेगाः

1. यह पाठ्यक्रम छात्रों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय लेनदेन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल कॉर्पोरेट क्षेत्र में व्यापार के मुद्दों पर उत्कृष्ट व्यापार नीति निर्माता और प्रमुख रणनीतिकार बनने के लिए तैयार करेगा।

2. छात्रों को उपकरणों के एक सेट के साथ सुसज्जित करना, जो उन्हें वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में मदद करेगा।

3. छात्रों को अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र में विशेष ज्ञान के साथ पूर्णकालिक शिक्षाविद बनने के लिए तैयार करना है।

भारतविकास अवार्ड

संस्थान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. एम. वेंकटेशन जुलाई 2017 में 15वीं यूरोपियन कांग्रेस के मनोविज्ञान कार्यक्रम के दौरान एम्स्टर्डम में एक विषयगत सत्र (टीएस102) में शामिल हुए। 19 नवंबर 2017 को ओडिशा, भुवनेश्वर में स्वयं रिलायंस संस्थान द्वारा डॉ. वेंकटेशन को 'भारतविकास अवार्ड' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2017–18 के लिए सर्वसम्मति से आईएसटीडी, नई दिल्ली के 'दिल्ली चैप्टर के उपाध्यक्ष' के रूप में चुने गए।

राष्ट्रीय कार्यक्रम

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में एक स्वायत्त संस्था तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत मानित विश्वविद्यालय है। संस्थान अपने शिक्षण–प्रशिक्षण व अनुसंधान कार्यों के साथ–साथ राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एक अनुष्ठान के रूप में आयोजित करते हुए राष्ट्र धर्म का निर्वहन करता है। वर्ष 2017–18 के दौरान कोलकाता केंद्र सहित दिल्ली परिसर में इस श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार हैं :–

आतंकवाद–विरोधी दिवस

संस्थान में 21 मई 2017 को ''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' मनाया गया जिसका उद्देश्य देश के सभी वर्गों के लोगों के बीच आतंकवाद और हिंसा के भारी नुकसान तथा लोगों, समाज व पूरे राष्ट्र पर इसके दुष्प्रभाव के प्रति जागरूकता पैदा करना था। इसके साथ ही, हिंसा के कारण आम लोगों की पीड़ा को दर्शाते हुए देश के लोगों को इससे दूर रखना है। इस अवसर पर, संस्थान परिसर में एकत्रित संस्थान के सभी सदस्यों को निदेशक, आईआईएफटी द्वारा शपथ दिलाई गई।

योग दिवस

संपूर्ण विश्व के साथ–साथ भारत में 21 जून 2017 को ''योग दिवस'' मनाया गया। साथ ही हमारे संस्थान में भी इस दिन ''योग दिवस'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से आमंत्रित मनोविज्ञान विशेषज्ञ डॉ. अंजु धवन, एमबीबीएस, एमडी ने रोजमर्रा के जीवन में योग तथा ध्यान के लाभ बताते हुए इसके व्यवहारिक पक्ष को भी प्रस्तुत किया। इसी क्रम में, विख्यात योग विशेषज्ञ डॉ. अजय शास्त्री द्वारा योग के व्यावहारिक व सिद्धांत पक्ष की जानकारी दी गई। योग के महत्व को समझते हुए शास्त्री जी की देख–रेख में संस्थान के कर्मचारियों व छात्रों के लिए एकांतर दिवसों में योग कक्षाएं भी चलाई जाती हैं। कार्यक्रम के अंत में, संस्थान से प्रोफेसर डॉ. आर. एम. जोशी ने उपस्थित सभी संस्थान सदस्यों को साधुवाद दिया और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

''योग दिवस'' के अवसर पर संस्थान के एमबीए (आईबी) छात्रों द्वारा योग पर ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

संस्थान, दिल्ली परिसर में योग दिवस के अवसर पर सभागार में योग करते संस्थान सदस्य

संस्थान, दिल्ली परिसर में योग दिवस के अवसर पर योग विशेषज्ञ डॉ. अजय शास्त्री

''भारत छोड़ो आंदोलन'' की हीरक जयंती व स्वतंत्रता के 70 वर्ष

वर्ष 2017 को भारत सरकार द्वारा ''भारत छोड़ो आंदोलन'' की हीरक जयंती व स्वतंत्रता के 70 वर्ष के रूप में चिह्नित किया गया था। इस प्रकार, वर्ष के महत्व को ध्यान में रखते हुए इस महान घटना को याद करने तथा परम आदरणीय स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने और भविष्य में इस विचार को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से संस्थान में 9 अगस्त 2017 को ''शपथ ग्रहण समारोह'' का आयोजन किया गया।

संस्थान, दिल्ली परिसर पर स्वतंत्रता दिवस 2017 समारोह का आयोजन

स्वतंत्रता दिवस–2017 का आयोजन

संस्थान में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'स्वतंत्रता दिवस' का आयोजन धूमधाम से किया गया। कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होनें संकाय के सदस्यों, छात्रों, अधिकारियों उन्होनें कर्मचारियों की उपस्थिति में झंडारोहण किया। इस अवसर पर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने अमूल्य जीवन की आहुति देने वाले वीर शहीदों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके साथ ही, स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े देश के महान नेताओं को भी नमन एवं स्मरण किया। उन्होंने देश की स्वतंत्रता को बनाए रखने और देश के विकास कार्यों में भारत सरकार का हर संभव समर्थन एवं सहयोग करने का अनुरोध किया। उन्होंन 'स्वतंत्रता दिवस–2017' अवसर पर सभी को शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित की। तत्पश्चात उन्होंने उपस्थित संकाय के सदस्यों को भी अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया।

संस्थान के छात्रों की ओर से एक छात्र प्रतिनिधि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इसमें उन्होंने संस्थान की बेहतर शिक्षा संस्कृति, शैक्षिक वातावरण और उच्च प्लेसमेंट के बारे में चर्चा की। अंत में मुख्य अतिथि को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

सद्भावना दिवस

प्रत्येक वर्ष देश में स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के जन्म दिवस 20 अगस्त को राष्ट्रीय स्तर पर सद्भावना दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री राजीव गांधी देश के एक युवा नेता एवं प्रधान मंत्री थे। इस दिन उनके द्वारा किए गए अविस्मरणीय प्रयास, राष्ट्रीय प्रगति के कार्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में उनके योगदान को याद किया जाता है। यह दिन राष्ट्रीय प्रगति में उनके जुनून को पूरा करने के लिए मनाया जाता है। सद्भावना की विषय–वस्तु सभी धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोगों में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाना है। 18 अगस्त 2017 को शपथ समारोह का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

यह दिन राष्ट्रीय प्रगति में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं एकता को बढ़ाने में उनके योगदान के संबंध में मनाया जाता है। संस्थान में 18 अगस्त 2017 को शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सभी सदस्यों ने भाग लिया।

''स्वच्छता पखवाड़ा'' के दौरान संस्थान, दिल्ली परिसर व आस–पास के क्षेत्र में सफाई करते संस्थान सदस्य

स्वच्छता पखवाड़ा

संस्थान में 1–15 सितम्बर 2017 के दौरान ''स्वच्छता पखवाड़ा'' मनाया गया। इसका उद्देश्य स्वच्छता का संदेश न केवल विधार्थियों में वरन् आस–पास के क्षेत्रों फैलाना था। कार्यक्रम को सुनियोजित तरीके से सफल बनाने के लिए छात्रों व कर्मचारियों के बीच समितियों का गठन किया गया। इस दौरान संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों/संकाय सदस्यों ने न केवल संस्थान के

अंदर, अपितु आस–पास के क्षेत्र में सफाई अभियान के अंतर्गत श्रमदान किया। छात्रों द्वारा कैंटीन/छात्रावास व भोजनालय को सुव्यवस्थित व साफ करने के लिए विशेष अभियान चलाया गया। संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में विशेष सफाई अभियान के साथ–साथ अनप्रयुक्त पेपर/फाइलों को हटाया गया। इस अभियान के उपरांत कुलसचिव महोदय ने स्वच्छता संबंधी बिंदुओं पर प्रकाश डाला तथा इस कार्य को निर्बाध रूप से जारी रखने पर बल दिया। संस्थान के सभी सदस्यों ने स्वच्छता अभियान को अपने दैनिक कार्य के रूप में अपनाने का संकल्प लिया।

''स्वच्छता अभियान'' के दौरान संस्थान, दिल्ली परिसर व आस–पास के क्षेत्र में सफाई करते संस्थान सदस्य

स्वच्छता अभियान

2 अक्तूबर 2017, महात्मा गांधी जंयती के पूर्व संस्थान में स्वच्छता अभियान चलाया गया। 27 अगस्त 2017 को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा अपने 'मन की बात' के दौरान ''स्वच्छता ही सेवा'' की बात कही गई थी। इस अवसर पर, पूरे राष्ट्र को 2 अक्तूबर से 15 दिन पूर्व स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया गया था। इसका उद्देश्य पूरे देश में पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का संदेश देने के लिए राष्ट्रीय भावना के साथ एक जन आंदोलन खड़ा करना था। इस अभियान के अंतर्गत कार्यालयों के अंदर व आस–पास सफाई को ध्यान में रखते कुछ बिंदु निर्धारित किए गए थे जैसे – कमरों, बाथरूम, बीच का क्षेत्र, मैस/कैंटीन आदि की सफाई करना, फाइलों का रख–रखाव, रद्दी फाइलों, उपयोग में न आने वाले सामान को हटाना, कर्मचारियों व छात्रों द्वारा श्रमदान, स्वच्छ भारत अभियान के मध्यनजर निबंध/वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि। संस्थान में उक्त सभी बिंदुओं का पालन किया गया।

दीपावली के पवित्र त्योहार पर पूजा–अर्चना करते दिल्ली संस्थान के सदस्य

दीपावली की पूर्व संध्या

18 अक्तूबर 2017 को पवित्र दीपावली पर्व की पूर्व संध्या पर संस्थान के प्रांगण में शुभ दीपावली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पावन पर्व की पूर्व वेला पर संस्थान के सभी सदस्यों ने मिलकर दीप जलाए व पूजा–अर्चना की। निदेशक महोदय ने सभी सदस्यों को दीपावली की हार्दिक शुभकानाएँ दी तथा सभी के सहयोग से सभी के हित में संस्थान में कुछ नया व अच्छा करने का आह्वान किया। तदोपरांत, सभी ने मिलकर जलपान किया और एक–दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं आदान–प्रदान कीं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

30 अक्तूबर से 04 नवम्बर 2017 के दौरान संस्थान में ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' मनाया गया जिसका उद्देश्य 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत' था जिसके अंतर्गत ईमानदारी को बढ़ावा देने और भ्रष्टाचार से लड़ाई में जन भागीदारी था। भारत जैसे विशाल देश में हम जन भागीदारी के बिना ईमानदारी को न तो प्रोत्साहित कर सकते हैं और ना ही भ्रष्टाचार से लड़ाई लड़ सकते हैं। ईमानदारी बुनियादी तौर पर वह स्थिति है, जो पूरी तरह से सुसंगत होती है और कोई अलगाव नहीं करती है। इस अवसर पर संस्थान में आईआईएफटी निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा संस्थान के सभी सदस्यों को शपथ दिलाई गई।

राष्ट्रीय एकता दिवस

संस्थान में 31 अक्तूबर 2017 को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' के रूप में मनाया गया। इसे भारत के 'लौह पुरूष' कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा देश को एक जुट करने के लिए अनेक प्रयास किए गए थे तथा उनके इन कार्यों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से इस दिन को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को याद करते हुए संस्थान के सदस्यों को राष्ट्रीय एकता की शपथ हिंदी एवं अंग्रेजी में दिलाई गई।

कौमी एकता सप्ताह

19 से 25 नवम्बर के दौरान संस्थान में सांप्रदायिक सद्भाव, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की भावना पर जोर देने के उद्देश्य से 'कौमी एकता सप्ताह' का आयोजन किया गया। यह आयोजन हमें एक बहु–सांस्कृतिक और बहु–धार्मिक समाज में सहनशीलता, सह–अस्तित्व और भाईचारे के मूल्यों के प्रति सदियों पुरानी परंपराओं और विश्वास की पुष्टि करने का अवसर प्रदान करता है। इस अवसर पर अन्य कार्यक्रमों के अलावा 24 नवम्बर को 'झंडा दिवस' के रूप में मनाया गया जिसमें संस्थान के सदस्यों को साम्प्रदायिक सद्भाव का स्टिकर भेंट किया गया और सदस्यों ने स्वेच्छा से साम्प्रदायिक सद्भाव की राष्ट्रीय बुनियाद की गतिविधियों के समर्थन के लिए धनराशि दान में दी।

संविधान दिवस

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में 26 नवम्बर को भारत रत्न डॉ. भीम राव अम्बेडकर की 125वीं जन्म शती को ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। तब से, प्रत्येक वर्ष देश में 26 नवम्बर को ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। डॉ. अम्बेडकर जी ने भारत के महान संविधान को 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में पूरा कर 26 नवम्बर 1949 को राष्ट्र को समर्पित किया था। गणतंत्र भारत में 26 जनवरी 1950 से संविधान अमल में लाया गया था। संस्थान के प्रांगण में 27 नवम्बर 2017 को आईआईएफटी निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा संविधान उद्देशियका पढ़ी गई।

नव वर्ष समारोह

वर्ष 2018 के आगमन पर संस्थान में 01 जनवरी 2018 को नव वर्ष मंगल–मिलन समारोह का आयोजन किया। इस शुभ अवसर पर प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी ने संस्थान के प्रागण में एकत्रित आईआईएफटी परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं दी तथा सभी सदस्यों ने एक–दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दी व एक साथ जलपान किया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

चुनाव आयोग, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चुनावी भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्थान में 25 जनवरी 2018 को राष्ट्रीय मतदाता के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर कुलसचिव, डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता ने संस्थान के प्रांगण में सभी सदस्यों को हिंदी व अंग्रेजी में शपथ दिलाई।

संस्थान के दिल्ली परिसर पर राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर शपथ ग्रहण

गणतंत्र दिवस समारोह

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन ने 26 जनवरी 2018 को गणतंत्र दिवस की शानदार सुबह की अद्वितीय शुरुआत राष्ट्रीय ध्वज फहराकर की। इसके बाद, छात्र एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए ओपन एयर थिएटर में एकत्रित हुए, जो कि भावी–प्रबंधकों की बहुमुखी प्रतिभा को चित्रित करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभ्यास करने के लिए छात्रों ने नियमित कक्षाओं और प्रतियोगिताओं के बीच अपने समय को कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया। छात्रों द्वारा एकल गान और समूह गीतों के बाद मधुर बांसुरी वादन और सिंथेसाइजर इंस्ट्रूमेंटल का कार्यक्रम हुआ। सांस्कृतिक आयोजन एक छात्र द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी लोक नृत्य के साथ समाप्त हुआ। दर्शकों के बीच भोजन और पेय वितरण के साथ इस शुभ दिन के कार्यक्रम संपन्न हुए।

आईआईएफटी के कोलकाता केंद्र पर गणतंत्र दिवस – समारोह

छात्र गतिविधियां

संस्थान में छात्र अध्ययन अध्यापन के दौरान विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व खेल–कूद संबंधी गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जिनका उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए अवसर पैदा करना है। इन कार्यक्रमों में संस्थान के अल्युमनाई भी अपनी भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2017–18 के दौरान छात्रों द्वारा आयोजित गतिविधियों का विवरण निम्नप्रकार हैः

एस्पाइरेंट सिटी मीट

आईआईएफटी की संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए और प्रवेश के संबंध में किसी भी चिंता का समाधान करने के लिए, दिल्ली और कोलकाता की मीडिया कमेटियों ने विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर प्रदान की गई लगातार सहायता के अलावा आने वाले बैच के लिए सिटी चैप्टर मीट का आयोजन किया। ये सिटी मीट्स 2017 के मई महीने में दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और कोलकाता में आयोजित किए गए थे और उम्मीदवारों के सभी प्रश्नों का समाधान किया गया था।

ट्रेड विंड्सः वार्षिक व्यापार सम्मेलन 2017

ट्रेड विंड्सः वार्षिक व्यापार सम्मेलन 2017

ट्रेड विंड्स, दिल्ली परिसर में एक तीन–दिवसीय वार्षिक आयोजन है। इस कार्यक्रम में वित्त, विपणन, मानव संसाधन, नेतृत्व और संचालन के डोमेन से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था।

वार्षिक मानव संसाधन सम्मेलन

8 अगस्त 2017 को आयोजित वार्षिक मानव संसाधन शिखर सम्मेलन का विषय था ''प्रौद्योगिकी से एचआर में रूपांतरण होता है।'' शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले कॉरपोरेट्स में शालिमार पेंट्स, एवरेस्ट समूह, स्टैंडर्ड चार्टर्ड, एबीजी, ड्यूपॉन्ट और नेक्सस वेंचर, कैपिटल्स, आदि शामिल थे।

वार्षिक विपणन शिखर सम्मेलन

8 अगस्त, 2017 को आयोजित वार्षिक विपणन शिखर सम्मेलन ''लेवरेजिंग डिजिटल टेक्नोलॉजी टु इनहान्स कस्टूमर कनेक्ट'' विषय के साथ आरम्भ हुआ। शिखर सम्मेलन में नए युग की विपणन प्रथाएं और विज्ञापन से संबंधित चर्चाएं हुईं। वार्षिक विपणन सम्मेलन में बीरा बेवरेजेज, यूनाइटेड ब्रुअरीज, एबॉट, फिलिप्स हेल्थकेयर, आदि कॉरपोरेट्स मौजूद थे।

वार्षिक संचालन शिखर सम्मेलन

9 अगस्त 2017 को आयोजित वार्षिक संचालन शिखर सम्मेलन के लिए विषय था, ''वैश्विक अनिश्चितताओं के मद्देनजर आपूर्ति श्रृंखला विघटन।'' इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले कॉरपोरेट्स में डॉ रेड्डीज, टाटा स्काई, ड्यूपॉन्ट, एशलैंड और फाइजर शामिल थे।

वार्षिक फार्मा शिखर सम्मेलन

9 अगस्त, 2017 को आयोजित वार्षिक फार्मा शिखर सम्मेलन का विषय था ''लेवरेजिंग डिजिटल टेक्नोलॉजी एंड एनालेटिक्स फोर क्रिएटिंग वैल्यू फोर स्टेकहोल्डर्स इन फार्मास्यूटिकल्स, हेल्थ केयर एंड मेडिकल डिवाइसेस सेक्टर'। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले कॉरपोरेट्स में सिप्ला, बोहिरिंगर इंगेलहैम, रॉश, बोस्टन साइंटिफिक एंड नोवार्टिस शामिल थे।

वार्षिक नेतृत्व शिखर सम्मेलन

10 अगस्त, 2017 को आयोजित शिखर सम्मेलन का विषय था 'डेटा चालित विश्व में विघटनकारी रणनीतियां'। इसमें भाग लेने वाले कॉर्पोरेट थे नोवलैरिटी, केपीएमजी, एक्सेंचर स्ट्रैटेजी और क्विंटिल्स आईएमएस। चर्चाओं में बिग डेटा से डेटा एनालिटिक्स और इसने कॉरपोरेट्स के काम करने के तरीके को कैसे प्रभावित किया, शामिल था।

वार्षिक वित्त शिखर सम्मेलन

वार्षिक वित्त सम्मेलन

10 अगस्त 2017 को वार्षिक वित्त सम्मेलन ''प्रौद्योगिकी वित्तीय क्षेत्र को बदल रही है: क्या यहां परिवर्तन की शक्तियां बनी रहनी चाहिएं?'' विषय के साथ आरंभ हुआ। इसने स्टार्ट–अप के मूल्यांकन के पीछे मैट्रिक्स को समझने की कोशिश की। वक्ताओं में संस्थापक, प्रबंध भागीदार और पॉलिसी बाजार, यूबीएस और आईडीएफसी बैंक जैसे अग्रणी उद्यम फर्मों के प्रमुख थे।

टेडेक्स – आईआईएफटी

आईआईएफटी दिल्ली की मीडिया कमेटी ने अपने बड़े आयोजन अर्थात टेडएक्सआईआईएफटीदिल्ली 2017 प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के तीसरे संस्करण का विषय था – ''एनविसेज इवोक एनलाइटन'' और इसे 14 अक्टूबर को आयोजित किया गया था। इस आयोजन में निम्न प्रसिद्ध वक्ताओं ने भाग लियाः–

1. जावेद अख्तर
2. सोमदेव देववर्मन
3. सोनल मानसिंह
4. समीर नायर
5. शिव खेड़ा
6. मल्लिका जगड
7. कुलमीत बावा
8. मानबी बंदोपाध्याय
9. करिश्मा मेहता
10. अनिता नायर
11. सुहासिनी हैदर

अंतरराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन 2017

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के 5वें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन (आईबीसी 2017) को 29 सितंबर 2017 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान और आईआईएफटी अल्युमनी एसोसिएशन, सिंगापुर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। इसने वर्तमान विषयों पर अपना दृष्टिकोण आगे बढ़ाने के लिए उद्योगों के पेशेवरों और प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए एक मंच उपलब्ध कराया।

सम्मेलन के लिए इस वर्ष का विषय था, ''ग्लोबल बिजनेस लैंडस्केप के विघटनकारी – राजनीति, व्यवसाय और प्रौद्योगिकी'' सिंगापुर में आईबीसी–2017 ने दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के परिप्रेक्ष्य पर अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रबंधन से संबंधित विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समकालीन मुद्दों को छुआ।

निम्नलिखित वक्ताओं ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई।

- के.वी. राव – निवासी निदेशक, टाटा संस लिमिटेड
- प्रसेनजीत बसु – संस्थापक और मुख्य अर्थशास्त्री, रीयल–इकॉनोमिक्स.कॉम
- सिड हरलाल्का, एक्सेंचर ईडीबी सेंटर
- मनप्रीत सिंह – वरिष्ठ सलाहकार, आईबीएम वाटसन सॉल्यूशंस

अंतरराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन 2017

खेलकूद गतिविधियां

एड्रेनालाइन, आईआईएफटी में खेल समिति ने अल्टीमेट वारियर्स लीग (यूडब्ल्यूएल) – वार्षिक खेल का आयोजन किया। खेलकूद पर ध्यान केंद्रित करते हुए, आईआईएफटी में एक 10–दिवसीय लंबा खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एड्रेनालाइन ने मेलेंज (सांस्कृतिक समिति) की सहायता से 'बिग फाइट', जिसमें बैचों के भीतर सेक्शंस से टीमों के वर्चस्व के लिए लड़ाई होती है, खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित कीं ।

ग्रांड अल्युमनी रीयूनियन

ग्रैंड अल्युमनी रीयूनियन नवंबर 2017 में आयोजित किया गया जिसमें 700 से अधिक पूर्व छात्रों ने कैंपस में आकर भाग लिया और आईआईएफटी दिल्ली में अपने बीते दिनों की याद ताजा की। भारत के आसपास से पूर्व छात्रों को विभिन्न गतिविधियों, तत्पश्चात शाम के समारोह में उत्साह से भाग लेते हुए देखा गया। शाम को भव्य संगीत कार्यक्रम के साथ एक महा रात्रिभोज का आयोजन किया गया था।

पूर्व छात्र अध्याय बैठक

आईआईएफटी के विभिन्न बैचों से अल्युमनी का एक–दूसरे के साथ मुलाकात को इस साल के चैप्टर मीट में पिछले कुछ सालों में सबसे बड़ी भागीदारी के तौर पर देखा गया। डॉ. राकेश मोहन जोशी, डॉ के. रंगराजन, डॉ. विजया कट्टी और डॉ. रुप्पल वालिया जैसे प्रतिष्ठित आईआईएफटी संकाय सदस्यों ने इन कार्यक्रमों की अध्यक्षता की। लाइव बैंड, स्टैंडअप कॉमेडी और पूर्व छात्रों द्वारा अनुभव साझा करने के साथ शामें मजेदार बन गईं।

बिग फाइट 2017

बिग फाइट एक इंटर सेक्शन प्रतियोगिता है, जहां भिन्न–भिन्न सेक्शंस के छात्र विभिन्न प्रश्नोत्तरी, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपने सेक्शन का गौरव बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं और विजेताओं के रूप में उभरते हैं। बिग फाइट वरिष्ठ जूनियर इंटरैक्शन को बढ़ावा देने के लिए और छात्रों की छिपी प्रतिभाओं को उभारने के लिए एक बड़ा मंच है।

क्वा वादिस 2018

क्वा वादिस 2018

क्वा वादिस में पूरे देश के बी–स्कूलों और अंडरग्रेजुएट कॉलेजों से तीन दिन में 5000 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। क्वा वादिस 2018 के लिए विषय था 'अपनी आवाज उठाएं'। इस साल कालेज ने 3 चकाचौंध भरी रातों के दौरान प्रसिद्ध पंजाबी पार्श्व गायक–गुरु रंधावा, बैंड– माधियाम और स्टैंड–अप कॉमेडियन अब्बास मैथ्यू की मेजबानी की। इन तीन दिनों की अवधि के दौरान, आईआईएफटी ने 12 सांस्कृतिक और 7 प्रबंधन कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस उत्साह की भावना को देखते हुए, हमने ''हिप हॉप इंटरनेशनल रीजनल्स'' की मेजबानी की जिसमें भारत के कुछ बेहतरीन नृतकों ने दर्शकों का दिल जीतने और वर्ल्ड चैम्पियनशिप यूएसए के टिकट के लिए कड़ा मुकाबला किया। आईआईएफटी ''मिस फेमिना कैम्पस प्रिंसेस'' के लिए भी मेजबान था जिसमें मिस इंडिया प्रतियोगिता की वाइल्ड कार्ड प्रविष्टि जीतने के लिए सभी युवा सौंदर्य प्रतियोगियों ने प्रतिस्पर्धा की। पूर्व मिस वर्ल्ड, सुश्री कोयल राणा ने आईआईएफटी में अपनी उपस्थिति दर्ज कर सम्मान बढ़ाया और ''मिस फेमिना कैम्पस प्रिंसेस 2018'' प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका अदा की।

वार्षिक आईआईएफटी मैराथन 2017

आईआईएफटी मैराथन 2017 क्वा वादिस 2018 थीम की आधिकारिक शुरूआत थी, जिसमें दिल्ली में 12 नवंबर 2017 को 'अपनी आवाज उठाएं' ध्येय के लिए दौड़ में दिल्ली के छात्रों ने भाग लिया। इस आयोजन में 4 दौड़ें – 5.5 कि.मी. (पुरुष और महिला), 11.5 किमी (पुरुष और महिला) शामिल थीं। इस वर्ष, मैराथन में दिल्ली के निवासियों एवं छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर बड़ी सफलता के साथ संपन्न किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर के थ्रोबॉल खिलाड़ी श्री अंकुर सिंघल ने आईआईएफटी मैराथन 2017 को झंडा दिखाकर रवाना किया।

रक्तदान शिविर 2017

रक्तदान कैंप का आयोजन 28 नवंबर 2017 को क्वा वादिस 2018 थीम 'अपनी आवाज उठाएं' के एक हिस्से के रूप में किया गया था। एचडीएफसी बैंक और रोटरी ब्लड बैंक के सहयोग से यह आयोजन सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था।

बैटल बाई लेक्स

अक्टूबर महीने के अंत में, बैटल बाई लेक्स का पहला सत्र शुरू हुआ। बैटल बाई लेक्स, संस्थान के कोलकाता केंद्र में आयोजित खंड युद्धों के पहले सीजन का नाम है। फुटसल, गली क्रिकेट, क्विडिच, काउंटर स्ट्राइक, प्लॉजन बॉल, वॉलीबॉल, अंताक्षरी और कई अन्य कार्यक्रमों ने छात्रों को नियमित कक्षाओं और कार्यों के बीच बड़ी संख्या में भाग लेने के लिए आकर्षित किया। विजेता ट्राफी जीतने के लिए अंत तक चार टीमें लड़ी थीं। अंत में, जीतने वाले अनुभाग को ट्रॉफी प्रदान की गई।

बैटल बाई लेक्स

ट्रेजर हंट 2018

जनवरी 2018 में एक पैन दिल्ली ट्रेजर हंट का आयोजन किया गया जिसमें बाइकिंग समूहों एवं विभिन्न अंडरग्रेजुएट्स तथा स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को अलग–अलग सुरागों को हल करना था जो दिल्ली में अलग–अलग प्रतिष्ठित जगहों पर थे। जिस टीम ने न्यूनतम दूरी तय करते हुए अधिकतम सुरागों का पता लगाया उसने पिरेट्सः पैन दिल्ली ट्रेजर हंट जीता।

रक्त दान अभियान

समय–समय पर, आईआईएफटी के छात्र समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करने का प्रयास करते हैं। एक ऐसी ही पहल की अगुवाई में, रविवार 26 नवंबर, 2017 को आईआईएफटी के कोलकाता परिसर में कोशिश– द सोशल अवेयरनेस सेल ने एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। यह अभियान द लायंस ब्लड बैंक और बैंक कनेक्ट के सहयोग से आयोजित किया गया। आईआईएफटी कोलकाता केंद्र छात्रों ने अति उत्साह से भाग लेते हुए लगभग 60 छात्रों ने रक्तदान किया। फोटो में उनके मुस्कुराते चेहरों को देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि इस महान कार्य से जुड़कर वे कितने खुश हैं। बाद में, उन्होंने संदेश लिखकर अपनी भावनाओं को भी व्यक्त किया।

कोलकाता केंद्र पर रक्तदान शिविर

लोहड़ी समारोह

आईआईएफटी कोलकाता परिसर एक स्मरणीय स्थल बन गया, जब लोहड़ी समारोह ने विद्यार्थियों के मूड को बदल दिया। लोहड़ी मकर संक्रांति से पूर्व मनाई जाती है। छात्रों ने शाम को लकड़ी के ढेर के चारों ओर इकट्ठा होना शुरू किया और जैसे ही लकड़ियों को जलाया गया, छात्रों ने जोरदार ध्वनि से खुशी प्रकट की। फिर ढोल वालों ने पारंपरिक पंजाबी धुनों के साथ ढोल बजाया और हर किसी ने ढोल की थाप पर नृत्य किया।

कोलकाता केंद्र पर लोहड़ी समारोह

सरस्वती पूजा

वसंत पंचमी की सुबह, पीले कुर्ते, साड़ी और सलवार में सजे छात्र आईआईएफटी के अकादमिक ब्लॉक में कला और अध्यापन की देवी सरस्वती को अपनी पुष्पांजली प्रदान करने के लिए एकत्रित हुए। यह एक बहुत शुभ अवसर था, जहां केंद्र प्रमुख, डॉ. के. रंगराजन पूजा के दौरान वसंत पंचमी मनाने के लिए छात्रों के साथ उपस्थित थे। यज्ञ के आयोजन, मंत्रोचार के साथ पूजा और पुष्पांजली देने के बाद, छात्रों ने शैक्षणिक ब्लॉक में मौजूद सभी लोगों को प्रसाद वितरित किया।

अद्वैत 1.0

आईआईएफटी कोलकाता के सांस्कृतिक त्योहार का प्रथम प्रस्तुतीकरण – अद्वैत 1.0 बड़े उत्साह के साथ आरंभ हुआ। अपने जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत से पहले वरिष्ठ बैच के लिए अडिओस यादगार के रूप में पूर्व–विदाई समारोह है। कार्यक्रम छात्रों के नृत्य प्रदर्शन के साथ शुरू हुआ और इसके बाद मधुर बांसुरी वादन और सुरीले गीतों को प्रस्तुत किया गया। अद्वैत 1.0 को बढ़ाते हुए, ब्रांडवॉगन – आईआईएफटी में विपणन क्लब और मार्कमंत्र – आईआईएफटी की मार्केटिंग मैगजीन ने एक फनफेयर का आयोजन किया जहां एमबीए 2017–19 बैच में अपने व्यवसाय कौशल को दिखाने का अवसर मिला।

बजट प्लस

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान को अपने वार्षिक चर्चा कार्यक्रम 'बजट प्लस' के लिए बंगाल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री में अप्रत्यक्ष करों के सह–अध्यक्ष श्री विवेक जालान की मेजबानी का विशेषाधिकार था। प्रोफेसर रानजॉय भट्टाचार्य ने केंद्रीय बजट 2018 की जटिलताओं के बारे में छात्रों को बताते हुए स्पीकर के साथ मंच साझा किया।

कोलकाता केंद्र पर बजट प्लस छात्र कार्यक्रम

विवान

आईआईएफटी कोलकाता ने सफलतापूर्वक विवान – वार्षिक बिजनेस सम्मेलन का आयोजन किया। भारत के निर्यात–आयात बैंक के श्री डेविड रस्किन्हा, प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) ने इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य वक्ता के रूप में इसकी शोभा बढ़ाई। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय व्यापार और विशेष रूप से विवान के उद्योग 4.0, संरक्षणवाद और डिजिटलीकरण के मुख्य विषय तथा व्यापार और बैंकिंग पर इसके प्रभाव पर अपने विचार व्यक्त किए। वित्तीय समावेशन और वित्त में डिजिटल टेक्नोलॉजी को अपनाने के अन्य सरकारी एजेंडे और कैसे एक्जिम बैंक उसमें योगदान कर रहा है, के बारे में छात्रों को परिचित करवाया।

अल्युमनी विशेष वार्ता

1996 के बैच से श्री किंगसुक हाजरा जिन्होंने एसएपी, ओरेकल और एडब्ल्यूएस के साथ काम किया है, ने परिसर का दौरा किया और स्मार्ट मार्केटिंग सफलता के लिए छात्रों के साथ बातचीत की।

इसके साथ ही 2015–17 के बैच के श्री विक्टर गांगुली, जो वर्तमान में टीजीआई ग्रुप के साथ काम कर रहे हैं, 2013–15 के दिल्ली बैच के सुश्री सुबारन मुखर्जी जो वर्तमान में आईटीसी में एक ब्रांड मैनेजर के रूप में काम कर रहे हैं और श्री राजेश तारकड़ जो पिछले दो सालों से ओलामा इंटरनेशनल के साथ जुड़े हैं, ने विभिन्न विषयों पर बैच के साथ बातचीत की। उन्होंने व्यापारिक भूमिकाओं और कंपनियों के बारे में भी सवालों के जवाब दिए।

अल्युमनी सपोर्ट

अल्युमनी विभिन्न मंचों यथा सम्मेलनों, प्रतियोगिताओं, प्लेसमेंट और अन्य छात्र–संबंधी गतिविधियों के माध्यम से संस्थान के कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्थान के पूर्व छात्र जो विभिन्न उद्योगों में नेतृत्व कर रहे हैं और उन्हें संस्थान के साथ जुड़ने के लिए छह घरेलू चैप्टर मीट और चार अंतरराष्ट्रीय मीट के माध्यम से एक मंच प्रदान किया जाता है। चैप्टर मीट संस्थान और अल्युमनी को एक–दूसरे के बारे में अद्यतन होने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आईआईएफटी के पूर्व छात्र कॉर्पोरेट, सार्वजनिक क्षेत्र, मीडिया, खेल और शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न व्यवसायों में शीर्ष पदों पर हैं। पूर्व छात्रों ने बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को नेतृत्व प्रदान कर और इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर्स अवार्ड आदि जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार अर्जित कर संस्थान को गौरवान्वित कर रहे हैं।
अल्युमनी छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन और अंतिम प्लेसमेंट, अतिथि व्याख्यान श्रृंखला, कॉर्पोरेट प्रतियोगिताओं, लाइव प्रोजेक्ट्स, मैंटरशिप और अन्य संस्थान–उद्योग इंटरफेस गतिविधियों के आयोजन के लिए नियमित तौर पर सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

अल्युमनस ऑफ द ईयर

प्रत्येक वर्ष संस्थान अपने उस पूर्व छात्र को संस्थान द्वारा दिए जाने वाले एक प्रतिष्ठित पुरस्कार ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' से सम्मानित करता है जो अपने कैरियर में बेहद सफल रहा/रही है। वर्ष 2005 में इस पुरस्कार की स्थापना के बाद से, यह उद्योग के दिग्गजों यथा श्री के.वी. राव, निवासी निदेशक आसियान, टाटा पावर, श्री सिराज चौधरी, अध्यक्ष कारगिल इंडिया, श्री मोहित मल्होत्रा, सीईओ डॉबर इंटरनेशनल आदि को प्रदान किया गया है।

वर्ष 2017 में, संस्थान के माननीय निदेशक ने ग्रैंड अल्युमनी रीयूनियन के अवसर पर सिंगटेल के चीफ प्रोक्योरमेंट ऑफिसर श्री कौस्तुभ वाडेकर को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' पुरस्कार प्रदान किया। सिंगटेल में कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व, श्री वाडेकर ने स्टारबक्स, क्राफ्ट फूड्स इंक., एक्सेंचर और जीपी ग्रुप ऑफ कम्पीज जैसी फर्मों के लिए काम किया। वह वर्ष 1988–90 बैच के एक पूर्व छात्र हैं।

सिंगटेल के चीफ प्रोक्योरमेंट ऑफिसर श्री कौस्तुभ वाडेकर को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी

छात्र उपलब्धियां

पुरस्कारों को अन्य संस्थानों के तुलनात्मक प्रदर्शन के लिए एक बेंचमार्क माना जाता है। आईआईएफटी के छात्रों ने अग्रणी संगठनों और प्रीमियर बी–स्कूलों द्वारा आयोजित प्रमुख प्रतियोगिताओं में भाग लिया और उत्कृष्ट पुरस्कार प्राप्त किए। आईआईएफटी के छात्रों द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान जीते गए उल्लेखनीय पुरस्कारों में से कुछ हैं: रिजर्व बैंक द्वारा आयोजित आरबीआई पॉलिसी चैलेंज, रिलायंस द्वारा आयोजित रिलायंस ट्यूप, एक्सिस बैंक द्वारा आयोजित एक्सिस मूव्स, आरपीजी द्वारा आयोजित आरपीजी ब्लिज्जर्ड, आईआईएम–बी द्वारा आयोजित ऑप्टिमस, आईआईएम–सी द्वारा आयोजित बिजवर्थ और एक्सएलआरआई द्वारा आयोजित फिनालॉग, आदि।

जीईपी द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''जीईपी गेमप्लान–2017'' के ''राष्ट्रीय स्तर के विजेता'' श्री मयंक बावरी और सुश्री बरखा जैन

रेकिट बेंकजर द्वारा आयोजित ''आरबी मवेरिक्स–2017 प्रतियोगिता'' में आईआईएफटी से टीम मिनर्वाज में ऐश्वर्या जैन, सम्बिट पाणिग्रही और स्वर्णिमा लभ ने प्रतिनिधित्व किया। ये उसमें ''नेशनल रनर्स–अप'' रहे और इन्हें 'पांच लाख रूपए का नकद पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

एचयूएल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''एचयूएल कार्पे डाइम–2017'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया जिसमें वे ''विजेता'' रहे।

टाइटन द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''टाइटन एलीवेट 4.0'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और ''नेशनल रनर्स–अप'' रहे।

लोरियल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''लोरियल ब्राँडस्टोर्म–2018'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें वे ''रीजनल फाइनलिस्ट'' रहे।

आरपीजी समूह द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''आरपीजी ब्लिज्जर्ड 6.0'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष–7'' में रहे।

बजाज द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''बजाज ऑफरोड'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''कैंपस फाइनलिस्ट'' रहे।

आईआईएफटी के छात्रों ने एचयूएल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''लाइम'' में भाग लिया जिसमें वे ''नेशनल सेमी फाइनलिस्ट'' रहे।

मैरिको द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''ओवर द वॉल'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें उन्होंने ''सीएक्सओ राउंड – विशेष उल्लेख'' अर्जित किया।

आईटीसी द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''आईटीसी इंटरोबैंग'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''कैंपस विजेता'' रहे।

पेप्सीको द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''पेप्सीको चेंज द गेम'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''नेशनल रनर्स–अप'' रहे।

सीएफए द्वारा आयोजित प्रतियोगिता ''सीएफए रिसर्च चैलेंज'' में आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और उसमें ''नेशनल फाइनलिस्ट'' रहे।

ई–वे बिल की आवश्यकता क्यों?

डॉ. राम सिंह
एवं
राजेन्द्र प्रसाद

समय–समय पर राजनैतिक पार्टियां सत्ता पर काबिज होने के लिए देश, काल, स्थिति को भांपते हुए किसी खास मुद्दे को लेकर जनता के बीच जाती हैं। इन मुद्दों का चयन जनता का ध्यान आकर्षित करने व जनहित को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। जब ये पार्टियां सरकारें बनाने में सफल होती हैं तो फिर उन सरकारों की उठाए गए मुद्दों के प्रति जवाबदेही बन जाती है जिसे पूरा करने के लिए अनेक कानूनों व नीतियों आदि का निर्माण किया जाता है।

आज भारत सहित विश्व के लगभग सभी विकासशील देशों के राजनैतिक गलियारों में भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक बयार चली हुई है जिससे कोई क्षेत्र अछूता नहीं है। इसी क्रम में, वर्तमान भारत सरकार ने सरकारी तंत्र व व्यापारी वर्ग के बीच पारदर्शिता लाने व राजस्व को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रौद्योगिकी के माध्यम से अनेक सॉफ्टवेयर तैयार किए हैं। इन सॉफ्टवेयरों के द्वारा दोनों पक्षों –सरकार व व्यापारी वर्ग के बीच पारदर्शिता, एकरूपता व सहजता को देखा जा रहा है। आज, इसी प्रणाली को आगे बढ़ाने के परिणामस्वरूप माल एवं सेवा कर (जीएसटी) व ई–वे बिल जैसी पद्धति का जन्म हुआ है।

माल एवं सेवा कर (जीएसटी) के कार्यान्वयन ने ''एक राष्ट्र–एक बाजार–एक कर प्रणाली''की अवधारणा का मार्ग प्रशस्त किया है। यह स्पष्ट है कि देश के किसी एक राज्य में माल के उत्पादन को खपत हेतु दूसरे राज्यों में भेजा जाता है, माल की आवाजाही एक ऐसा क्षेत्र था जिसने जीएसटी कार्यान्वयन के बाद कई चुनौतियों का सामना किया क्योंकि ट्रांसपोर्टरों को अभी भी राज्यों की सीमाओं पर राज्य प्रवर्तन एजेंसियों से कई बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है जिससे एक एकीकृत बाजार में माल के लाने–ले जाने में काफी देरी हो रही है। इसके अतिरिक्त, कुछ व्यापारी गलत घोषणा करने में संलिप्त हैं जिसके परिणामस्वरूप सरकार को वास्तविक व्यापार लेनदेन से राजस्व का काफी नुकसान हुआ है, क्योंकि उत्पादन के स्थान से संबंधित स्थान तक माल की आवाजाही पर मौजूदा व्यवस्था में नजर नहीं रखी जा सकती है। व्यापारियों के साथ–साथ ट्रांसपोर्टरों की समस्याओं को सुलझाने के लिए, भारत सरकार ई–वे बिल जारी कर रही है जो माल की तेज और पारदर्शी गति सुनिश्चित करेगी और सरकार को राजस्व की हानि से निजात दिलाएगी।

भारत सरकार ने 20 फरवरी 2018 तक पूरे देश में ई–वे बिल क्रियाविधि को लागू करने का निर्णय लिया ताकि मौजूदा व्यवस्था में अंतराल को दूर किया जा सके। ई–वे बिल सिस्टम के तहत ₹50,000 से अधिक मूल्य वाले सामान को एक राज्य से दूसरे राज्य में ले जाने से पहले ऑनलाइन पूर्व–पंजीकृत होना पड़ता है। ई–वे बिल माल की आवाजाही के लिए एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मार्ग बिल है जिसे जीएसटीएन (सामान्य पोर्टल) पर तैयार किया जा सकता है। इसके लागू किए जाने के परिणामस्वरूप यह एजेंसियों द्वारा जांच के लिए किसी अन्य दस्तावेज अर्थात आपूर्ति बिल, चालान, लदान बिल, सड़क माल नोट, रेल माल नोट, एयरवे बिल की आवश्यकता का स्थान लेता है क्योंकि ई–वे बिल पर लगाए गए क्रमांक द्वारा पूरे देश में माल पर नजर रखी जा सकती है। इस बिल के क्रियान्वयन के बाद ₹50,000 से अधिक के माल की किसी भी आवाजाही को किसी पंजीकृत व्यक्ति द्वारा एक ई–वे बिल के बिना नहीं किया जा सकता है। इसे एसएमएस के माध्यम से उत्पन्न या रद्द करने की अनुमति होगी।

जब एक ई–वे तैयार किया जाता है, तो एक अद्वितीय ई–वे बिल नंबर (ईबीएन) आवंटित होता है और वह आपूर्तिकर्ता, प्राप्तकर्ता और ट्रांसपोर्टर के लिए उपलब्ध होता है। कार्यान्वयन के कार्यक्रम के अनुसार, देश भर में ई–वे बिल प्रणाली 20 फरवरी 2018 से परीक्षण के आधार पर शुरू करने के लिए तैयार हो जाएगी, जिसमें राज्यों के भीतर होने वाले लेन–देन के लिए, प्रत्येक राज्य इसे प्रारंभ करने के लिए अपनी तिथियां तय कर सकते हैं। जब माल की आवाजाही होती है तब यह ई–वे बिल निम्न मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है:

- आपूर्ति के संबंध में
- आपूर्ति के अतिरिक्त अन्य कारणों के लिए (माना कि वापसी के लिए)
- किसी अपंजीकृत व्यक्ति से आवक आपूर्ति के कारण

यह हमें दूसरे भाग पर ले जाता है जिससे पता चलता है कि ई–वे बिल कौन तैयार करता है? इसे किसी पंजीकृत व्यक्ति से या उसके द्वारा तैयार किया जाना चाहिए यदि सामान का आवाजाही मूल्य ₹50,000 से अधिक है। कोई पंजीकृत व्यक्ति या ट्रांसपोर्टर ₹50,000 से कम मूल्य के माल के बावजूद ई–वे बिल बनाने और ले जाने का विकल्प चुन सकता है। अपंजीकृत व्यक्ति या उनके ट्रांसपोर्टर भी ई–वे बिल तैयार करने का विकल्प चुन सकते हैं। इसका अर्थ है कि एक ई–वे बिल पंजीकृत और अपंजीकृत दोनों व्यक्तियों द्वारा तैयार किया जा सकता है। हालांकि, जहां किसी पंजीकृत व्यक्ति को एक अपंजीकृत व्यक्ति द्वारा आपूर्ति की जाती है, वहां प्राप्तकर्ता को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी बातों का अनुपालन पूरा किया गया है, जोकि आपूर्तिकर्ता द्वारा किए जाने थे। ई–वे बिल के प्रमुख उद्देश्य, लाभ और विशेषताओं की व्याख्या निम्नानुसार की गई है:

ई–वे बिल का उद्देश्य

- ✓ परेशानी समाप्त करने के लिए एकल ई–वे बिल,
- ✓ माल की आवाजाही के लिए प्रत्येक राज्य में अलग–अलग पारगमन पास की आवश्यकता नहीं होगी,
- ✓ माल की आवाजाही के लिए विभागीय–पुलिस मॉडल से स्व–घोषणा मॉडल में बदलाव।

ई–वे बिल के लाभ

क) करदाताओं/ट्रांसपोर्टरों को ई–वे बिल तैयार करने/राज्यों में माल की आवाजाही के लिए किसी भी कर अधिकारी/चेक–पोस्ट पर जाने की जरूरत नहीं होगी।

ख) चेक–पोस्ट पर कोई प्रतीक्षा नहीं करनी होगी और वाहनों/संसाधनों का अधिकतम इस्तेमाल करते हुए माल की आवाजाही तेज गति से होगी, क्योंकि जीएसटी व्यवस्था में कोई चेक–पोस्ट नहीं है।

ग) ई–वे बिल प्रणाली उपयोगकर्ता के अनुकूल होगी।

घ) ई–वे बिल को तीव्रता के साथ आसानी से तैयार किया जा सकेगा।

ड.) चेक और शेष हेतु सुचारू कर प्रशासन तथा कर अधिकारियों द्वारा ई–वे बिल के आसान सत्यापन के लिए प्रक्रिया का सरलीकरण होगा।

ई–वे बिल पोर्टल की विशेषताएं

1. ई–वे बिल को आसानी से तैयार करते हुए उपयोगकर्ता अपने ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और उत्पादों का स्वामी बना सकते हैं।
2. उपयोगकर्ता अपने खाते/अपनी ओर से तैयार ई–वे बिल की निगरानी कर सकता है।
3. आसान उपयोग के लिए ई–वे बिल तैयार करने के लिए विभिन्न तरीके होंगे।
4. उपयोगकर्ता ई–वे बिल बनाने के लिए पोर्टल पर सह–उपयोगकर्ता और भूमिकाएं बना सकता है।
5. उपयोगकर्ताओं को पंजीकृत मेल आईडी/मोबाइल नंबर पर एसएमएस के माध्यम से चेतावनी भेजी जाएगी।
6. माल आपूर्तिकर्ता/माल प्राप्तकर्ता द्वारा वाहन संख्या की प्रविष्टि की जा सकती है जो ईडब्ल्यूबी तैयार करता है।
7. विवरण देखने में आसानी के लिए प्रत्येक ई–बिल पर क्यूआर कोड मुद्रित किया जाएगा।
8. एकाधिक खेप ले जाने वाले वाहन के लिए समेकित ई–वे बिल तैयार किया जा सकता है।
9. ई–वे बिल तैयार करने के अनेक तरीके।
10. लैपटॉप या डेस्कटॉप या फोन आदि पर ब्राउजर का उपयोग करके वेब–ऑनलाइन।
11. मोबाइल फोन पर एंड्रॉइड आधारित मोबाइल ऐप।
12. पंजीकृत मोबाइल नम्बरके माध्यम से एसएमएस।
13. एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस) के माध्यम से, अर्थात ई–वे बिल बनाने के लिए ई–वे बिल प्रणाली के साथ उपयोगकर्ता की आईटी प्रणाली का एकीकरण।
14. ई–वे बिलों का टूल–आधारित थोक निर्माण।
15. सुविधा प्रदाताओं की तृतीय पार्टी आधारित प्रणाली।

बेटे का माँ को पत्र

अमिता आनंद

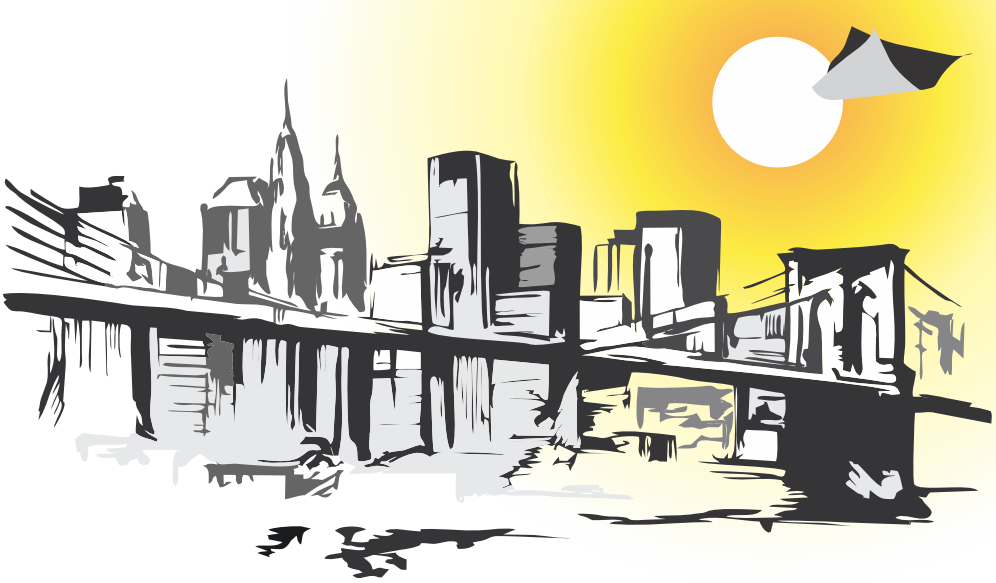

आज के दौर में अमेरिका से बेटे का लिखा पत्र पाकर मैं आश्चर्य चकित रह गई। वट्सऐप, ई–मेल के इस युग में हस्तलिखित पत्र? अजीब बात है! ऐसी क्या बात हो सकती है जिसे ई–मेल में नहीं कहा जा सकता?

पत्र खोला, पढ़ा।

कुछ खास नहीं था। खास था तो वह हस्तलिखित पत्र।

पत्र के अंदर का मजमून संक्षेप में

भारत की कमियाँ और विदेश की बड़ाई। साथ ही भारत छोड़ वहीं आ बसने का सुझाव। क्या बताऊँ कि क्या–क्या बुराइयाँ लिखी थीं।

वही घिसी–पिटी – स्व–अनुशासन का अभाव, कर्त्तव्यों से अधिक अधिकारों की इच्छा, खराब रखरखाव, धर्म–निरपेक्षता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषा विवाद, आदि, आदि.....। विडम्बना है कि अपने देश में हम हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और पंजाबी, मराठी, तमिल, तेलगु तथा शिया–सुन्नी, कैथोलिक–प्रोटेस्टेंट की बात करते हैं, परंतु भारतीयता की नहीं। लेकिन विदेश जाकर हम सब यह भूल जाते हैं और सिर्फ भारतीय के नाम से पहचाने जाते हैं।

समझ नहीं आता कि विदेश जाने के बाद ही यह भेदभाव व कमियाँ क्यों अखरती हैं? देश में रह कर अथवा रहने वालों को ये कमियाँ क्यों याद नहीं आती अथवा उन पर स्व–नियंत्रण नगण्य क्यों?

विदेश जाकर उनके नियम कानून हम स्वतः ही क्यों मान लेते हैं और अपने देश के उन्हीं कानूनों की अनदेखी क्यों करते हैं?

क्या हमारे यहाँ ट्रैफिक नियम व कानून नहीं हैं? क्या हमारे यहाँ दूसरों के अधिकारों का हनन अपराध नहीं है? क्या हमारे यहाँ नागरिकों के कर्त्तव्य परिभाषित नहीं हैं? अथवा क्या हमारे यहाँ विभिन्न निकाय अपना–अपना कार्य नहीं करते हैं?

नहीं ऐसा नहीं है। बात यह है कि हम यहाँ पर सभी काम सरकार की जिम्मेदारी पर छोड़ अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं और विदेशों में जाकर उनके कानूनों का पालन करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। यदि हम अपने संविधान तथा उसमें दिए गए अधिकारों एवं कर्त्तव्यों को जानने का प्रयास करें व पालन करें तो हमें पता चलेगा कि अपने कर्त्तव्यों को हम किस प्रकार अनदेखा कर रहे हैं और उन्हें भूल, मात्र अधिकारों एवं विशेष लाभ पर अपना अधिकार जमा रहे हैं। जबकि विदेश में अपने अधिकारों को भूल, हम उनके

कर्त्तव्यों को आत्मसात कर लेते हैं और उनका पालन निष्ठापूर्वक करते हैं।

ये ठीक है कि मूल संविधान में मौलिक अधिकारों के साथ मौलिक कर्त्तव्यों का उल्लेख नहीं किया गया था और इन्हें 42वें संविधान संशोधन द्वारा वर्ष 1976 में सरदार स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिशों के आधार पर मूल संविधान में जोड़ा गया लेकिन नागरिकों के मौलिक कर्त्तव्य परिभाषित हैं। संविधान की प्रस्तावना का प्रारम्भ ''हम भारत के लोग'' ही हम समस्त नागरिकों को संविधान के प्रति बाधित करता है। ये हमारे ऊपर है कि हम स्वयं को उससे बाधित मानें या नहीं।

इतिहास और समय गवाह है कि जब–जब इन्हीं कर्त्तव्यों के पालन के लिए बाध्य किया गया तो कभी उस पर धर्म, जाति और भाषा के नाम पर राजनीतिक रोटियाँ सेकी गईं तो कभी साम्प्रदायिक दंगे भड़काए गए। यहाँ तक कि सरकारें बदली गईं अथवा हत्याएं कर बदला लेने का प्रयास किया गया। परेशानी यह है कि अपने अधिकार की माँग करते हुए अथवा उन पर चलते हुए हम भूल जाते हैं कि यह किसी अन्य के अधिकारों का अतिक्रमण है।

लाउडस्पीकर पर रोक लगाने को लेकर ही बवाल मचा हुआ है। जबकि हम सभी कभी न कभी इनसे आहत हुए ही होंगे। देश में जाति के नाम पर होने वाली राजनीति तो चरम पर ही रहती है।

जब कभी भी हम जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाएंगे तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।

शायद इन समस्त भेद–भावों का आधार जन–मानस नहीं बल्कि धर्म व जाति, संप्रदाय के नाम पर होने वाली राजनीति है। इसके लिए भी कहीं न कहीं हम भी दोषी हैं जो धर्म व जाति के नाम पर मताधिकार का प्रयोग करते हैं। ऐसा नहीं कि विदेशों में ये सब नहीं। वहाँ पर भी श्वेत–अश्वेत, जाति, सम्प्रदाय के झगड़े होते ही रहते हैं। अंतर मात्र यह है कि वहाँ कानून इतने सख्त हैं कि व्यक्ति उन्हें मानने के लिए बाध्य हो जाता है। वहाँ हमारी तरह न्याय मिलने में देर नहीं लगती तो व्यक्ति कानून से डरता है।

आजकल लोग ट्रैफिक कानून व अधिक चालान के कारण कुछ हद तक सुधरते हुए लगते हैं।

गागर में सागर यही है कि ''भय बिन प्रीत न होई गुसाईं'' अर्थात बिना भय या डर के व्यक्ति ईश्वर की भक्ति भी नहीं करता तो यह तो अधिकारों को छोड़ कर्त्तव्यों का पालन है।

आप एक छोटी सी बात लें– यदि हमारे यहाँ घर के बाहर गाड़ी पार्क करने की 'पार्किंग फीस' लगा दी जाए तो हम सभी उसका विरोध करेंगे लेकिन अमेरिका जैसे देश की महंगी पार्किंग हमें स्वीकार्य होगी। यहाँ गाड़ी से नीचे पाँव न रखने वालों को वहाँ पब्लिक ट्रांसपोर्ट में चलने में भी कोई परेशानी नहीं। यहाँ वी.आई.पी. संस्कृति को समाप्त किया जाना अथवा छोड़ना अनेकों को पसंद नहीं आया जबकि वही लोग विदेशों में न केवल इसे स्वीकार करते हैं वरन् प्रशंसा भी करते हैं।

छोड़िए, पत्र पर हम इतनी माथापच्ची क्यों करें। हम स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक हैं। तात्पर्य यह नहीं कि बेटे को पत्र का उत्तर नहीं दिया। नहीं। उसे तो सोचकर निर्णय लेने की बात कह मेल कर ही दिया। क्यों जाएंगे वहाँ – यह सब सुनने के लिए। कितना भी बुरा सही अपना देश तो अपना है। उसे सुधारने का प्रयत्न द्रोपदी की साड़ी ही क्यों न हो, बचाने का प्रयत्न जारी रखेंगे। हम नहीं, आने वाली पीढ़ियां सही, पुनः देश को सोने की चिड़िया तो बनाकर ही रहेंगे। स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इस पर किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप हमें स्वीकार नहीं। होगा अमेरिका, जापान, इंगलैंड बहुत अच्छा, साफ–सुथरा, प्रदूषण रहित अथवा अनुशासित। हमें तो हमारी स्वतंत्रता अत्यधिक प्रिय है।

अकेलापनः है कोई उपचार ?

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

विकास, उन्नति एवं प्रगति के पथ पर दौड़ते मनुष्य समुदाय के सामने एक अजीबो–गरीब एवं गंभीर समस्या आकर खड़ी हो गई है और वह है मनुष्य का अकेलापन। आज के यांत्रिक, मशीनी एवं इंटरनेट से प्रभावित स्वचालित युग में विकास के नाम पर ''सैल्फ सर्विस टेक्नोलॉजी'' ने मानव को अकेला कर दिया है और सम्पूर्ण विश्व का मनुष्य समुदाय अब इस समस्या का समाधान खोज रहा है।

विकसित एवं पाश्चात्य देशों में ही नहीं अपितु हमारे भारतवर्ष में भी मानव की दिनचर्या के अधिकांश काम–काज दूसरे मनुष्य की सेवाएं लिए बिना स्वतः तकनीक के माध्यम से पूर्ण किए जा रहे हैं। कम्पनियां अपने ग्राहकों को सूचना संबंधी सेवाएं तथा सरकारी दफ्तर भी अपनी सेवाएं जैसे कि पासपोर्ट आदि सेवाएं स्वचालित हैल्पलाइन्स के जरिए उपलब्ध करवा रहे हैं। एक ग्रोसरी स्टोर एवं बैंक में ग्राहक स्वयं वस्तुओं एवं सेवाओं का चयन करने के पश्चात अपने आप स्वतः भुगतान एवं चेक–आउट कर सकते हैं। हवाई यात्रा करने वाले हवाई अड्डों पर स्वयं चेक–इन कर रहे हैं। अधिकांश वस्तुएं फ्लिपकार्ट, अमेजन पर ऑनलाइन ऑर्डर की जा रही हैं। इतना ही नहीं, बैंकिंग की सभी सुविधाएं, निवेश, बीमा आदि सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हो रही हैं।

ग्राहक द्वारा मंगाई गई सामग्री भी अब तो मशीन (ड्रोन) के जरिए पहुँचाई जा रही है। बस में कंडक्टर नहीं है तथा रेलगाड़ी भी बिना ड्राइवर (चालक) के चल सकती है। कल–कारखानों में मजदूरों की जगह रोबोट कार्य कर रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले अकेले ही कंप्यूटर या टैबलेट पर क्लास ले रहे हैं, परीक्षा भी अकेले ही दे रहे हैं। वाहन चालक गाड़ी चलाने का टैस्ट भी ऑनलाइन ही देकर लाइसेंस प्राप्त कर रहे हैं।

घर में भी चाहे बात कोई फिल्म देखने की हो या फिर कोई गेम खेलने की, सब कुछ आज का इन्सान अकेले ही कर रहा है। भीड़ में होते हुए भी वह अकेला ही है। पूर्ण स्वचालित वेंडिंग मशीनें लगता है, दुकानें जहां ग्राहक एवं विक्रेता मिलकर क्रय–विक्रय करते हैं, उन्हें बन्द करके ही छोड़ेंगे। भविष्य में यह समस्या और भी बढ़ने वाली है जब कार भी बिना ड्राइवर के चलने लगेगी।

इस युग की गंभीर एवं सबसे बड़ी समस्या अकेलापन है जिसकी वजह से स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं जैसे कि डिप्रेशन, दिल की बीमारी, टाइप–टू डायबिटीज आदि उत्पन्न होकर तेजी से फैल रही हैं। ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थीरेसा मैरी मे ने तो अकेलेपन की समस्या के निराकरण हेतु एक विभाग/मंत्रालय खोलने की भी घोषणा कर दी है। अब यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि अकेलेपन को दूर करने के लिए ''संवेदनशील मानव संपर्क'' को फिर से स्थापित किया जाए। एक मनुष्य दूसरे को अपनी समस्या बताए, मुस्कुराए एवं समाधान भी प्राप्त करे।

भारत में भले ही हम इस प्रकार का नया विभाग या मंत्रालय न बनाएं, पर इतना तो अवश्य करें कि बस में कंडक्टर, रिटेल स्टोर में सेल्समैन/सेल्सगर्ल, एयरलाइन में चेक–इन स्टाफ, बैंक एवं कॉल सेंटर कर्मचारी, डाकिया, दूधवाला एवं धोबी आदि को लुप्त होने से बचाएं तथा हमारी भावी पीढ़ी को अकेलेपन की समस्या से दूर रखें।

आइये! प्रौद्योगिकी का प्रयोग थोड़ा सावधानीपूर्वक करें तथा मानव को मानव से जोड़ें एवं मानवता को बनाए रखें।

भाषा और हम

राहुल सिंह
छात्र एमबीए (आईबी)
2017–19

हाल ही में एक रेल यात्रा के दौरान मेरी नज़र मनौरी नाम के छोटे से स्टेशन पर लिखे एक कथन पर पड़ी। इस देश के सभी सरकारी दफ्तरों और संस्थानों की दीवारों पर लिखे कथनों की अगर सूची बनाई जाए तो उस फेहरिस्त में महात्मा गाँधी का नाम सबसे ऊपर आएगा। क्यूँ न आए! हमने ही उन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि दी है और भले ही हमारा समय बड़ों की बातों पर अमल न करने के लिए बदनाम हो पर उनकी बातें सुनना–सुनाना हमने आज भी नहीं छोड़ा है। कुछ बातें हैं जो जहन में रह जाती हैं और उस बोर्ड पर लिखे उस कथन ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। उस पर लिखा था: "यदि मैं तानाशाह होता तो सबसे पहले अपनी मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाता"। अब यह बात गाँधीजी ने कही है या नहीं यह मुझे नहीं पता। यह किसी सरकारी बाबू की शरारत भी हो सकती है। पर बात को आगे बढ़ाने के लिए यह मान लेते हैं कि यह गाँधीजी का ही कथन है। उस स्टेशन पर लिखे बाकी कथन इस बात की पुष्टि तो कर रहे थे कि हिंदी को बढ़ावा देने के लिए ये बातें लिखी गई हैं। जैसे राहुल सांकृत्यायन का यह कथनः "हिंदी विश्व की एक महान भाषा है"।

इस कथन को समझने के लिए सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि मातृभाषा कहते किसे हैं। इस सवाल के कई पहलू हैं और मैं कोशिश करूंगा उन सब पर एक नजर डालूं।

एक साधारण राष्ट्र के नजरिए से अगर इस कथन को समझें तो इसमें पेचीदगी का कोई सवाल ही नहीं उठता। एक राष्ट्र, एक भाषा (यदि एक नहीं तो एक जैसी भाषा)। यदि कोई उस देश का तानाशाह बनना चाहता है तो उस भाषा पर अपनी पकड़ बनाए ताकि वह अपनी बात लोगों तक आसानी से पहुंचा सके। या यूँ कहें कि लोगों को उन्हीं की भाषा में भ्रमित कर सके। पर भारत न कभी साधारण राष्ट्र था और न ही होगा। इसकी विविधता भौगोलिक होने के साथ–साथ भाषीय भी है। यह बात तो हम सभी जानते हैं। आज भी भारत में 500 से अधिक भाषाएं और बोलियाँ जीवित हैं। एक ही राज्य में एक ही बात बोलने के नाना तरीके हैं। तो फिर गाँधीजी किस मातृभाषा की बात कर रहे हैं? हिंदी?, तमिल?, उर्दू? या बंगाली? यह बता पाना मुश्किल है।

मातृभाषा की परिभाषा यह कहती है कि जो भाषा आपके घर में बोली जाती है वही आपकी मातृभाषा है। गुजरात में गुजराती बोली जाती है, बंगाल में बंगाली और इसी प्रकार हर राज्य की अपनी–अपनी मातृभाषा है। फिर अगर कोई भारत का तानाशाह बनने का सपना देखता है तो वह किस भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाए? और अगर वह कथन हिंदी को बढ़ावा देने के लिए लिखा गया था तो क्या हिंदी पूरे देश की मातृभाषा होनी चाहिए? यह बात शायद उस सरकारी बाबू की समझ से परे है। क्योंकि हिंदी भारत की बहुत सारी भाषाओं में से एक भाषा है। अगर इस बात को मान भी लिया जाए कि चूँकि हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है तो उसे मातृभाषा या राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया जाना चाहिए, तो फिर यह सवाल खड़ा होता है कि हिंदी की परिभाषा क्या है?

जिस भाषा में मैं यह लेख लिख रहा हूँ क्या उसे हिंदी कहेंगे? अगर आप हाँ कहने की चेष्टा कर रहे हैं तो जरा ध्यान से पढ़िए, इसमें अंग्रेजी और उर्दू के शब्द भी हैं। यहाँ तक कि कहीं–कहीं तो उर्दू के व्याकरण का भी प्रयोग है। हिंदी यदि किसी मायने में भारत का प्रतिरूप है तो विविधता में है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसने हर भाषा से शब्द ग्रहण किए हैं और उन्हें अपने व्याकरण में कुछ ऐसे घोल लिया है कि यह बताना भी मुश्किल है कि ''कोई'' एक उर्दू शब्द है।

अब तानाशाह की परिभाषा पर नजर डालते हैं। तानाशाह वह होता है जो अपनी मर्जी से देश चलाने की इच्छा रखता है और उसके पास साधनों की भी कोई कमी नहीं होती है। पर जहाँ तक भाषा का सवाल है, क्या तानाशाह का जोर भाषा पर चल सकता है? मेरी राय में ऐसा संभव नहीं है। मैं गाँधीजी की बात को गलत ठहराने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मैं सिर्फ उनकी बात को वास्तविकता के तराजू में तौलने की कोशिश कर रहा हूँ। सन् 1971 में पाकिस्तान ने पूर्वी बंगाल पर उर्दू थोपने की कोशिश की थी। उसका परिणाम हम सबके सामने है। पाकिस्तान का विभाजन हो गया था। बंगाली बोलने वाले लोगों पर उर्दू थोपना एक तानशाह के भी बस की बात नहीं थी। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे जहाँ लोगों ने अपनी भाषा को जिंदा रखने के लिए प्रशासन से लोहा लिया है।

इससे दो बातें सामने आती हैं: पहली यह कि भाषा प्रशासन की मुरीद नहीं है। भाषा लोगों के बीच से निकलती है। लोग अपनी जरूरतों के मुताबिक अपनी भाषा चुनते हैं। और दूसरी यह कि भाषा आम जनता की वो ढाल है जिसे भेद पाना करीब–करीब असंभव है। इससे जितना नुकसान प्रशासन को है उतना ही भाषा को भी है। आज भारत के पढ़े–लिखे लोग अपनी मातृभाषा से कई गुना अधिक निपुण अंग्रेजी में हैं, क्योंकि अंग्रेजी बोलना आज के समय की जरूरत है। हिंदी के विकास के लिए लाखों रूपए खर्च करने के बावजूद हिंदी–भाषी लोग अंग्रेजी सीखना चाहते हैं।

तो क्या इसका मतलब यह है कि क्षेत्रीय भाषाओं का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा? संभव है। क्या इन भाषाओं को बचाया जा सकता है? प्रशासनिक तौर पर तो बिलकुल नहीं। हम ज्यादा से ज्यादा यह कर सकते हैं कि इन भाषाओं के साहित्य को जिंदा रखें। इन भाषाओं को बदलते परिवेश के साथ बदलने का मौका दें। भाषा को पवित्र रखने की नाकाम कोशिश में उसे मरने न दें। फिर चाहे लोकतंत्र हो या तानाशाही, भाषा कभी विलुप्त नहीं होगी।

सफलता की एक शाम

संतोष कुमार
छात्र एमबीए (आईबी)
2017–19

जश्न के उठते धुएं में मेरा दम घुटता है,
मैंने लोगों को गुलामी से समझौता करते देखा है,
जिस समझौते के छींटे उसी फर्श पे पड़े हैं जिसे मैंने अभी रौंदा है।
मैंने जिस्मों के काले तांडव को देखा है,
जिसे कुछ अंधे लोग स्वतंत्रता मानते हैं,
खोये होश में गुलामी को कोसना उन्हीं लोगों का पेशा है,
दुम दबा कर वापस सोमवार को उन्हें उसी गुलामी की नरक में लौटना है,
जीवन के इसी खौफ़नाक खेल का नाम सफलता है।
आँखें फाड़े मैं इस खेल को घूरता रहा,
मन ही मन अपनी आत्मा से जिरह करता रहा,
क्या सफलता इसी का नाम है ?
जिसमें लोग बहरे होते संगीत और आजादी के जाम के बीच अपनी गुलामी उतारते हैं।
क्या पता मैं किस काल चक्र में फंसा हूँ,
मेरी आँखें जो यह भयावह चित्र देख रही हैं,
शायद मेरा मन उसे समझ नहीं पा रहा,
शायद उनके समझौते को मैं कभी समझ नहीं पाया,
कैसे धुएं के छल्ले और रंगीन पानी की बूंदें आदमी को आजाद बनाती हैं।
हैवानियत की हद को मैंने पूरे होशो–हवास में देखा है,
वो कहते हैं ये सब आपके बस की बात नहीं,
मैं सोचता हूँ शायद पागलपन को लोग आजकल हिम्मत कहते हैं।

सौंधी खुशबू

एस. बालासुब्रमणियन

"मातृ देवो भवः। पितृ देवो भवः। आचार्य देवो भवः।"

– तैत्तिरीय उपनिषद्

साथियों, हिंदी पत्रिका "यज्ञ" के माध्यम से आज मैं एक संस्मरण आप सभी से साझा करना चाहूंगा। आप सभी को मेरा नाम पढ़कर एक हिंदीतर भाषी की झलक साफ दिखाई दे रही होगी, लेकिन मेरी हिंदी यात्रा बहुत ही रोचक रही है जिसका शीर्षक भी मैंने दिल से चुना है। यह उस समय की बात है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था। मुझे पता चला कि मेरी कक्षा में जो लड़की हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करती है, वह हिंदी ट्यूशन के लिए जा रही है। वे दिन थे, जब हिंदी भाषा धीरे–धीरे तमिलनाडु में प्रवेश कर रही थी और एक स्थापित संस्थान ''हिंदी प्रचार सभा'' इस खूबसूरत भाषा का तमिल लोगों में प्रचार–प्रसार कर रहा था। हिंदी शिक्षण में शामिल होने का मेरा पहला इरादा, अगर ईमानदारी से कहूँ तो हिंदी सीखने से ज्यादा उस प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली लड़की को प्रभावित करना था। मैं उस लड़की के साथ हिंदी ट्यूशन में भाग लेने लगा। ''प्राथमिकि'' की अंतिम परीक्षा में मैंने 86 प्रतिशत अंक प्राप्त किए और उस लड़की ने 85 प्रतिशत अंक पाए। इस सफलता ने मुझे विश्वास दिलाया तथा उसके बाद मैंने उस लड़की को दृढ़ता से हराया। दसवीं कक्षा की सार्वजनिक परीक्षा में, मैंने अपने स्कूल में प्रथम स्थान हासिल किया। **''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं बल्कि मेरा आत्मविश्वास है!''**

उन दिनों, तमिलनाडु में हिंदी सीखना इतना आसान नहीं था। शिक्षार्थियों को हिंदी विरोधी प्रदर्शनकारियों की बाधाओं का सामना करना पड़ता था। जब मैं अपनी तीसरी परीक्षा (हिंदी) देने के लिए परीक्षा कक्ष के पास पहुँचा तो इन प्रदर्शनकारियों ने हमारे ऊपर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। उन पत्थरों में से एक मेरे गाल पर जोर से लगा और वहां से खून बहने लगा। चोट लगने के बावजूद भी, मैंने परीक्षा में भाग लिया और विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की। मैंने, बाधाओं का सामना करके, सभी परीक्षाओं में सफल होने का फैसला किया। **''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं बल्कि ऐसा माध्यम है जिसने मुझे चुनौतियों का सामना करना सिखाया।''**

उक्त घटना के बाद, मैं कम से कम अपने मोहल्ले में हिंदी भाषा प्रचारित करना चाहता था। मैंने अपने पड़ोसियों के बच्चों को हिंदी पढ़ाना शुरू किया। केवल दो बच्चों के साथ हिंदी शिक्षण शुरू हुआ। लेकिन छः महीने के भीतर संख्या नौ तक और प्रश्नोत्तरी, मौखिक परीक्षा इत्यादि के साथ–साथ बच्चों का मनोरंजन करके शिक्षण के मेरे अनोखे तरीके के कारण यह संख्या बारह तक पहुँच गई। जब बच्चे गलतियां करते तो मैं उन्हें दंडित करता था, लेकिन जब भी वे अच्छे अंक हासिल करते तो मैं चॉकलेट और छोटे–छोटे उपहार, उन्हें इनाम के रूप में देने के लिए इस्तेमाल करता था। मैंने केवल 18 वर्ष की उम्र में हिंदी ट्यूशन से 300 रुपए कमाए थे। मैंने हमेशा यह पैसा अपनी मां को दिया। उन दिनों, 300 रुपए एक बड़ी राशि होती थी। **''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, वरन् इसने मेरी शिक्षक की प्रतिभा को उजागर किया तथा मेरे परिवार की मदद भी की।''**

कुछ समय पश्चात, मुझे आईआईएफटी, नई दिल्ली से नौकरी की पेशकश मिली। पहले कुछ दिनों, मैं कनॉट प्लेस में एक लॉज में रहा था। मैं कार्यालय पहुँचने के लिए ऑटो रिक्शा लेता था। आमतौर पर, ऑटो रिक्शा वाले अधिकतम 60 या 65 रुपये चार्ज करते थे। हिंदी के अंक, उन दिनों, हमेशा मेरे लिए समस्या पैदा करते थे, हालांकि मैं दस की संख्या के गुणकों के साथ सहज था। मैंने संख्या 65 के लिए हिंदी शब्द केवल ऑटो–ड्राइवरों के साथ सौदा करने के लिए सीखा था,जब वे मुझसे 70 रुपये मांगते तो मैं उनको 65 रुपए के लिए तैयार करता। लेकिन, दुर्भाग्यवश, एक दिन, एक मध्यम आयु वर्ग के ऑटो ड्राइवर ने मुझसे 55 रुपये मांगे थे। मैंने सोचा, वह 75 रुपये मांग रहा है और मैंने बस 60 या 65 कहकर उसके साथ सौदा करना शुरू कर दिया। आखिरकार, उसने मुझे विकल्प दिया और कहा कि मैं जो देना चाहता हूँ वह दे दूँ। जब मैं कार्यालय पहुँचा, तो मैंने उसे 65 रुपए दिए और उससे पूछा ''खुश हो?'' वह बदले में मुस्कुराया और दस रुपए वापस देते हुए कहा कि वह वास्तव में 55 रुपए मांग रहा था। मुझे नहीं पता था कि क्या कहना है लेकिन उसके पास कहने के लिए काफी कुछ था जो मेरे दिमाग में हमेशा के लिए रहेगा। उसने कहा, ''हमें किसी के पैसे नहीं रखने चाहिएं। हमारा अपना पैसा खुशी से हमारा जीवन चलाने के लिए पर्याप्त है।'' **''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, बल्कि एक शिक्षक है जिसने मुझे ईमानदारी सिखाई।''**

जब मैं आईआईएफटी में शामिल हुआ तो शुरुआत में मैं एक अंतर्मुखी व्यक्ति था और केवल कुछ ही लोग मेरा नाम जानते थे। यह वह समय था

जब हिंदी अनुभाग ने हमारे संस्थान की वेबसाइट के हिंदी संस्करण को विकसित करने के लिए मुझसे संपर्क किया जिसे मैंने खुशी से स्वीकार कर लिया। मैंने अपनी कड़ी मेहनत से वेबसाइट को हिंदी में विकसित किया। आपकी कड़ी मेहनत हमेशा आपको उसका फल देती है। मंत्रालय ने हमारी वेबसाइट को दूसरी सर्वश्रेष्ठ हिंदी वेबसाइट घोषित किया। उस पुरस्कार को ग्रहण करने के लिए तत्कालीन हिंदी अधिकारी श्री वर्मा जी मुझे अपने साथ ले गए। इसके बाद, हर किसी ने संस्थान में मेरा नाम जानना शुरू कर दिया। उसके बाद, मैंने हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरु किया और पुरस्कार जीते। दरअसल, मेरा लक्ष्य तब पुरस्कार जीतना नहीं था, बल्कि संजीव, अतुल, मनोज, बरुन, नीरू, राकेश, अरुणा, चंचल जैसे अच्छी हिंदी जानने वाले लोगों को प्रभावित करना था जो हमेशा उन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। **''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, परंतु एक ऐसा माध्यम है जिसने मुझे लोकप्रियता दी है।''**

मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह इस भाषा के कारण ही है कि मैंने दिल्ली में अपने दिनों का आनंद लेना शुरू कर दिया और वास्तव में इस भाषा की वजह से ही मैंने अपने दो निम्नलिखित महत्वपूर्ण जीवन लक्ष्यों को स्थापित किया :–

1.अपनी नौकरी से प्यार करें, लेकिन अपनी कंपनी के साथ कभी प्यार न करें। उन लोगों से हमेशा प्यार करें जो उस कंपनी में आपके साथ काम कर रहे हैं। सिर्फ ऑफिस छोड़ने तक नहीं परंतु इस दुनिया को छोड़ने तक।

2. अपने लिए हर किसी से अच्छा नाम अर्जित करना असंभव होगा, लेकिन हर किसी के लिए अच्छा नाम देना आपके लिए हमेशा संभव है।

''हिंदी मेरे लिए सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, वरन् यह एक गुण है।''

जब भी लोग मुझे मेरी मातृभाषा के बारे में पूछते हैं तो मैं कहता हूँ कि संगीत मेरी मातृभाषा है और तमिल केवल मेरी पितृभाषा है। बाद में, हिंदी मेरी शिक्षक भाषा बन गई क्योंकि इस भाषा ने मुझे जीवन में बहुत कुछ सिखाया है।

धन्यवाद हिंदी और धन्यवाद हिंदी बोलने वाले लोग। आचार्य देवो भवः।

संस्थान का प्लेसमेंट कक्ष

संजीव कुमार

रोजगारोन्मुख शिक्षा वर्तमान समय की एक सर्वप्रमुख विशेषता है। राष्ट्र का हर युवा अपनी शिक्षा को रोजगारपरक बनाने में अग्रसर है। वस्तुतः मानवमात्र का जीवनयापन रोजगार से सीधे संबंधित होता है, अतएव, वह रोजगार प्राप्ति के लिए अपेक्षित उद्योग करता है। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के ग्रेजुएट स्टडीज डिविजन के अंतर्गत आने वाला प्लेसमेंट कक्ष संस्थान का एक प्रमुख सम्भाग है। कक्ष के नामावलोकन से ही इसके निहितार्थ संबंधी पिपाशा शांत हो जाती है। प्लेसमेंट कक्ष की क्रियाविधि व इसके क्रियाकलाप के विषय में हम निम्नोक्त रूप से चर्चा करते हैं।

प्लेसमेंट कक्ष का वर्तमान प्रशासनिक पदानुक्रम

निदेशक

↓

चेयरपर्सन – ग्रेजुएट स्टडीज डिविजन

↓

कारपोरेट एण्ड प्लेसमेंट एडवाइजर

↓

संयुक्त कारपोरेट एण्ड प्लेसमेंट एडवाइजर

↓

सहायक | वरिष्ठ लिपिक | वरिष्ठ लिपिक

प्लेसमेंट कक्ष के क्रियाकलाप

<table>
<tr><th colspan="5">प्लेसमेंट एक्टीविटी</th></tr>
<tr><td colspan="2">समर प्लेसमेंट</td><td>लैटरल प्लेसमेंट</td><td colspan="2">फाइनल प्लेसमेंट</td></tr>
<tr><th colspan="5">एल्युमिनी एक्टीविटी</th></tr>
<tr><td>एग्जीक्यूटिव काउंसिल मीट</td><td>चैप्टर मीट (राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय)</td><td>एल्युमनस ऑफ द इयर</td><td>ग्रांड एल्युमुनाई रीयूनियन</td><td>सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन</td></tr>
<tr><th colspan="5">कारपोरेट इंटरफेस</th></tr>
<tr><td>कम्पनी पिचिंग</td><td>गेस्ट लेक्चर्स</td><td>एल्युमुनाई इण्टरैक्शन</td><td colspan="2">कॉरपोरेट कम्पीटिशन</td></tr>
<tr><th colspan="5">सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम</th></tr>
<tr><td>वार्षिक एन.जी.ओ. मीट</td><td>छात्रों का एन.जी.ओ. के साथ तीन सप्ताह का अटैचमेंट</td><td>अटैचमेंट के दौरान फैकल्टी विजिट टू एन.जी.ओ.</td><td colspan="2">छात्रों का इवैल्यूयेशन फार्म एन.जी.ओ. द्वारा भरा जाना</td></tr>
<tr><th colspan="5">मीडिया</th></tr>
<tr><td colspan="2">प्लेसमेंट समाचार विभिन्न मीडिया समूहों को प्रेषित किया जाना</td><td colspan="3">मीडिया समूहों में आए संस्थान के समाचारों को एकत्र करना</td></tr>
<tr><th colspan="5">अन्यान्य</th></tr>
<tr><td colspan="2">प्लेसमेंट ब्रोशर का निर्माण</td><td>स्टीयरिंग कमेटी सभा का संचालन</td><td colspan="2">सर्वेक्षण से संबंधित सूचना प्रदान करना</td></tr>
</table>

प्लेसमेंट एक्टिविटी

संस्थान के दोनों केंद्रों के पूर्णकालिक छात्रों के लिए प्लेसमेंट फैसिलिटेशन क्रियाकलाप प्लेसमेंट कक्ष द्वारा सम्पादित किए जाते हैं। समर प्लेसमेंट के अंतर्गत छात्रों को फर्स्ट इयर में समर प्लेसमेंट पूर्ण कराया जाता है। हालांकि, समर प्लेसमेंट की प्रक्रिया छात्रों के इण्डक्शन के कुछ ही महीनों के बाद संपन्न करा ली जाती है। समर प्लेसमेंट के अंतर्गत छात्रों को विभिन्न कम्पनियों में लगभग दो महीने का इंटर्नशिप करना होता है। इंटर्नशिप के दौरान अगर छात्रों का प्रदर्शन श्रेष्ठ पाया जाता है तो कम्पनी उन्हें प्री–प्लेसमेंट ऑफर/प्री–प्लेसमेंट इंटरव्यू (पी.पी.ओ./पी.पी.आई.) दे देती है। पी.पी.ओ. से तात्पर्य यह है कि कम्पनी जिसने छात्रों को इंटर्नशिप के दौरान उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए पी.पी.ओ. दिया है वह छात्र अब औपबंधिक रूप से उस कम्पनी में नियुक्त कर लिया गया है। डॉबर, गोल्डमैन सैक, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड, आई. टी.सी. इत्यादि कम्पनियां छात्रों को प्रायः पी.पी.ओ. प्रदान करती हैं। पी.पी.आई. से तात्पर्य यह है कि जिस कम्पनी ने छात्र को इंटर्नशिप के दौरान पी.पी.आई. दिया है वह कम्पनी फाइनल प्लेसमेंट प्रोसेस के दौरान उस पी.पी.आई. प्राप्त छात्र से किसी लिखित परीक्षा अथवा समूह चर्चा के बिना सीधे साक्षात्कार करेगी।

छात्र समर इंटर्नशिप के लिए पहली अप्रैल से प्रस्थान करते हैं। छात्रों के लिए अनिवार्य है कि वे अपने सत्र के प्रोग्राम डाइरेक्टर से हस्ताक्षरित समर इवैल्यूयेशन फार्म को अपने साथ ले जाएं तथा इंटर्नशिप के दौरान अपने मेंटर से उस फार्म का मूल्यांकन कराएं। यह मूल्यांकन–पत्र सामान्यतः मेंटर द्वारा हस्ताक्षरित, गोपनीय, कम्पनी सील युक्त, बंद लिफाफे में, प्रोग्राम डाइरेक्टर को भेज दिया जाता है। इसके अलावा, दूसरे विकल्प के रूप में मेंटर इवैल्यूयेशन फार्म को लिफाफे में सील करके इंटर्न के हाथों भी प्रोग्राम डाइरेक्टर को भेज सकता है।

लैटरल प्लेसमेंट वस्तुतः फाइनल प्लेसमेंट का ही भाग है। इसमें वैसे छात्र भाग लेते हैं जिनके पास कार्यानुभव होता है। कम्पनियां कार्यानुभवधारी छात्रों के चयन के लिए लैटरल प्लेसमेंट के दौरान संस्थान परिसर में आती हैं और अपनी आवश्यकतानुसार छात्रों को नियुक्ति प्रस्ताव देती है।

फाइनल प्लेसमेंट प्रोसेस संस्थान में नवम्बर/दिसम्बर में होता है। इस अवधि के दौरान कम्पनियाँ द्वितीय वर्ष के छात्रों के चयन हेतु संस्थान परिसर में आती हैं। फाइनल प्लेसमेंट प्रोसेस का पहला दिन "डे जीरो" कहलाता है जिसमें सत्र के अधिकतम छात्र भाग लेते हैं। इस दौरान संस्थान परिसर में सर्वाधिक कम्पनियाँ भाग लेती हैं तथा छात्रों के बड़े समूह से उन्हें अपनी कम्पनी के लिए कार्मिक चुनने का अवसर प्राप्त होता है। "डे जीरो" के दिन अधिकतम छात्र कहीं न कहीं प्लेस्ड हो जाते हैं।

अल्युमिनी एक्टिविटी

संस्थान से पास आउट हुए विद्यार्थियों से संबंधित अल्युमिनी एक्टिविटी एक प्रासंगिक क्रियाकलाप है। इसके अंतर्गत "अल्युमिनी – अल्मा मैटर" कनेक्ट की तर्ज पर संस्थान से पूर्व छात्रों को आबद्ध किया जाता है। संस्थान से पास–आउट होकर छात्र विभिन्न कम्पनियों में अपनी सेवाएं दे रहे होते हैं तथा इस दौरान वे बड़े पदों पर पदोन्नत हो चुके होते हैं। श्री मोहित मल्होत्रा, सी.ई.ओ., डॉबर, श्री सिराज चौधरी, चेयरमैन, कारगिल इण्डिया, श्री संदीप सूले, सी. ई.ओ. (टीएमएंडडी), आई.टी.सी. इत्यादि संस्थान के श्रेष्ठ अल्युमिनी–वृंद के रूप में शामिल हैं।

संस्थान अल्युमिनी से संवाद करने व जुड़ने के लिए पूरे देश में छः चैप्टर्स बनाए गए हैं जो दिल्ली, कोलकाता, चेन्नै, मुंबई, हैदराबाद तथा बेंगलुरू है। इसके अलावा, विदेशों में इन चैप्टरों की संख्या चार है – संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, दुबई तथा सिंगापुर। इन चैप्टरों में एक चैप्टर हेड होता है जो संस्थान का अल्युमिनी होता है। साल में एक बार विभिन्न चैप्टरों में रिजनल चैप्टर मीट का आयोजन किया जाता है जिसमें इलाके के अल्युमिनी सम्मिलित होते हैं तथा संस्थान की ओर से चेयरपर्सन/फैकल्टी मेंबर चैप्टर मीट में सम्मिलित होते हैं।

चैप्टर मीट के अतिरिक्त, संस्थान के दिल्ली परिसर में साल में दो बार अल्युमिनी कार्यकारी सभा का आयोजन किया जाता है। इसमें चेयरपर्सन्स, चैप्टर हेड्स, कार्यकारी सदस्य, छात्र समूह के सदस्य व प्रशासकीय अधिकारी भाग लेते हैं। इस सभा की अध्यक्षता निदेशक महोदय द्वारा की जाती है।

''अल्युमुनस ऑफ द इयर'' क्रियाकलाप के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व में कहीं भी कार्य कर रहे अल्युमिनी में से किसी एक को ''अल्युमुनस ऑफ द इयर'' से विभूषित किया जाता है। इसके लिए आवेदकों का नाम दस्तावेज सहित अल्युमिनी चैप्टर हेड्स के द्वारा भेजा जाता है तथा संस्थान परिसर दिल्ली में एक विशिष्ट निर्णायक मंडल द्वारा सर्वश्रेष्ठ आवेदन पर विचार करते हुए ''अल्युमुनस ऑफ द इयर'' का चुनाव किया जाता है। निर्णायक मंडल की अध्यक्षता

निदेशक महोदय करते हैं तथा विभिन्न कम्पनियों के चेयरमैन, चेयरपर्सन – आई.आई.एफ.टी तथा कोलकाता सेंटर प्रमुख इसके सदस्य होते हैं।

''ग्रैंड अल्युमिनी रीयूनियन'' समारोह वर्ष में एक बार संस्थान के दिल्ली परिसर में आयोजित किया जाता है। वस्तुतः यह नवंबर/दिसम्बर में आयोजित होता है तथा देश–विदेश के तमाम अल्युमिनी सदस्य इसमें शामिल होते हैं। इस समारोह में ही ''अल्युमुनस ऑफ द इयर'' को ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

अल्युमिनी एक्टिविटी के अंतर्गत आने वाले क्रियाकलापों में ''सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन'' एक प्रमुख क्रियाकलाप है। इसके अंतर्गत, संस्थान से 25 साल पहले पास–आउट हुए छात्रों का मिलन समारोह होता है तथा उनका अभिवादन किया जाता है। वर्ष 2017 से इस क्रम में एक और क्रियाकलाप जोड़ा गया है। इसके अंतर्गत दस वर्षीय सेलिब्रेशन को भी जोड़ दिया गया है।

कॉरपोरेट इण्टरफेस

कंपनियों के विभिन्न अधिकारियों व उनके मानव संसाधन प्रभाग से बातचीत की सम्पूर्ण प्रक्रिया कॉरपोरेट इण्टरफेस के अंतर्गत आती है। इसकी सर्वप्रमुख क्रियाकलाप कंपनी पिचिंग है। इसके अतर्गत संस्थान के संकाय सदस्य, सी.पी.ए., संयुक्त सी.पी.ए. प्लेसकॉम सदस्य के साथ विभिन्न कंपनियों में संस्थान व इसके कोर्स करिकुलम के विषय में कंपनी को अवगत कराते हैं साथ ही छात्रों व उनके व्यक्तित्व के विषय में भी उन्हें बताते हैं। उदहारण के रूप में, किसी वित्त की कंपनी में पिचिंग का क्रियाकलाप संपादित करना हो तो वहां वित्त विषय की फैकल्टी प्लेसकॉम सदस्य के साथ पिच करती है। इस प्रक्रिया में मूलतः कंपनी को संस्थान के प्लेसमेंट प्रोसेस में भाग लेने व छात्रों के चयन के लिए प्रेरित किया जाता है।

कॉरपोरेट इण्टरफेस का दूसरा प्रमुख क्रियाकलाप गेस्ट लेक्चर है। गेस्ट लेक्चर के अंतर्गत कंपनी के कॉरपोरेट संस्थान में आकर छात्रों के समक्ष अपना व्याख्यान देते हैं तथा छात्रों के विशेष ज्ञान की जांच अपने व्याख्यान के दौरान करते हैं। इस क्रम में, कंपनी से आया हुआ कॉरपोरेट संस्थान से अवगत हो पाता है तथा गेस्ट लेक्चर के बाद कंपनी संस्थान के प्लेसमेंट प्रोसेस में आने के लिए प्रेरित होती है। संस्थान में हाल के वर्षों में एच.यू.एल. के सी.ई.ओ. श्री संजीव मेहता जी, नेस्ले के मैनेजिंग डाइरेक्टर व चेयरमैन श्री सुरेश नारायणन जी आदि का गेस्ट लेक्चर सम्पन्न हो चुका है।

अल्युमिनी–अल्मा मैटर कनेक्ट के अंतर्गत विभिन्न कंपनियों में कार्यरत्त संस्थान के अल्युमिनी का गेस्ट लेक्चर कारपोरेट इण्टरफेस का एक प्रमुख भाग है। इसके द्वारा संस्थान में किसी विशेष कंपनी से आए अल्युमिनी के माध्यम से उस कंपनी को प्लेसमेंट प्रोसेस में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है।

कॉरपोरेट इण्टरफेस का एक अंग "कॉरपोरेट कंपीटिशंस" भी है। यह छात्रों को विभिन्न कंपीटिशन्स के द्वारा प्लेसमेंट का मार्ग प्रशस्त कराता है। वस्तुतः बहुत सी कंपनियां इन कंपीटिशंस के द्वारा योग्य छात्रों को पी.पी.ओ./पी.पी.आई. देने के लिए अग्रसर होती है। लौरियल का "ब्रांडस्ट्रॉम", एच.यू.एल. का "कार्पेडियम", गोदरेज का "गोदरेज लाउड", महिन्द्रा का "महिन्द्रा वार रूम" इत्यादि प्रमुख कॉरपोरेट कंपीटिशंस हैं।

सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम

एक सोशल रिस्पॉंसिबल मैनेजर बनाने के निमित संस्थान के कोर्स करिकुलम में सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी सम्मिलित है। यह पूर्णकालिक छात्रों के लिए तीन क्रेडिट का प्रोग्राम होता है। इसके अंतर्गत छात्र संस्थान के पार्टनर एन.जी.ओ. में जाकर तीन सप्ताह का इंटर्नशिप करते हैं तथा समाज के बारे में गहराई से ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं। वर्तमान समय में आरोहन, विज्ञान विजय फाउण्डेशन, आश्रय अधिकारी अभियान, आस्था, प्रयास जुवेनाईल एण्ड सेंटर इत्यादि संस्थान के प्रमुख पार्टनर एन.जी.ओ. हैं। इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए निदेशक महोदय की अध्यक्षता में वार्षिक एन.जी.ओ. सभा का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी पार्टनर एन.जी.ओ. से आए हुए प्रतिनिधि, सी.पी. (जी.एस.डी.), प्रोग्राम डाइरेक्टर, सी.पी.ए., संयुक्त सी.पी.ए. इत्यादि भाग लेते हैं। इस सभा के दौरान कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाती है तथा समस्याओं का निदान किया जाता है। इंटर्नशिप के बाद विभिन्न एन.जी.ओ. द्वारा सम्मिलित छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है जो छात्रों के सी.जी.पी.ए. से संबंधित होता है। मूल्यांकन के पश्चात् संस्थान की ओर से विभिन्न पार्टनर एन.जी.ओ. को मानदेय भी दिया जाता है।

मीडिया क्रियाकलाप

मीडिया क्रियाकलाप के अंतर्गत संस्थान के प्लेसमेंट समाचार विभिन्न मीडिया हाउस को प्रेषित किए जाते हैं। प्रिंट मीडिया के अलावा ऑनलाइन मीडिया में भी संस्थान से संबंधित समाचार प्रेषित किए जाते हैं।

अन्य क्रियाकलाप

प्लेसमेंट, अल्युमिनी व आई.एम.एफ. (इण्टरनेशनल मैनेजमेंट फोरम, छात्र समूह – आई.आई.एफ.टी.) क्रियाकलाप को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए निदेशक महोदय की अध्यक्षता में समय–समय पर स्टीयरिंग कमेटी (संचालन समिति) की बैठक का आयोजन किया जाता है। इसके अंतर्गत आगामी क्रियाकलाप की रूपरेखा तैयार की जाती है तथा पूर्व में हुए क्रियाकलापों की समीक्षा की जाती है। छात्र समूह के प्रतिनिधियों के द्वारा इसमें विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का लेखा–जोखा अधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुतिकरण द्वारा रखा जाता है।

प्लेसमेंट प्रोसेस में कंपनियों की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्लेसमेंट ब्रोशर का निर्माण प्रासंगिक है। इसके द्वारा प्लेसमेंट पिचिंग के दौरान कंपनियों को ब्रोशर दिया जाता है तथा उन्हें इसके द्वारा संस्थान के बारे में व्यापक जानकारी दी जाती है।

देश के विभिन्न बिजनेस स्कूलों की तुलना में हमारा संस्थान कहाँ खड़ा है, इसके लिए विभिन्न संगठनों द्वारा समय–समय पर सर्वेक्षण कराए जाते हैं। प्लेसमेंट क्रियाकलाप, छात्र क्रियाकलाप, अल्युमिनी क्रियाकलाप, सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम इत्यादि से संबंधित विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्लेसमेंट कक्ष द्वारा दी जाती हैं। आउटलुक, टाइम्स, एन.आई.आर.एफ. इत्यादि वर्तमान समय की प्रमुख सर्वेक्षण संस्थाएं हैं।

इस प्रकार प्लेसमेंट कक्ष का सम्पूर्ण क्रियाकलाप पूर्णतः छात्रों के प्लेसमेंट से संबंधित है। हर दृष्टिकोण से इन क्रियाकलापों का अंतिम उत्पाद छात्रों का प्लेसमेंट है।

अंग्रेज़ चले गए इन्हें छोड़ गए !

कनक खरे
छात्रा एमबीए (आईबी)
2016–18

कहने को अपनी सभ्यता पर हर भारतीय को मान है,
किंतु इस संस्कृति की क्या पहचान है ?
चाइनीज़, इटालियन, थाई रेस्टोरेंट्स का चाव है,
पर सब्जी–रोटी, दाल–चावल का अभाव है।
अंग्रेज़ी भाषा बोलने वाले का सम्मान है,
पर संस्कृत का किसी को नहीं ज्ञान है।
जीन्स, ड्रैसेस, स्कर्ट पहनना सबको भाता है,
सलवार कमीज़ पहनो, तो 'बहनजी' कहा जाता है।
मेंहदी लगवाना झंझट का काम है,
इनके लिए टैटू बनवाना आसान है।
दूध–मलाई–हल्दी से नहीं चेहरा निखरता,
क्रीम पाउडर ही से है इनकी सुंदरता।
'रॉक' और 'पॉप' कूल हैं,
गजल मानो फिजूल है।
हिप–हॉप और जैज़ सब करते हैं पर,
त–त–थैया, त–त–थैया की वाहवाही नहीं सुनते हैं,
गिटार में इन्हें मज़ा है, पर सितार जैसे सज़ा है।
'मदर्स डे 'व' फादर्स डे' पर आर्चीज से कार्ड लाते हैं,
मगर प्रातः माता–पिता को प्रणाम करना भूल जाते हैं।

यह कैसा आधुनिकीकरण है ?
कि सोच छोटी होती गई,
बचपन से सीखी बातें,
अपना महत्त्व खोती गईं।

आजकल तो चम्मच–काँटे का जमाना है,
शर्म की बात अगर हाथ से खाना है।
नींबू–पानी ये नहीं पीते हैं पर,
फ्रैश लाइम–सोडा पसंद करते हैं,
पिज़्ज़ा बर्गर शौक से खाते,
पर तली पूड़ियों से घबराते।

ये वो हैं जो हलवा छोड़ केक की ओर दौड़ गए,
सच है, अंग्रेज़ चले गए पर इन्हें छोड़ गए!

गर्मी के लिए शीतल पेय

नेहा विनायक

गर्मी का मौसम मस्ती का मौसम होता है, और यदि हम स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने के लिए कुछ सावधानियाँ रखें तो इस मौसम का अधिकतम आनंद ले सकते हैं। गर्मी से थकने पर व्यक्ति को तीव्र प्यास लगती है, जो अत्यंत कमजोरी में बदल जाती है, तेज सिरदर्द होता है, लगातार पसीना, असमंजस, बेचैनी, चक्कर आना आदि, जो कि शरीर में जल की मात्रा के घटने का चिन्ह है। इस के कारण हमें डीहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है ।

अपने शरीर में जल की पर्याप्त मात्रा बनाए रखना चाहिए। पानी अधिक मात्रा में लेना, ना केवल पानी बल्कि फलों का ताजा रस (ये केवल जल की मात्रा ही नहीं बढ़ाते बल्कि आपकी ऊर्जा को भी बढ़ाते हैं) और विभिन्न तरह के शरबत बहुत फायदा करते हैं ।

इसलिए इन दिनों कोल्ड ड्रिंक और बाजार में बिकने वाले पैक्ड फ्रूट जूस जैसे अनहेल्दी चीजों की जगह घर में बने विभिन्न तरह के हेल्दी और टेस्टी शरबत पीने चाहिए ।

- **तुलसी का शर्बतः** तुलसी का शर्बत स्वादिष्ट होने के साथ–साथ हमारे लिए बहुत लाभदायक भी होता है। इसे तुलसी की पत्तियों के साथ गुड़ और नींबू डाल कर बनाया जाता है। तुलसी सुधा जुकाम, खांसी, पेट दर्द, गैस और एसिडिटी को खत्म करता है और हमारी पाचन शक्ति को भी बढाता है। इसके सेवन से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

- **मैंगो शेकः** फलों के राजा आम तो सभी को बहुत पसंद होते हैं और आमों से बना शेक तो और भी ज्यादा स्वादिष्ट लगता है। बच्चे हों या बड़े मैंगो शेक तो सभी को लुभाता है। यहाँ तक कि जो लोग दूध पीना पसंद नहीं करते वो भी इसे बड़े शौक से पीते हैं।

- **आम का पन्नाः** आम का पन्ना बहुत ही स्वादिष्ट होता है। जब गर्मियाँ अपने चरम पर हों तब आप आम का पन्ना बनाकर पी सकते हैं। यह आपके शरीर को शीतलता व तरावट देगा और आपको गर्मी व लू से भी बचाएगा।

- **कोकम शर्बतः** कोकम गोवा और गुजरात में पाया जाने वाला फल है, यह एक जूसी बेर की तरह होता है जो शरीर को शीतलता के साथ अन्य स्वास्थ्य लाभ देता है । गरमी में एक गिलास कोकम का शरबत पीने से यह हमें लू और अन्य बीमारी से बचाता है ।

- **नींबू पानीः** नींबू विटामिन सी का एक बेहतरीन स्त्रोत होता है । नींबू पानी आपके शरीर से पसीना निकालने में मदद करता है, जो गर्मियों के मौसम में काफी फायदेमंद होता है ।

- **गन्ने का जूसः** विटामिन और मिनरल से भरपूर गन्ने का जूस आपको गर्मी से राहत तो देता ही है, साथ ही आपकी सेहत का भी ख्याल रखता है ।

- **बेल का शरबतः** बेल का शरबत गर्मी के मौसम में काफी फायदेमंद होता है । बेल के फल में प्रोटीन, फॉस्फोरस, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम, फाइबर, विटामिन सी, विटामिन बी पाया जाता है। यह दिमाग और दिल को मजबूत करता है और पेट के लिये फायदेमंद होता है। बेल का शर्बत शरीर को ताजगी से भर देता है और गर्मी की लू से बचाता है।

- **तरबूज का जूसः** तरबूज में लाइकोपिन पाया जाता है, जो त्वचा की चमक को बरकरार रखता है । इसके अलावा विटामिन और आयरन की प्रचुर मात्रा होने के कारण ये शरीर के इम्यून सिस्टम को भी अच्छा रखता है । तो गर्मी से बचने के लिए तरबूज का जूस एक अच्छा ऑप्शन है ।

सिर्फ यही नहीं, और भी अनेक प्रकार के शरबत आप बना कर पी सकते हैं । तो इस गर्मी और लू से ना डरें और अपने शरीर को इन शरबतों से हाइड्रेटेड रखें ।

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड - कीबोर्ड शॉर्टकट

नेहा विनायक

हुम सब माइक्रोसॉफ्ट वर्ड पर काम करते हैं और अक्सर छोटे–छोटे काम के लिए माउस के प्रयोग से मेनु में विकल्प खोजते हैं। कीबोर्ड का प्रयोग हम केवल टाइपिंग के लिए ही करते हैं । लेकिन कीबोर्ड में कुछ ऐसे शॉर्टकट होते हैं जिसकी मदद से हम अक्सर दोहराने वाले काम आसानी से कर सकते हैं। आशा करती हूं निम्न शार्टकट हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होंगी:

क्र.सं.	इस काम को करने के लिए	ये बटन दबाएं
1	नया डाक्यूमेंट खोलें	Ctrl + N
2	सब सिलेक्ट करें	Ctrl + A
3	सेव	Ctrl + S
4	कॉपी	Ctrl + C
5	पेस्ट	Ctrl + V
6	अनडू	Ctrl + Z
7	रीडू	Ctrl + Y
8	बोल्ड	Ctrl + B
9	इटैलिक	Ctrl + I
10	अन्डरलाइन	Ctrl + U
11	फॉन्ट एक अंक छोटा करें	Ctrl + [
12	फॉन्ट एक अंक बड़ा करें	Ctrl +]
13	सेंटर अलाइन	Ctrl + E
14	लेफ्ट अलाइन	Ctrl + L
15	राइट अलाइन	Ctrl + R
	डाक्यूमेंट में आगे बढ़ने के लिए	
16	एक कैरेक्टर बाईं तरफ	Left Arrow
17	एक कैरेक्टर दाईं तरफ	Right Arrow
18	एक वर्ड बाईं तरफ	Ctrl+Left Arrow
19	एक वर्ड दाईं तरफ	Ctrl+Right Arrow
20	एक पैरा ऊपर	Ctrl+Up Arrow

क्र.सं.	इस काम को करने के लिए	ये बटन दबाएं
21	एक पैरा नीचे	Ctrl+Down Arrow
22	एक सेल बाईं तरफ (टेबल में)	Shift+Tab
23	एक सेल दाईं तरफ (टेबल में)	Tab
24	लाइन के अंत में	End
25	लाइन के शुरुआत में	Home
26	अगले पेज के टॉप में	Ctrl+Page Down
27	पिछले पेज के टॉप में	Ctrl+Page Up
28	डाक्यूमेंट के अंत में	Ctrl+End
29	डाक्यूमेंट के शुरुआत में	Ctrl+Home
	डिलीट करने के लिए	
30	एक कैरेक्टर बाईं तरफ डिलीट करें	Backspace
31	एक वर्ड बाईं तरफ डिलीट करें	Ctrl+Backspace
32	एक कैरेक्टर दाईं तरफ डिलीट करें	Delete
33	एक वर्ड दाईं तरफ डिलीट करें	Ctrl+Delete
34	लाइन के बीच में सिंगल स्पेस	Ctrl + 1
35	लाइन के बीच में डबल स्पेस	Ctrl + 2
36	लाइन के बीच में 1.5–लाइन स्पेस	Ctrl + 5
37	अगली व्याकरण संबंधी त्रुटि पर जाएं	Alt + F7
38	माइक्रोसॉफ्ट वर्ड बंद करें	Alt + F4
39	अक्षर केस बदलें – अपर केस, लोअर केस, सेंटेंस केस	Shift + F3

हिंदी : विच्छेद या संधि

अतुल कुमार

हिंदी व्याकरण के ये दो शब्द एक–दूसरे के विपरीत शब्द हैं। सरल शब्दों में विच्छेद का अर्थ होता है अलग करना और संधि का अर्थ होता है जोड़ना या समझौता करना। आधुनिक युग में भाषा सामाजिक एवं वैचारिक विच्छेद का विषय बन गई है। आपने प्रायः देखा होगा कि एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के बारे में, एक परिवार अन्य परिवारों के बारे में और एक प्रान्त अन्य प्रान्तों के बारे में पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर भिन्नता को विच्छेद का विषय मान लेता है। इस विडम्बना के कई कारण हो सकते हैं – संस्कृति का अल्प–ज्ञान, सामाजिकता की सीमित समझ इत्यादि। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या हम इन टकरावों को ही नियति मान कर एक – दूसरे पर आरोप एवं कटाक्ष करते रहें, केवल मूक दर्शक बन कर स्थिति का अवलोकन करते रहें अथवा इस समस्या का कोई सकारात्मक हल निकालने का प्रयास करते हैं। हमारे देश में हिंदी की भी कुछ ऐसी ही दशा है। जहाँ हिंदी को संधि और एकता का परिचायक होना चाहिए था, वहीं यह भारत के विभिन प्रान्तों की सीमाओं से टकराकर अपने अस्तित्व के लिए जूझती हुई दिखाई देती है। जब एकजुट करने वाली शक्ति ही जूझ रही हो तो वह बंधुत्व के स्थान पर केवल टकराव का कारण ही प्रतीत हो सकती है।

जिसे आज हम हिंदी कहते हैं उसे कभी हिंदुस्तानी कहा जाता था। जिसका मतलब था हिंदुस्तान की भाषा। इसे हिंदवी, देहलवि, हिन्दी–उर्दू और रेखता के नामों से भी जाना जाता था। इसके शब्दकोश का एक बड़ा भाग संस्कृत, फारसी और अरबी के शब्दों से बना है। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में पूर्व से पश्चिम तक इसका प्रचार–प्रसार था। भिन्न–भिन्न संस्कृतियों और प्रान्तों को जोड़ने में इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें गंगा–जमुनी संस्कृति के रूप में मिलता है। हमारे इतिहास में अनेकानेक ऐसे उदाहरण हैं जो हिंदी के समृद्धशाली होने एवं सबको अपने आप में समेटे होने का परिचय देते हैं। उदाहरण के तौर पर, मलिक मोहम्मद जायसी की पद्मावत जो पूर्णतः हिंदुस्तानी में लिखी गई, वहीं प्रेमचंद के साहित्य को उठाकर देखने से हिंदी–उर्दू की अमिट छाप दिखाई देती है। कहने का तात्पर्य यह कि हिंदी कभी भी किसी एक धर्म, समुदाय या सीमा में बँधी नहीं रही। हिंदी ने बहुत से उतार–चढाव देखे हैं। हमेशा अपना स्वरुप बदलने को तत्पर रही है। इसी विशेषता ने इसके अस्तित्व को कभी प्राणहीन नहीं होने दिया।

अगर इसकी स्वभावगत ऐसी विशेषता रही है तो मन में यहे प्रश्न उठना सहज ही है कि जब हिंदी इतनी सहिष्णु, इतनी व्यापक और इतनी सरल प्रकृति की है तो आखिर क्यों आज यह अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती दिखाई देती है? क्यों लोग सहज मन से इसे ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं? क्या भारत देश का आम जनमानस अपनी भाषा का सम्मान करना भूल गया है? नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है। अगर ऐसा होता तो इसका अस्तित्व कभी का मिट चुका होता। आप सभी आज का जो स्वतंत्र भारत देख रहे हैं उसके इतिहास से अवगत होंगे ही। स्वतंत्रता मिलने से पहले और बाद में बहुत से सामाजिक और राजनैतिक प्रसंग आए और गए जिसका परिणाम आज का भारत है। इन सभी प्रसंगों ने न सिर्फ भारत की सीमाएं निर्धारित कीं अपितु अनेक सांस्कृतिक एवं सामाजिक मापदंड भी लगभग निश्चित कर दिए। स्वतंत्रता से पहले हिंदी–उर्दू का जो अस्तित्व था वह राष्ट्र के विभाजन के साथ ही दो टुकड़ों में बंट गया। राजनैतिक दलों ने भाषा का बंटवारा करते हुए यह ध्यान ही नहीं दिया कि भाषा मनुष्य का उत्तम व्यवहार है जो समाज को एकजुट करता है, उसे वैचारिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है। स्वतंत्रता के बाद सन् 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान ने देवनागरी लिपि में हिंदी को राजभाषा घोषित किया तथा जब तक संसद अपना मत न प्रस्तुत करे तब तक पंद्रह वर्षों के लिए अंग्रेजी को शासकीय प्रयोजनों के लिए उपयोग में रखने की सहमति दी।

परिवर्तन की संभावनाओं ने हिंदीतर भाषी राज्यों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया, विशेष रूप से द्रविड़ भाषी राज्यों जिनकी भाषाएं हिंदी से संबंधित नहीं थीं। फलस्वरूप, संसद ने राजभाषा अधिनियम 1963 अधिनियमित किया, जिसमें 1965 के बाद भी शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी के निरंतर उपयोग को स्वीकृति दी गई। सन् 1964 में, अंग्रेजी के उपयोग को स्पष्ट रूप से अंत प्रदान करने के लिए एक प्रयास किया गया था, लेकिन महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पंजाब, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, पुड्डुचेरी और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों से विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा। इनमें से कुछ विरोध हिंसक भी हो गए। परिणामस्वरूप, प्रस्ताव गिरा दिया गया था और अधिनियम को सन् 1967 में संशोधित किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अंग्रेजी का उपयोग तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि प्रत्येक राज्य की विधायिका द्वारा उस प्रस्ताव को पारित नहीं किया जाता जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा और भारतीय संसद के प्रत्येक सदन में अपनाया नहीं था। उसके बाद आज तक इस विषय में कुछ नहीं हो पाया है।

यह तो रही विच्छेद की बात, अब थोड़ा संधि की ओर भी बढ़ चलें। प्रश्न यह नहीं कि जो हुआ वह उचित था या नहीं? प्रश्न यह है कि ऐसा क्या छूट गया, क्या कमी रह गई जो ऐसा नहीं हो पाया? अगर धरा की विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों तथा उसका इतिहास उठा कर देखें तो कहीं न कहीं हर नई संस्कृति के उदय के साथ पुरानी संस्कृति का दमन भी दिखाई देता है। उससे यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि उस समय जो विरोध हुआ वह सर्वथा अनुचित नहीं था। तो फिर भूल कहाँ हुई? क्या किया जा सकता था या क्या किया जाना चाहिए?

सबसे सरल उपाय जो समर्थ सिद्ध हो सकता है, वह है भारतीय भाषाओं का परस्पर अनुवाद अर्थात हिंदी की जो प्रसिद्ध कृतियाँ हैं उनका अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में तथा अन्य भाषाओं की कृतियों का अनुवाद हिंदी में अनुवाद। उदहारण के तौर पर, संगम साहित्य(तमिल), संत तिरुवल्लुअर द्वारा रचित साहित्य, गुरु रबिन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियाँ, धार्मिक ग्रंथ इत्यादि। यह कार्य इतना दुष्कर नहीं है क्योंकि भाषाओं में विभिन्नता के बावजूद भी सम्पूर्ण भारत की लोक कथाओं तथा ग्रंथों की पृष्ठभूमि और धरापटल एक ही है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण रामायण और महाभारत जैसी उत्तम धार्मिक ग्रंथ हैं जिनका प्रसार पूरे भारत में एक समान है। जिन कृतियों का हिंदी अनुवाद पहले से ही उपलब्ध है उन्हें और लोकप्रिय बनाने के प्रयास करने होंगे। ऐसा करने से भारत के प्रत्येक भूभाग का नागरिक अन्य संस्कृतियों के बारे में जान पाएगा तथा उससे जुड़ पाएगा। इस तथ्य में कोई दो राय नहीं है कि जितना साहित्य हिन्दुस्तानी भाषा में लिखा गया है उतना शायद ही किसी अन्य भाषा में हो। बस आवश्यकता है इससे जुड़ने की और औरों को जोड़ने की।

इससे देश की राजनीतिक एकजुटता में वृद्धि हासिल की जा सकती है और एकीकृत सांस्कृतिक चेतना का लोगों के बीच रोपण किया जा सकता है। इस प्रकार, न सिर्फ सामाजिक बल्कि राजनैतिक रूप से एकजुट देश का जो प्रयास है वह सिर्फ एक 'लिंगुआ फ्रैंका' के माध्यम से ही सत्य हो सकता है। इस तरह, जो हमारे महान अग्रणियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं के मध्य पुल बनाने का जो चिर संचित स्वप्न है वह साकार हो पाएगा।

अंत में, यही कि यह निश्चित रूप से एकमात्र उपाय नहीं है, ऐसे और भी कई समाधान हैं जो समान रूप से प्रभावी हो सकते हैं। समय की मांग यही है कि हम सब साथ मिलकर भारत की उस पहचान को खोजने का प्रयास करें जो इस महान राष्ट्र को उस सामूहिक भविष्य की तरफ ले जाए जहाँ इसे वस्तुतः होना चाहिए।

हिंदी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है। हिंदी के यही तो वे गुण हैं जो इसे दूसरी भाषाओं के शब्दों और वाक्यों को आत्मसात करने की असीम क्षमता प्रदान करते हैं।

— के.आर. नारायणन

यदि हम लोगों ने तन, मन, धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत
स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी।

— नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

हमारे व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

— महात्मा गाँधी

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस

सतपाल सिंह

साथियों! जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि संसार में एक समृद्ध परंपरा के अनुसार प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए समय–समय पर अनेक महत्वपूर्ण विषयों को लेकर प्रतीकात्मक रूप से किसी विषय विशेष के लिए एक दिवस निर्धारित किया जाता रहा है। इसी कड़ी में वर्ष 1992 में अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाने का निर्णय लिया गया और 7 फरवरी को ''अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस'' के रूप में इसकी पहचान की गई थी। परंतु इस तिथि में संशोधन करते हुए वर्ष 1999 में 19 नवम्बर को इसे पुनः त्रिनिदाद और टुबैगो में शुरू किया गया और तब से प्रति वर्ष **19 नवम्बर को ''अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस''** पूरी दुनिया में मनाया जाने लगा।

परिवार, समाज, देश एवं विश्व के सभी क्षेत्रों में पुरुषों द्वारा किए जा रहे असाधारण कार्य और उनके योगदान की सराहना एवं आभार व्यक्त करने हेतु ''अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस'' मनाने का प्रादुर्भाव हुआ है। पुरुष सतत् रूप से अपने परिवार, दोस्त, समुदाय, देश आदि के लिए संघर्षरत रहते हैं अर्थात कभी बेटा, कभी भाई, कभी पति, कभी पिता, कभी दोस्त की भूमिका का निर्वहन करते हैं। ''अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस'' समाज में पुरुषों द्वारा किए जा रहे त्याग व बलिदान का द्योतक है। इतना ही नहीं, अपितु इसका उद्देश्य लिंग–संबंधों में सुधार, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना, सकारात्मक पुरुष मॉडल की भूमिका पर प्रकाश डालना है। साथ ही इसमें पुरुषों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना और पुरुषों के खिलाफ हो रहे भेदभाव को समाज के सामने लाना भी शामिल है। जब घर के बाहर महिला को उसके काम से पहचान एवं सम्मान मिल रहा है तो घर के अंदर पुरुष को भी उसके काम के लिए पहचान एवं सम्मान मिलने की आवश्यकता को जरूरी समझा गया है। पुरुष बाह्य रूप से कितना भी कठोर हो, पर उसके अंदर भी एक दिल होता है, जो दुख–सुख में समान रूप से दुखता भी है और प्रसन्न भी होता है।

यह तो सर्वमान्य है कि घर के अनेक कार्यों में पुरुष का अहम् योगदान होता है तो फिर उसके काम की पहचान व उसके साथ–साथ उसे सम्मान दिया जाना भी नितांत आवश्यक हो जाता है। आज महिला सशक्तिकरण के नाम पर काफी कानून हैं लेकिन पुरुष के उत्थान हेतु ऐसा कोई नियम नहीं है ताकि इस समानता को संतुलित बनाया जा सके। महिला अपने पक्ष में इन कानूनों का भरपूर इस्तेमाल करती दिखाई देती हैं, परंतु दुर्भाग्यवश, पुरुष के पास किसी भी ऐसे अन्याय से बचने के लिए कोई भी ऐसा कानून नजर नहीं आता है।

आज, पुरुष की भावनाओं के मध्यनजर ''अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस'' पर कुछ पुरुष संगठनों द्वारा अनेक स्थानों पर संगोष्ठी, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया जाता है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन व जुलूस का आयोजन होता है तथा कुछ शहरों में कार रैली का आयोजन भी होता है। इसी कड़ी में कुछ शहरों में पुरुष आधारित फिल्म आदि का भी आयोजन होता है।

समाज की लगातार बढ़ती उम्मीदों पर खरा उतरना पुरुषों के लिए बहुत मुश्किल हो गया है। ऐसे में कड़ी मेहनत, घर–परिवार एवं समाज के प्रति कर्त्तव्योंको निरंतर पूरा करने के बावजूद भी पुरुषों को तिरस्कार एवं घृणा का सामना करना पड़ता है जो पुरुषों के आत्मसम्मान एवं मानसिक सोच को बुरी तरह चोटिल करता है। इसकी वजह से कुछ पुरुष चाहे वे किसी भी पद पर हों या किसी भी पेशे से जुड़े हों, तिरस्कार एवं जिल्लत की जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

सरकारी आंकड़े चीख–चीख कर गुहार लगा रहे हैं कि पुरुषों को भी बचाओ क्योंकि महिलाओं से दो गुना से भी ज्यादा पुरुष

आत्महत्या कर रहे हैं। किन्तु पुरुषों की आवाज बढ़ते कानूनी दबाव में जैसे दब कर रह गयी है। वर्ष 2015 में भी तकरीबन 65,000 पुरुषों ने आत्महत्या की। आंकड़े बताते हैं कि अधिकतर मामलों में पति पहले इस धरती से विदा होता है और पत्नी बाद में। वजह कहा जाता है कि उस पर मानसिक तनाव अधिक रहता है –घर का और बाहर का भी। ज़्यादातर पुरुष अपना दुःख किसी से साझा नहीं करते हैं और घुट–घुट कर मरते रहते हैं। इसकी वजह से वे मानसिक और शारीरिक बीमारियों से घिर जाते हैं।

यह एक सुखद बात है कि देश में महिलाओं, बच्चों, जानवरों, पेड़–पौधों आदि तक के संरक्षण के लिए नियम हैं, कानून हैं, प्रावधान हैं एवं मंत्रालय हैं। किन्तु क्षोभ की बात यह है कि पुरुषों के संरक्षण के लिए न कोई नियम–कानून है और न ही कोई प्रावधान या कोई मंत्रालय है ताकि जिसके माध्यम से वे अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों तथा भेदभाव के खिलाफ आवाज उठा सकें।

यह भी एक कड़वा सच है कि अब पूरे विश्व भर में पुरुषों द्वारा किए गए कामों को मुख्य रूप से घर में शादी को बनाए रखने में, बच्चों की परवरिश में, समाज में निभाई जाने वाली रस्मों में, सम्मान की मांग उठी है। पुरुष और स्त्री परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों का सही संतुलन और वर्गीकरण एक खुशहाल परिवार के लिए बेहद जरूरी होता है। चूँकि परिवार समाज की इकाई है इसलिए परिवार का संतुलन समाज का संतुलन है। अतः स्त्री और पुरुष दोनों के कार्यों का सम्मान किया जाना बहुत जरूरी है। किसी के काम का सम्मान उसे महत्वपूर्ण होने का अहसास दिलाता है और उसे बेहतर काम करने के लिए प्रेरित भी करता है। पुरुष घर के अन्दर अपने कामों के प्रति सम्मान व स्नेह की मांग कर रहा है। कहीं न कहीं ये बदलते समाज की सच्चाई है। पहले महिलाएं घर के काम देखती थीं और पुरुष बाहर के, खास तौर से परिवार चलाने के लिए धन अर्जन। समय बदला, परिस्तिथियाँ बदलीं, आज घरों में जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों नौकरी कर रहे हैं, दोनों को बाहर सम्मान मिल रहा है। घर आने के बाद जहाँ स्त्रियाँ रसोई का मोर्चा संभालती हैं वहीं पुरुष बिल भरने, घर की टूट–फूट की मरम्मत कराने, सब्जी–तरकारी लाने का काम करते हैं। पढ़े–लिखे पुरुषों का एक बड़ा वर्ग इन सब से आगे निकल कर बच्चों के डायपर बदलने, रसोई में थोड़ा–बहुत पत्नी की मदद करने और बच्चों को कहानी सुना कर सुलाने की नई भूमिका में नज़र आ रहा है। पर कहीं–न–कहीं उसे लग रहा है कि बढ़ते महिला समर्थन या पुरुष विरोध के चलते उसे घर के अंदर या समाज में उसके कामों के लिए सम्मान नहीं मिल रहा है। यह भी चिंता का एक बड़ा विषय है कि एक महिला हाउस वाइफ बन कर सम्मान से जी सकती है पर एक पुरुष हाउस हसबेंड बन कर सम्मान से नहीं जी सकता। उसे कोई सम्मान से नहीं देखता– न समाज, न परिवार, न पत्नी और न बड़े होने के बाद बच्चे।

मर्द को दर्द नहीं होता– बहुत कहते और सुनते हैं। पर फिर भी, 2015 में 65,000 पुरुषों ने आत्महत्या की। पूरे दिन जानवर की तरह काम करने वाला पुरुष कब अपना ही बोझ उठाने लायक नहीं रह पाता, ये उसे भी पता नहीं चलता। ऐसे में जरुरत है पुरुषों पर उत्पीड़न को रोकने की और पुरुषों को समाज में पहचान देने की। जरुरत है, एक "पुरुष आयोग" की स्थापना की।

प्रकृति की हस्ती

राम सिंह मीना

वैसे तो बहुत से अपनी हस्ती के सामने किसी को कुछ भी नही समझते है। आज, मैं यहाँ उनकी औकात दिखाने के लिए लिख रहा हूँ। धीरू भाई अम्बानी के पास इतनी दौलत थी कि यदि जिंदगी दौलत से मिली होती तो वे अमर हो जाते, लेकिन कुदरत ने अस्पताल भी नहीं पहुँचने दिया। स्टीवन पॉल जॉब्स ''56'' को कैंसर ने लील लिया। बहुत ऊँचाई पर स्थित हैं केदारनाथ धाम, पर फिर भी हजारों की जान बाढ़ से चली गई। आदमी की हैसियत मिटाने के लिये एक तमाचा काफी है। लेकिन उस की उपस्थिति धरा से मिटाने के लिए करोड़ों हथियार, परमाणु असला स्वयं ने बनाया है। अपनी शख्सियत और संपत्ति की रक्षा के लिए करोड़ों इंसानों को मौत के घाट उतारने को तैयार है।

विकास की दौड़ में हजारों साल की सम्पदा एवं करोड़ों साल के लिए सुरक्षित मानव आवास धरती को मटियामेट कर दिया। मशीनीकरण एवं मशीनी सुविधा के उत्पादन ने मानव जाति को पंगु बना दिया है। पृथ्वी के गर्भगृह से अन्धाधुंध दोहन ने पृथ्वी को असंतुलित कर दिया है। पानी तथा हवा की किल्लत विशेषकर भारत में भयानक हो गयी है। जिस विदोहन आधारित विकास को एक हजार साल में होना था, वह सौ साल में हो गया। जो विकल्प हजारों साल में तलाशने पड़ते वे अभी तलाशने पड़ रहे हैं। जो जमीन से जुड़े हुए व्यवसाय थे, जिन्हें विकसित होने में हजारों साल लगे उनको कुछ ही साल में बर्बाद कर दिया। सबसे शर्म की बात है कि जो ग्लोबलाइजेशन समानता के लिए होना था, मानव कल्याण के लिए होना था, वह ग्लोबलाइजेशन व्यापार, मुनाफाखोरी, लूट खसोट के लिए हो रहा है।

पृथ्वी ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है। भूकम्प की दर 50 वर्ष में प्रतिदिन (04 रिएक्टर स्केल) एक से चार तक पहुँच गई है। समुद्रीय तूफान साल में 15 आते थे। अब 15 अकेले अमेरिकन महाद्वीप में आते हैं। धरती का तापमान जोकि हजारों साल से स्थिर था, अब 0.5 वर्ष की दर से बढ़ने लगा है। दुनियां में बर्फ के जमे भण्डार 50 प्रतिशत तक सिकुड़ गए हैं। बारिश का औसत संतुलन 50 प्रतिशत तक बिगड़ गया है। जानलेवा बीमारियों का ग्लोबलाइजेशन हो गया है। भारत में इनकी संख्या बढ़कर 50 पार कर गई है। हम प्रकृति की हस्ती मिटाने चले थे, आज मनुष्य की हस्ती मिटने के कगार पर है। संभलने के लिए औद्योगिक उत्पादन के बहिष्कार के अलावा कोई चारा नहीं।

प्रेम का दिन

राम सिंह मीना

मोहब्बत के उत्सव दिन मोहब्बत के लिए लोगों तरसते देखा है।
कुछ कहते हैं ये दिल जान का मामला है, कुछ कहते है ये धोखा है।।

सतरंगी ख्वाब संजोए बहुत से जोड़े खड़े हैं, दरिया के दूसरी पार।
मिलन होने नहीं देगी, दुष्टों की टोली, बीच में अड़ी है नदी की गहरी धार।।

कोई नहीं, इंतजार करेंगे, सभ्यता के आगमन का, असुरों की हार का।
हो सकता है ये जन्म डंडे लील जाएं, अगले जन्म में प्रेम की बहार का।।

सभ्यता में मनुष्य केवल मनुष्य होता है, न कोई ब्राह्मण ना कोली होता है।
दुनियां के सभ्य देशों में ना कोई हिन्दू ना कोई मुसलमान होता है।।

प्रेमी, दुष्ट राक्षसों से चालाक निकले, तुम पार्कों में ढूंढते रहे।
वो पांच सितारा होटलों में, प्यार का इजहार करते रहे।।

तुमको पता है, फिर भी तुम, वहाँ नहीं पहुँच सकते।
वे ऊँचे घरों के शहजादे हैं, तुम नाली के कीड़े निकले।।

प्रबुद्धजनों! सभ्यता का श्री करके तो दिखाओ, प्रेमियों के प्राण मत खाओ।
हो सकता है, आप नाकाम प्रेमी हों, उनको तो कोई मिला कर दिखाओ।

हो सकता है, आप नाकाम प्रेमी हो, उनको तो कोई मिला कर दिखाओ।

तनावः अमूर्त दैत्य, जो मानव ऊर्जा नष्ट करता है

गौरव गुलाटी

तनाव किसी स्थिति के प्रति एक अंगीकृत प्रतिक्रिया है, जो किसी व्यक्ति की खुशहाली को खतरे में डाल सकता है या उसके प्रति चुनौती पैदा कर सकता है, जिसकी परिणति शारीरिक, मानसिक और भावात्मक 'संघर्ष' अथवा 'बेचैनी' में होती है।

यह रक्षात्मक या आंतरिक आक्रामक प्रतिक्रिया लंबे समय तक रहने से अंततः शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य को खराब करती है।

हर कोई समय–समय पर तनाव महसूस करता है और इस प्रतिस्पर्धात्मक जगत में यह अमूर्त दैत्य जीवन के सभी क्षेत्रों और सभी आयु समूह के लोगों में विद्यमान है।

तनाव क्यों होता है?

जब हम किसी हमले की आशंका से अपने शरीर या मन पर कोई दबाव महसूस करते हैं, तो उससे एक प्रतिहिंसा की भावना पैदा होती है। इस प्रक्रिया के दौरान हमारे शरीर में हारमोन्स और रसायनों (एड्रेनलिन, कोर्टिसोल और नोरपाइनफ्रिन) का एक जटिल मिश्रण स्रवित होता है, जो हमें एक शारीरिक कार्रवाई के लिए तैयार करता है।

तनाव के कारक

तनाव के कारणों में कोई भी ऐसी पर्यावरणीय स्थिति शामिल हो सकती है, जो किसी व्यक्ति से भौतिक या भावात्मक मांग करती है। उदाहरण के लिए रोजगार असुरक्षा, कोई काम न होना या अत्यधिक काम होना, सूचना का अति प्रवाह, घरेलू दबाव, परिवार या सामाजिक अपेक्षाएं और तेज रफ्तार जिंदगी, आदि बातें किसी भी व्यक्ति में तनाव का कारण बनती हैं।

तनाव के परिणाम

तनाव अपने को कई तरह से प्रदर्शित करता है। जब हम जीवन की स्थितियों के वशीभूत होकर अपने तनाव से मुक्त नहीं हो पाते, तो वह तब तक बढ़ता रहता है, जब तक हम विस्फोटित नहीं हो जाते अथवा टूट नहीं जाते। इससे शरीर और मस्तिष्क दोनों में खास तरह की विकृतियां आती हैं।

तनाव बनने की प्रक्रिया का निदान शारीरिक लक्षणों से होता है, जैसे सरदर्द, मांसपेशीय तनाव, उच्च रक्तचाप, सीने में दर्द, पाचन संबंधी समस्याएं, भोजन संबंधी विकृतियां, अनिद्रा, अरुचि, थकान, बालों का गिरना, आदि।

तनाव के कारण मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी परिवर्तन भी होते हैं, जैसे गुस्सा, चिड़चिड़ापन, आत्मसम्मान में कमी, घबराहट में हमले, मूड संबंधी फेरबदल, ऊंची आवाज में बोलना, विद्वेष, असहिष्णुता, नाराजगी, चिंता, अवसाद, अति मदिरापान, निराशा, आदि।

तनाव को नियंत्रित कैसे करें?

तनाव प्रबंधन या नियंत्रण ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें 'तनाव से बचने और तनाव से निपटने के उपाय' शामिल होते हैं, ताकि रोजमर्रा की कार्य प्रणाली में सुधार के प्रयोजन के लिए बेहतर व्यवस्था कायम की जा सके। यह ऐसी योग्यता है, जो स्थितियों, लोगों और अत्यधिक मांग करने वाली घटनाओं को नियंत्रण में रखने में मदद करती है। तनाव प्रबंधन उस समय अनिवार्य हो जाता है, जब हमें यह प्रतीत होता है कि हम जीवन में दबावपूर्ण स्थितियों का सामना कर रहे हैं।

तनाव प्रबंधन यह खोजने की प्रक्रिया है, कि हम यथासंभव तनाव से कैसे बच सकते हैं और अपरिहार्य तनाव होने पर उससे कैसे निपट सकते हैं।

तनाव प्रबंधन की विभिन्न तकनीकें

व्यायाम

कोई भी ऐसी शारीरिक क्रिया, जो हार्मोन (एंडोर्फिन) को मुक्त करने में मददगार हो. इसे मनोविज्ञान की भाषा में मूड एलिवेटर और मानसिक दर्द निवारक तथा शरीर में अवसादरोधी भी कहा जाता है। इन व्यायामों में पैदल चलना, साइकलिंग, दौडना, जॉगिंग, तैरना, आदि शामिल हैं, जो तनाव को विरेचित करने में मददगार होते हैं।

सांस पर ध्यान केन्द्रित करना

लंबी सांस लेने से फेफड़ों के पंजर की ओर विस्तार के जरिए पार्श्ववर्ती की बजाए नीचे की ओर विस्तार के लिए जगह बनती है। इस तरह गहरे सांस की इस प्रक्रिया में सीने की बजाए पेट का विस्तार होता है, इसे आमतौर पर ऑक्सीजन ग्रहण करने का

अधिक स्वस्थ और पूर्ण तरीका समझा जाता है और इसे अक्सर हाइपर वेंटिलेशन और तनाव के लिए एक उपचार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। तनाव और क्रोध के दौरान हमारी प्रवृत्ति सांस खींचने और उसे रोकने की रहती है। लंबी सांस लेने और छोडने से हमारा शरीर इस बात के लिए सतर्क हो जाता है कि वह आराम कर सकता है और आवश्यक शारीरिक कार्यों को अंजाम दे सकता है और संघर्ष या बेचैनी की स्थिति से उभर सकता है।

बॉडी स्कैन
इसके अंतर्गत गहरे सांस लेने की प्रक्रिया का इस्तेमाल मांसपेशियों को तनावमुक्त करने के लिए किया जाता है। कुछ मिनट तक लंबी सांस लेने के बाद हम एक समय में शरीर के एक हिस्से या मांसपेशियों के एक समूह पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वहां महसूस किए जा रहे किसी भी शारीरिक तनाव से मानसिक रूप में मुक्त होने का प्रयास करते हैं।

आत्म सम्मोहन (हिप्नोसिस): निर्देशित कल्पना
किसी शांत स्थान का चयन करें, जहां बैठ कर अभ्यास किया जा सके। आंखें बंद करें और मांसपेशियों को आराम पहुंचाने का प्रयास करें। शांतिदायक दृश्यों, स्थानों, अनुभवों को अपने मस्तिष्क में महसूस करें ताकि वहां ध्यान केंद्रित करके आप अपने को तनाव से मुक्त कर सकें। इससे आपकी रचनात्मक दृष्टि को सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी।

स्व–सृजित (ऑटोजेनिक) प्रशिक्षण
यह भी एक तरह की तनावमुक्ति तकनीक है, जिसमें व्यक्ति मानसदर्शन या मानसिक चित्रण और रचनात्मकताओं के जरिए स्थितियों के ऐसे समूह को दोहराता है, जो उसे मुक्ति की स्थिति की ओर प्रेरित करती हैं। यह तकनीक स्वायत्त मांसल प्रणाली की सहानुभूतिपूर्ण (फाइट या फ्लाइट मोड) और आराम और पाचन शाखाओं के बीच संतुलन बहाल करती है। ये शाखाएं किसी स्थिति के प्रति हमारी अनुक्रिया को नियंत्रित करती हैं।

शौक विकसित करना
अवकाश के दौरान किसी गतिविधि के प्रति अभिरुचि पैदा करके भी तनाव से मुक्त हुआ जा सकता है क्योंकि हमें एक प्राकृतिक बहिर्प्रवाह की आवश्यकता होती है, जिसमें हमारा ध्यान जो कार्य नहीं हुए हैं और जो हमें करने की आवश्यकता है, उनकी बजाए उन कार्यों पर केंद्रित रहता है, जिनमें हमें आनंद आता है।

ध्यान (मेडिटेशन)
यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अन्य सभी वस्तुओं, विचारों और परिकल्पनाओं को मस्तिष्क से निकाल कर किसी एक वस्तु या विचार पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता है। ये ध्यान बिंदु, कोई मंत्र उच्चारण अथवा स्वयं का श्वास या 'ओम' जैसा कोई पवित्र शब्द हो सकता है। इस तरह ध्यान केंद्रित करने से शरीर और मन को आराम मिलता है।

पुनरावर्तक प्रार्थना
दिन में पांच से बीस मिनट तक किसी लघु प्रार्थना अथवा प्रार्थना के किसी वाक्यांश की मौन पुनरावृत्ति करने और साथ में गहरे सांस का अभ्यास करने से मस्तिष्क को शांति और तनाव से मुक्ति मिलती है।

संगीत
संगीत सुनने से हमारे मस्तिष्क और शरीर को अच्छा लगता है और हमें अपेक्षित कार्यों पर बेहतर ढंग से ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। संगीत तनाव मुक्त करने वाले सबसे उपयुक्त उपायों में से एक है। जब हम संगीत सुनते हैं, तो हमारे शरीर में सेरोटोनिन (एक न्यूरो ट्रांसमीटर, जो व्यक्ति की खुशहाली बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होता है) की मात्रा बढ़ जाती है। दंत्य और शल्य क्रिया के दौरान संगीत सुनने से आदमी का दर्द और तनाव कम होता है।

योग निद्रा
यह सोने और जागने के बीच चेतना की एक स्थिति है। इसमें निद्रा और योग का मिश्रण होता है और यह सोने जाने जैसी स्थिति होती है। इसमें हम मौखिक अनुदेशों के एक समूह का अनुपालन करते हुए अंतर–जगत के प्रति सिलसिलेवार और सतत जागरूक रहते हैं। इससे हमें घोर तनाव के लक्षणों, जैसे चिंता, अवसाद, सीने में दर्द, धडकन तेज होने और पसीना आने जैसी स्थितियों से तत्काल राहत मिलती है। योग निद्रा का इस्तेमाल अभिघात परवर्ती विकृतियों से निपटने वाले सैनिकों द्वारा कारगर ढंग से किया जाता है।

निष्कर्ष
जब हमें तनाव का सामना करना पड़ता है, तो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यावधान आता है और हम संकटग्रस्त महसूस करते हैं। परंतु सभी प्रकार का तनाव खराब नहीं होता। तनाव का एक रचनात्मक पक्ष भी है, जिसे 'यूस्ट्रेस' कहा जाता है। इसका अर्थ है, सुधार लाने के लिए तनाव महसूस करना।

लोगों को उनके लक्ष्य हासिल करने के लिए सक्रिय और प्रेरित करने, उनके माहौल को बदलने और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सफल बनाने तथा उन्हें अधिक उत्पादक बनने में मदद पहुंचाने के लिए भी कुछ तनाव आवश्यक होता है। हमें यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि हम तनाव से लडने में अकेले नहीं हैं और यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका समाधान न किया जा सके। इसलिए परेशान न हों। खुश रहें, सब सही है और सही रहेगा। इन सरल पंक्तियों के साथ भी कभी–कभी हम आश्चर्यजनक ढंग से तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

साभारः सारिका रघुवंशी

बेहतर मानव संसाधन प्रबंधनः संगठन की कार्यकुशलता का आधार

राकेश कुमार ओझा

किसी भी संगठन की कार्यकुशलता के अनेक आधारस्तंभ होते हैं। जैसे – उत्पादित वस्तुओं अथवा सेवाओं की अच्छी गुणवत्ता, आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल, उच्च उत्पादकता, बेहतर मानव संसाधन प्रबंधन इत्यादि। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मेरा मानना है कि इनमें सर्वप्रमुख है बेहतर मानव संसाधन प्रबंधन। एक लक्ष्य एवं कुशल मानव संसाधन प्रबंधन का संगठन की सफलता में सर्वोपरि योगदान होता है।

वास्तव में मानव संसाधन प्रबंधन एक बेहद विस्तृत एवं बहुआयामी विषय है जिसके अंतर्गत विभिन्न तकनीकों एवं विधियों की अहम भूमिका होती है। हालांकि अनेक संगठनों ने व्यावहारिक रूप में कुछ प्रमुख तत्वों को अपनाकर नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। आइए! उन महत्वपूर्ण तत्वों पर एक नजर डालते हैं।

भर्ती – किसी भी संगठन में भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी एवं वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। भर्ती करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि योग्य एवं दक्ष उम्मीदवारों का ही चयन हो एवं उनके पास वांछनीय कार्यों हेतु आवश्यक योग्यता हो।

प्रशिक्षण – यह मानव संसाधन प्रणाली का एक प्रमुख तत्व है जो व्यक्ति की योग्यता एवं उसकी क्षमता के अंतर को पाटने का कार्य करता है। जब भी किसी नए कर्मचारी या अधिकारी की नियुक्ति हो तो संबंधित विभाग का यह दायित्व है कि उसे कार्य की बारीकियों से अवगत कराएं, भले ही वह व्यक्ति कितना ही योग्य व निपुण हो तथा किसी महत्वपूर्ण संगठन से क्यों ना आया हो, उसे वर्तमान कार्यों एवं उद्देश्यों से प्रभावी रूप से परिचित कराना आवश्यक है। कई संगठनों में कर्मचारियों की नियुक्ति उनके पूर्व अनुभव के आधार पर की जाती है एवं उनके पुनश्चर्या प्रशिक्षण की आवश्यकता को नजरअंदाज कर दिया जाता है जो कि उचित नहीं है। विशेषकर जूनियर स्तर के नए कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

नेतृत्व शैली – बहुधा नेतृत्व को सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु टीम की क्षमता बढ़ा सकने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह सही भी है। हालांकि, मुझे नेतृत्व को अत्यंत सरल एवं संक्षिप्त रूप में परिभाषित करने को कहा जाए तो मेरे विचार से नेतृत्व वह है जो लोगों की आकांक्षा के स्तर को बढ़ा दे। किसी संगठन में सही नेतृत्व अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का सकारात्मक रूप में मार्गदर्शन करता है। इसके अंतर्गत व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति एवं उनके भविष्योत्थान हेतु प्रेरणा के स्तर को बढ़ाना भी शामिल है। नेतृत्व का कार्य स्वयं परिवर्तन न लाकर लोगों में परिवर्तन लाने हेतु प्रेरित करना है। यदि प्रबंधक केवल इतना कार्य कर दे कि वह अपने अधीनस्थों की आकांक्षा के स्तर को बढ़ा दे तो अधीनस्थ कर्मचारी दिए गए लक्ष्यों को निर्धारित समय में पूरा करने के लिए अवश्य प्रेरित होंगे।

नेतृत्व की एक और महत्वपूर्ण शैली है कि वह कर्मचारियों की प्रशंसा सामूहिक रूप में करे एवं उनकी कमी की समीक्षा व्यक्तिगत रूप में करे। यदि कर्मचारी के अच्छे प्रदर्शन की सूचना सामूहिक रूप में दी जाए तो इससे कर्मचारियों का उत्साह बढ़ता है एवं उनके मनोबल में वृद्धि होती है। इससे अन्य कर्मचारियों में भी अपने प्रदर्शन को लेकर संकल्प की भावना जागृत होती है।

अभिप्रेरणा – अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रबन्धन द्वारा कर्मचारियों को सक्रिय एवं प्रेरित करना पड़ता है। इसे अभिप्रेरणा कहते हैं। यह एक शक्ति है जो व्यक्ति में प्रबल इच्छा जागृत कर स्वेच्छा से इस प्रकार से कार्य करने की प्रेरणा उत्पन्न करती है कि विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। यह वित्तीय (बोनस, कमीशन आदि) अथवा गैर–वित्तीय (प्रशंसा, विकास आदि) के रूप में हो सकती है। वर्तमान युग बदलाव का युग है। जीवन एवं कार्यक्षेत्र में जटिलताएं बढ़ गई हैं। ऐसे में प्रत्येक कर्मचारी की अभिप्रेरणा का कारक एवं स्तर भिन्न है। अतएव अच्छे प्रबंधन से अपेक्षा की जाती है कि वह प्रत्येक कर्मचारी की अभिप्रेरणा के कारक एवं स्तर का पता लगाए और तदनुसार उसे अभिप्रेरित करने का कार्य करे।

वैज्ञानिक व मानवीय दृष्टिकोण का समन्वय – वर्तमान युग विज्ञान का युग है तथा प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान एवं तकनीक पर निर्भरता बढ़ती ही जा रही है। हालांकि कई बार यह भी देखा गया है कि तकनीकी तथा व्यावसायिक पहलुओं पर जोर देते समय

मानवीय पहलुओं की अनदेखी हो जाती है। इसलिए प्रबंधन को एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जिससे अधिकाधिक व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ–साथ कार्मिकों का भी हित सुनिश्चित किया जा सके।

अतः मानव संसाधन प्रबंधन एक कला है। यह किसी भी संस्था अथवा संस्थान की उपलब्धियों का स्रोत है। विभिन्न संगठनों ने बेहतर मानव संसाधन प्रबंधन की तकनीकों को अपनाकर नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। अतएव, प्रत्येक संगठन को मानव संसाधन प्रबंधन के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए, संगठन के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। संगठन के अंदर कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भी संगठन के उद्देश्यों से स्वयं को जोड़ते हुए संगठन की उपलब्धि हेतु कार्यरत रहना चाहिए।

कहाँ पर बोलना है

रंजीत सिंह महतो

कहाँ पर बोलना है,
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है,
वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

कटा जब शीश सैनिक का,
तो हम खामोश रहते हैं।
कटा एक सीन पिक्चर का,
तो सारे बोल जाते हैं।।

नयी नस्लों के ये बच्चे,
जमाने भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ बोलें,
तो बच्चे बोल जाते हैं।।

बहुत ऊँची दुकानों में,
कटाते जेब सब अपनी।
मगर मजदूर जब माँगे,
तो सिक्के बोल जाते हैं।।

अगर मखमल करे गलती
तो कोई कुछ नहीं कहता,।
फटी चादर की गलती हो,
तो सारे बोल जाते हैं।।

हवाओं की तबाही को,
सभी चुपचाप सहते हैं।
चरागों से हुई गलती,
तो सारे बोल जाते हैं।।

बनाते फिरते हैं रिश्ते,
जमाने भर से हम अक्सर।
मगर घर में जरूरत हो,
तो रिश्ते भूल जाते हैं।।

कहाँ पर बोलना है,
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है,
वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

हिंदी को जनमानस का स्वरूप देना होगा

देशराज

हिंदी का रूप क्या हो? हिंदी सरल और सहज कैसे बने? हिंदी राजभाषा है या राष्ट्रभाषा? ये कई प्रश्न भारत की राष्ट्रीय भाषा के संदर्भ में विचारणीय हैं। इनमें सबसे बड़ा प्रश्न है– व्यावहारिक रूप में हिंदी के सहज, ग्राह्य और प्रभावोत्पादक होने का।

भारत में हिंदी की अनेक बोलियां, उपभाषाएं आदि प्रचलित हैं, अर्थात अनेकता में एकता की सच्ची प्रतिनिधि हिंदी ही है। प्राचीन समय से लेकर आज तक सिद्धों–नाथों, साधु–संतों, चारण–भाटों तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, पं. जवाहर लाल नेहरू आदि राजनैतिक नेताओं ने अर्थात् सभी वर्गों के लोगों ने जनसंपर्क एवं सार्वजनिक प्रचार के लिए हिंदी का ही प्रयोग किया है। इतना ही नहीं, भारत के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी में रचनाएं लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं।

भारत के पश्चिमी भाग में तीन भाषाएं – मराठी, गुजराती और सिंधी कभी भी हिंदी की विरोधी नहीं रही हैं। उत्तर में कश्मीरी, पंजाबी तथा उर्दू तो हिंदी की सबसे निकट की भाषाएं हैं और उन प्रदेशों से पचासों लेखक, कवि, पत्रकार, अध्यापक हिंदी में कार्य कर रहे हैं। पश्चिमी और उत्तर अंचल के राजनैतिक कार्यकर्ताओं और समाज–सुधारकों में अनेक हिंदी पोषक और देवनागरी को देश की एक लिपि बनाने के आग्रही महानुभाव हुए हैं।

वैदिक एवं लौकिक संस्कृत जनमानस के लिए क्लिष्ट एवं दुर्बोध होने पर पाली, प्राकृत आदि भाषाएं प्रचलित हुईं। संस्कृत भाषा की विभक्तियों के नियम प्राकृत और अपभ्रंश में शिथिल होते गए। प्रांतीय अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं, उपभाषाओं एवं बोलियों के विकास की परम्परा आरम्भ हुई। ईसवी सन् 1000 के पश्चात विकास की यह अवस्था प्रारंभ हुई। हिंदी खड़ी बोली और ब्रजभाषा का विकास शोरसैनी अपभ्रंश से हुआ।

हिंदी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करते हुए आज इतना आगा–पीछा किया जा रहा है। इतिहास साक्षी है कि हिंदी सदियों पूर्व भारत में सम्मान प्राप्त करती रही। राजपूत, मराठा एवं मुगल शासनकाल में हिंदी का प्रयोग होता रहा। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व अमीर खुसरों ने ''न आप आए न भेजी बतियां'' लिख कर संपर्क भाषा हिंदी की नींव सुदृढ़ की थी।

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल तक हिंदी का प्रयोग जारी रहा। लार्ड मैकाले ने राजकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया। उसके बाद स्वतंत्र भारत के शासकों ने हिंदी के राजभाषा पद को विभिन्न राजनीतिक विवादों में उलझा दिया। राष्ट्रीय संपर्क की भाषा हिंदी को संघ की राजभाषा की गरिमा 26 जनवरी 1950 को प्रदान की गई।

हिंदी एक अत्यंत सरल एवं सुबोध भाषा है। सरलता एवं सुबोधता की विशेषता के कारण भारत की अधिकांश जनता इसका प्रयोग करती है। सरलता एवं सहज अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी भाषा विश्व की भाषाओं की तुलना में उच्च स्थान की अधिकारिणी है। इतना ही नहीं, हिंदी एक समर्थ, समृद्ध तथा व्याकरण–सम्मत भाषा है। हिंदी के माध्यम से ज्ञान–विज्ञान की बातों को सरलता से व्यक्त किया जा सकता है।

भारत की मिली–जुली संस्कृति को विकसित करने एवं उसके प्रसार में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह हमारी संस्कृति की धरोहर एवं प्राण है। वह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखे हुए है। विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक एकता स्थापित करने में हिंदी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इन्हीं तथ्यों को लक्ष्य करके भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है – ''बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय की शूल''।

जबान पर जो शब्द अनायास ही थिरक आएं और कलम की नोक पर जो वाक्य बिना किसी परिश्रम के आ जाए – वही भाषा का सहज रूप है। लोगों को हिंदी में बोलने–लिखने में झिझक होती है। यह झिझक इस शंका के कारण होती है कि हम जो लिख या बोल रहे हैं वह अशुद्ध तो नहीं है? और इस झिझक में पड़ कर बहुत से भाई–बहन जो हिंदी में कामकाज करना चाहते हैं –नहीं कर पाते हैं।

यह प्रश्न बार–बार उठता है कि हिंदी हमारी राजभाषा कहाँ तक बन पाई है और हमारे सभी काम–काज हिंदी में क्यों नहीं होते। इन कारणों पर विचार करने से पृथक व्यावहारिक रूप से मूल तत्व इसके साधारण प्रयोग का है। भाषा को कभी भी आतंक, झिझक, संकोच का सबब और हीनता या असमर्थता का प्रतीक नहीं होने देना चाहिए।

पाठ्य–ग्रंथों की तथा विद्वानों के लिए लिखी जाने वाली पुस्तकों की हिंदी में तथा समाचार–पत्रों व जनता की हिंदी में अवश्य ही एक मौलिक भेद रहेगा। ग्रंथों की हिंदी में खिचड़ी भाषा और बेमेल शब्दों का प्रयोग अपराध है, लेकिन समाचार–पत्रों अथवा आम लोगों की बोल–चाल की भाषा में इस तरह का प्रश्न ही नहीं उठता तथा जनता आम बातचीत में जिस तरह के शब्दों और जिस तरह की भाषा का प्रयोग करती है, वही सरकार की भाषा होनी चाहिए एवं उसका बेझिझक प्रयोग होना चाहिए, वही असली राजभाषा है।

राजभाषा हिंदी का स्वरूप वही है जो आम जनता की बोलचाल की भाषा है। बोलने अथवा लिखने में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की आदि के शब्द इसमें रच–बस गए हैं। इसी कारण हिंदी भाषा का सौष्ठव इतना बढ़ गया है क्योंकि इसका हाजमा इतना चुस्त–दुरूस्त है कि वह हर शब्द को अपने में आत्मसात कर सकती है।

कई हिंदीतर भाषी राज्यों के लोग हिंदी को बदनाम करने के लिए यह तर्क देते हैं कि इस भाषा में शब्द अत्यंत कठिन हैं– जैसे हवाई–अड्डे के लिए विमानपत्तन, मजिस्ट्रेट के लिए दंडाधिकारी, कलक्टर के लिए समाहर्त्ता और पुलिस के लिए आरक्षी शब्द गढ़ा गया, इसलिए इस भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। इस तर्क में केवल हिंदी को लांछित करने की साजिश है क्योंकि हिंदी मूल के व्यक्ति भी हवाई अड्डे को हवाई अड्डा ही बोलते हैं। पुलिस के लिए पुलिस शब्द का ही अक्षरशः प्रयोग होता है। वैसे भी भाषा तो वही ग्राह्य हो सकती है जो जनमानस की समझ में आ जाए और साधारण जनता इन शब्दों का भली–भांति प्रयोग कर सके। यदि भाषा में इतनी क्षमता नहीं होगी तो वह अपना अस्तित्व खो देगी।

आजादी मिलने से पहले राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रीयता का अंग माना था। खादी–कार्य, छुआछूत–निवारण आदि के समान ही हिंदी प्रचार को भी रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत रखा गया था।

ऐसे मौकों पर सदा गाँधीजी की याद आती है। हमें उनके दृष्टिकोण से हमेशा ठोस मार्गदर्शन मिलता है, उनका कथन था ''यदि हिंदी बोलने में भूलें हों तो उसकी कतई चिंता नहीं करनी चाहिए। भूलें करते–करते भूलों को सुधारने का अभ्यास हो जाएगा। भूलों की चिंता आलसी लोगों के लिए, वरन् मुझ जैसे भाषा सीखने के इच्छुक अध्यवसायी सेवकों के लिए है।'' गाँधी जी का यह कथन अपने आप में तर्कसंगत तथा पूर्ण है।

हिंदी हम सभी हिन्द के निवासियों की अपनी भाषा है, इसका जितना प्रयोग हो सके, हम करें क्योंकि यह भाषा अपने आप में कई तरह की विशिष्टताएं लिए हुए है। सुंदर भविष्य की नींव सुदृढ़ करने का सही व सुलभ रास्ता हिंदी भाषा को बढ़ावा देना है, विदेशी भाषा के मोह को छोड़ कर। आगामी वर्षों में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

जब तक इस देश का राज–काज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम नहीं कह सकते कि देश में स्वराज्य है।

– मोरारजी देसाई

क्यों न करें हम हिंदी का प्रयोग?

आर.एस. पटवाल

देश के स्वतंत्र होने के पश्चात, हमारे राजनीतिज्ञों के सामने जो यक्ष प्रश्न उपस्थित हुआ वह था क्या सरकार का राजकाज गुलामी की भाषा अंग्रेजी को छोड़कर अपनी भाषा में नहीं किया जाना चाहिए? इसके लिए एक समिति का गठन किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. भीमराव आंबेडकर ने की। समिति के अन्य सदस्यों में हिंदी साहित्य और अन्य विधाओं के विद्वान व्यक्ति शामिल हुए।

उक्त समिति ने पर्याप्त विचार–विमर्श के पश्चात 14 सितम्बर 1949 को निर्णय लिया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा घोषित किया जाए। संघ सरकार का सारा शासकीय कार्य हिंदी अथवा नियमानुसार द्विभाषी किया जाए। केंद्र सरकार के शासकीय कार्य में हिंदी और अंग्रेजी के प्रयोग की स्थिति अभी भी बनी हुई है।

केंद्र सरकार के अधीन गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग कार्यरत है। यह विभाग केंद्र सरकार के मंत्रालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, संबद्ध कार्यालयों, निकायों और भारत सरकार के उद्यमों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को लागू करवाने के लिए जिम्मेदार है। इसी संबंध में राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 यथासंशोधित बनाए गए हैं। इसके साथ–साथ हिंदी के प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रपति महोदय के हस्ताक्षर से राजभाषा संकल्प भी जारी किया गया है।

देश के स्वतंत्र होने के पश्चात, सत्ता की बागडोर अपने हाथों में आने पर यह अपरिहार्य हो गया कि शासकीय कार्य को अपनी राजभाषा में किया जाए क्योंकि सरकार का अधिकतर कार्य अभी तक अंग्रेजी में ही चल रहा था। सरकारी तंत्र का पूरा ढांचा अंग्रेजी में कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रूप में उपलब्ध था। उनकी मानसिकता भी अंग्रेजी में कार्य करने की बनी हुई थी। अतः सर्वप्रथम, यह आवश्यक था कि शासकीय कार्य को राजभाषा हिंदी में करवाने के लिए एक आधारिक ढांचा तैयार किया जाए ।

शुरूआत में मंत्रालयों आदि के लिए हिंदी के पदों को स्वीकृत किया गया। बाद में अन्य कार्यालयों के लिए भी हिंदी पदों की स्वीकृति प्रदान की गई। जब कार्यालयों में हिंदी के पदों जिनमें कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, वरिष्ठ अनुवादक और हिंदी अधिकारी आदि थे, पर नियुक्तियां हो गईं तो मंत्रालयों में हिंदी का कार्य प्रारंभ हो गया। पहले–पहल, हिंदी में किया गया कार्य पूर्णतया अनुवाद पर आधारित था। परंतु बाद में यह अनुभव किया गया कि अनुवाद के माध्यम से हिंदी का प्रयोग अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुंच पाएगा। इसके लिए आवश्यक था कि मूल रूप से शासकीय कार्यों में हिंदी का प्रयोग किया जाए। यह तभी संभव था जब हमारे पास आवश्यक संख्या में हिंदी का ज्ञान रखने वाले अधिकारी और कर्मचारी उपलब्ध होते।

केंद्र सरकार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी का कामकाजी ज्ञान प्रदान करने और हिंदी आशुलिपि एवं टाइपिंग का प्रशिक्षण दिलाने के लिए हिंदी शिक्षण योजना शुरू की गई । इसके अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को पूर्णकालिक एवं अंशकालिक कार्यक्रमों के तहत हिंदी भाषा, हिंदी आशुलिपि एवं हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिलाया गया। साथ ही कार्यालय के सभी अनुभागों में कम से कम एक हिंदी टापइपराइटर की उपलब्धता सुनिश्चित की गई । किसी भी कार्य में रूचि पैदा करने के लिए आवश्यक है कि वह किसी न किसी हित एवं प्रोत्साहन से जुड़ा हो। यही तरीका शासकीय कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उपयोग में लाया गया। इसके अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को कार्यालय समय में प्रशिक्षण प्रदान किया गया और प्रशिक्षण की अवधि को शासकीय कार्य माना गया। साथ ही जाने–आने के लिए पात्रता अनुसार परिवहन प्रभार का भुगतान भी किया गया। इसके अतिरिक्त, हिंदी भाषा के विभिन्न पाठ्यक्रमों, हिंदी आशुलिपि एवं हिंदी टाइपिंग का पाठ्यक्रम निर्धारित प्रतिशत के साथ सफलतापूर्वक पूरा करने पर अराजपत्रित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं एक वेतन–वृद्धि के बराबर 12 महीने की अवधि के लिए वैयक्तिक वेतन के रूप में अग्रिम वेतन–वृद्धियां दी जाती हैं। जिन आशुलिपिकों (राजपत्रित एवं अराजपत्रित दोनों) की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर दो अग्रिम वेतन–वृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। साथ ही पाठ्य–पुस्तकें और लेखन सामग्री निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाती है। इसके साथ ही सहायक, अनुवादक, प्रवर

श्रेणी लिपिक तथा प्रवर लेखा परीक्षक, जिनके लिए हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है पर उपयोगी है, को अवर श्रेणी लिपिकों की भांति ही उक्त वित्तीय प्रोत्साहन तथा अन्य सुविधाएं दी जाती हैं।

कुछ ही समय बाद, केंद्र सरकार के कार्यालयों में उक्त विधि से प्रशिक्षण प्राप्त कर पर्याप्त संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध हो गए। परंतु इसके बावजूद भी, शासकीय कार्य में हिंदी का प्रयोग अपेक्षाकृत नहीं बढ़ रहा था। राजभाषा विभाग ने इसके लिए प्रोत्साहन की नीति अपनाई। अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन योजना चालू की। इस योजना के अंतर्गत 'क' क्षेत्र एवं 'ग' क्षेत्र में निवास करने वाले अधिकारियों के लिए अलग–अलग दो पुरस्कार रखे गए हैं। वर्तमान में पुरस्कार राशि ₹5000 प्रति पुरस्कार है। कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में टिप्पण/आलेखन मूल रुप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय (प्रथम–2, द्वितीय–3 और तृतीय–5 पुरस्कार हैं) पुरस्कार निर्धारित हैं जो क्रमशः ₹5000, ₹3000 और ₹2000 के हैं। अंग्रेजी आशुलिपिकों को अंग्रेजी डिक्टेशन के साथ–साथ निर्धारित मात्रा में हिंदी में डिक्टेशन कार्य करने पर ₹240 की राशि प्रति माह और अंग्रेजी टाइपिस्टों को अंग्रेजी टाइपिंग के साथ–साथ निर्धारित मात्रा में हिंदी में टाइपिंग कार्य करने पर ₹160 की राशि प्रति माह स्वीकृत किए जाने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त, मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के लिए राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 'राजभाषा शील्ड योजनाएं' भी चलाई गई हैं जो कि कार्यालयों को हिंदी के प्रयोग के संबंध में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्डों के तहत प्रदान की जाती हैं। इस के अलावा, हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए मूल साहित्य लेखन एवं हिंदी में अनूदित साहित्य हेतु भी निर्धारित मानकों के अनुसार पुस्तक लेखन/अनुवाद लेखन पर नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र भेंट किए जाते हैं।

भारत सरकार की राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के संबंध में सदैव यह नीति रही है कि राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन, पुरस्कार और प्रचार–प्रसार के माध्यम से लागू किया जाए। सरकार ने हिंदी के प्रयोग को लागू करने के लिए न तो दंड के माध्यम को कभी चुना है और न हिंदी को थोपने का प्रयास किया है। यदि भारत सरकार चाहती तो देश के स्वतंत्र होने के तुरंत बाद हिंदी को पूर्णतया लागू कर सकती थी। भारत के स्वतंत्र होने के समय हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी जिसका न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान था वरन् यह भारतवर्ष में सबसे अधिक समझी और बोली जाने वाली सम्पर्क भाषा थी। देश की स्वतंत्रता के साथ ही हमें भाषागत स्वतंत्रता भी मिली। भारत के संविधान में हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार के संबंध में आवश्यकतानुसार व्यवस्था की गई। संविधान की धारा 343 के अंतर्गत हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा घोषित की गई। संविधान की धारा 353 में हिंदी के विकास के लिए दिशा तय की गई जिसमें शासन की ओर से हिंदी के विकास के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी निर्धारित किया गया। हिंदी भाषा के लेखन में एकरूपता बनाए रखने के लिए भारत सरकार ने इसका मानकीकरण किया है। इसके फलस्वरूप, इसे तकनीकी रूप से अपनाने में भी आसानी हुई।

राजभाषा विभाग और भारत सरकार के हिंदी से जुड़े अन्य विभाग हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और उसमें सुधार के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। इस संबंध में नित नए प्रयोग और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। तकनीक में दिनोंदिन नए आयाम जुड़रहे हैं। तद्नुसार हिंदी भाषा की प्रगति हेतु उसे अपनाने के लिए अपेक्षित प्रयास किए जाते हैं। आप सभी जानते हैं कि वर्तमान समय कंप्यूटर युग कहलाता है। एक समय था जब कार्यालयों में लिखकर ही काम किया जाता था। टाइपराइटर के चलन से अधिकतर लेखन कार्य टाइपराइटर से किया जाने लगा। टाइपराइटरों में भी कई सुधार हुए। काफी समय बाद इलैक्ट्रिक टाइपराइटरों का दौर आया। ये टाइपराइटर बिजली से चलते थे। इनमें हिंदी अथवा अंग्रेजी में टाइपिंग का काम किया जा सकता था।

इलैक्ट्रिक टाइपराइटर कई विशेषताएं समेटे हुआ था। परंतु आधुनिकीकरण और विज्ञान की उन्नति के चलते कंप्यूटर का आविष्कार हुआ। सन् 1980 के उत्तरार्ध में सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटरों ने प्रवेश किया। यद्यपि प्रारंभिक कंप्यूटर और आज के कंप्यूटरों में दिखावट, आकार और विशेषताओं में काफी अंतर है। वर्तमान कंप्यूटरों में कई प्रकार के फोंट के प्रयोग की सुविधा, फाइल सेव करने, हिंदी एवं अंग्रेजी में टाइप करने, फोंट छोटा–बड़ा करने, पाठ रंगीन चिह्नित करने, हासिया छोटा–बड़ा करने, आदि जैसी कई प्रकार की सुविधाएं हैं। आज हम यूनिकोड के चलते कंप्यूटर से ही ई–मेल करके हिंदी पाठ का आसानी से आदान–प्रदान कर सकते हैं।

सरकारी काम–काज को हिंदी में करने के लिए छूट है कि आप उसका अनुवाद न कर स्वयं की भाषा में लिखें अर्थात यदि किसी शब्द का हिंदी पर्याय आपको सूझ नहीं रहा है तो आप अंग्रेजी के शब्द को हिंदी में लिख सकते हैं, उदाहरणार्थ सेंक्शन, सेक्शन, मार्केट, यूजफुल, रूटीन, आदि। इसके लिए किसी भी स्तर पर आपसे स्पष्टीकरण नहीं मांगा जाएगा। हाँ, यदि आप हिंदी में नहीं लिखते हैं तब अवश्य आपसे स्पष्टीकरण मांगा जा सकता है।

सरकार ने अपने प्रत्येक कार्यालय में यह सुनिश्चित करने के लिए कि राजभाषा हिंदी में काज–काज किया जाए, राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए एक हिंदी अनुभाग खोल रखा है। इस अनुभाग से न केवल आप अंग्रेजी में किए गए कार्य का हिंदी पाठ मांग सकते हैं वरन् स्वयं हिंदी में किए गए काम की जांच भी करवा सकते हैं। हिंदी में काम करने के लिए हिंदी अधिकारी की सहायता भी ले सकते हैं। यदि आप हिंदी में काम करने के इच्छुक हों तो सब कुछ संभव है।

प्रत्येक कर्मचारी सरकारी काम के साथ–साथ कुछ और प्रतिभाओं का भी मालिक होता है। सरकार हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सभी कार्यालयों को अपनी विभागीय पत्रिका हिंदी में छापने के लिए निर्देशित एवं प्रोत्साहित करती है। जो कर्मचारी कविता, कहानी, संस्मरण और किसी अन्य विद्या में हाथ आजमाना चाहते हैं वे विभागीय पत्रिका के लिए हिंदी में लिख सकते हैं। इस प्रकार, उत्तरोत्तर अपनी लेखन प्रतिभा को चमका सकते हैं। वैसे भी लेखन किसी व्यक्ति के मनोभावों को व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम है। कार्यालय अच्छे लेखों को पुरस्कृत भी करता है। इस प्रकार, प्रतिभा को एक उचित मंच उपलब्ध हो जाता है।

सरकार द्वारा प्रदान की गई इतनी सुविधाओं और प्रोत्साहनों के बावजूद भी हिंदी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जिसकी वह अधिकारिणी है। यह हम सबका संवैधानिक और नैतिक कर्तव्य है कि हिंदी का सरकारी काम–काज में अधिकाधिक प्रयोग करें। क्या यह सरकार का ही दायित्व है कि देश की स्वतंत्रता संग्राम की भाषा एवं सर्वसम्मति से घोषित राजभाषा को उच्च पद पर आसीन करे? क्या कारण है कि हम हिंदी का सरकारी काम–काज में प्रयोग करने से झिझक रहे हैं या पिछड़ रहे हैं? क्यों हम इसे अपने दायित्व के रूप में ग्रहण नहीं करते हैं?

आज जगत के 130 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी में संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने की अपेक्षित योग्यता और पात्रता विद्यमान है। हम विश्व में एक भारतीय के रूप में अपनी पहचान तभी बना पाएंगे जब हम इस महान तथा वैज्ञानिक भाषा को आत्मसात करेंगे। आइये! मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि इससे जुड़ें ताकि यह हमारे जीवन के समस्त कार्य–कलापों का एक अभिन्न अंग बने। अतः हम पुनः दिल से एक बार दृढ़ संकल्प लें कि हिंदी हमारी है और हम अपने दैनिक शासकीय कार्यों में स्वेच्छा से हिंदी का प्रयोग करेंगे। शुभ कार्य में देरी न करें।

जय हिंद, जय हिंदी !

पर्यावरण और हमारा कर्तव्य

(वर्ष 2017 के हिंदी सप्ताह का पुरस्कृत निबंध)

नीरू वर्मा

भूमिका

पर्यावरण का अभिप्राय है – हमारे आस–पास का वातावरण जिसमें हम रहते हैं। उसी के आधार पर हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता है। किसी भी देश का पर्यावरण हमें यह इंगित करता है कि वहाँ उस देश का व्यक्ति कितना स्वस्थ है और वह देश कितना विकास कर रहा है। स्पष्ट शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यदि हमारा पर्यावरण अच्छा होगा तो हमारा विकास भी स्वस्थ और अच्छे तरीके से हो पाएगा। हम स्वस्थ और दीर्घायु हो पाएंगे।

यदि आपके चारों ओर गंदगी हो, शुद्ध वायु न हो तो आप उस वातावरण में अपना जीवन किस प्रकार जी सकते हैं। पर्यावरण ही हमारे जीवन का सार और जीवन–रेखा है। अतः हमें अपने जीवन को सफल बनाने के लिए सर्वप्रथम अपना पर्यावरण स्वच्छ बनाए रखना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, हमें अपने मित्रों, संबंधियों, पड़ोसियों तथा अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक मनुष्य को इस संबंध में जागरूक करने की आवश्यकता है। यदि हम स्वस्थ होंगे तो हमारा परिवार, हमारा पड़ोस, हमारा मोहल्ला, हमारा प्रदेश, हमारा देश और हमारा विश्व स्वस्थ होगा। हमारी आने वाली अगली पीढ़ी अर्थात बच्चे निरोगी और तंदरुस्त होंगे। बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। वे स्वस्थ होंगे तो अपने राष्ट्र की उन्नति और विकास में योगदान कर उसे आगे बढ़ाएंगे। किसी ने यह सत्य ही कहा है कि 'जहाँ साफ–सफाई और शुद्ध व पवित्र वातावरण होता है वहीं पर ही देवी लक्ष्मी का निवास होता है'।

हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए ''स्वच्छ भारत अभियान 2013'' नामक एक स्वच्छता अभियान चला रखा है। इसके अंतर्गत देश के नागरिक चाहे वे शहरी हों या ग्रामीण, उन्हें जागरूक बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रिंट मीडिया से लेकर श्रृव्य एवं दृश्य प्रचार के सभी साधनों का उपयोग किया जा रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री श्री मोदी जी स्वच्छता अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रमों में आगे बढ़कर भाग ले रहे हैं। इसमें भारत सरकार के कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी भी विभिन्न अवसरों पर आयोजित स्वच्छता अभियानों में बढ़–चढ़ कर भाग ले रहे हैं। तो आइए, हम सब भी उनके इस पुनीत कार्य में साथ दें और अपने राष्ट्र को हरा–भरा और स्वस्थ बनाएं।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के उपाय

यदि हम चाहते हैं कि अपने देश को प्रदूषण मुक्त बनाएं तो इसके लिए सर्वप्रथम अपने घर और पड़ोस से शुरूआत करनी होगी। हमें अपने–अपने घरों के आस–पास अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे। पौधों की अच्छी तरह से देखभाल और सुरक्षा करनी होगी ताकि वे शीघ्र विकसित होकर बड़े हो जाएं। तत्पश्चात भी, यह ध्यान रखना होगा कि कोई भी अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए वृक्ष न काट दे अन्यथा सारी मेहनत बेकार हो जाएगी और समय की बरबादी होगी। यदि किसी कारणवश एक वृक्ष काटना पड़े तो उसके स्थान पर 10 पौधे लगाना अनिवार्य करना होगा।

कूड़ा, घरों के आस–पास खुले में नहीं पड़ा होना चाहिए। कूड़ा ढक्कन वाले कूड़ेदान में रखना चाहिए। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि सूखा और गीला कूड़ा अलग–अलग कूड़ेदान में रखा जाए ताकि कूड़ा निपटान के समय सुविधा और आसानी हो। यदि कूड़ा घर के आस–पास बिखरा होगा तो गंदगी और बीमारी फैलेगी और स्वास्थ्य को नुकसान होगा। इसके अतिरिक्त, कूड़े के ढेर से पेड़–पौधे पनप नहीं पाएंगे। हम सभी जानते हैं कि ''वन ही जीवन है''। अतः हमें अपने जीवन को बचाने के लिए वनों को बचाना होगा। न पेड़ काटें और न ही किसी को काटने दें।

लकड़ी से बना सामान और कागजों को सोच–समझकर इस्तेमाल करें क्योंकि आप यदि उसका नुकसान करते हैं तो इससे उनकी खपत बढ़ती है। उस खपत को पूरा करने के लिए हमें वृक्षों को काटना पड़ता है। हम एक बार यह सोच कर देखें कि यदि ये पेड़–पौधे और हरियाली न होती तो क्या हम लोग उचित ढंग से सांस ले पाते। नहीं, बिल्कुल भी नहीं। अतः यह आवश्यक है कि धरती पर अपने जीवन को बचाने के लिए हमें अपना पर्यावरण बचाना होगा।

पर्यावरण को बचाने का एक तरीका और है, वह है वाहनों के लिए प्रदूषण मुक्त ईंधन का प्रयोग। हमें डीजल मुक्त वाहनों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि वाहनों से निकला हुआ धुआं न केवल मनुष्यों को नुकसान पहुंचाता है बल्कि यह पेड़–पौधों को भी नष्ट कर देता है। इसलिए वायु प्रदूषण को रोक कर भी हम अपने पर्यावरण को नष्ट होने से बचा सकते हैं।

आजकल हम देखते और महसूस करते हैं कि घर से बाहर सड़क पर निकलते ही हमें पर्यावरण संबंधी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। हमें बाहर सांस लेने में परेशानी होती है। आँखों में जलन सी होने लगती है। सड़क पर कूड़ा–करकट पड़ा होने से बदबूदार वायु हमारे शरीर में प्रवेश करती है। इसका मुख्य कारण वाहनों और फैक्ट्रियों से निकला धुआं है। यह गंदा धुआं हमारे फेफड़ों और आंतों को काफी नुकसान पहुंचाता है। वहीं, दूसरी ओर देखें तो किसी उद्यान में जब हम जाते हैं तो वहां की हरियाली और फूल–पौधे मन मोह लेते हैं। वे हमें सुकून देते हैं और अपनी ओर आकर्षित करते हैं। शुद्ध वायु के कारण शरीर में स्फूर्ति का संचार हो जाता है क्योंकि वहां की वायु में भरपूर मात्रा में ऑक्सीजन होती है। ऑक्सीजन हमारे शरीर एवं जीवन के लिए प्राण–वायु है। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने वाहनों को प्रदूषण–मुक्त बनाएं और जो फैक्ट्रियां हैं उन्हें आवासीय स्थलों से दूर स्थापित करें।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में भारत सरकार का योगदान

यह सर्वविदित है कि हमारे देश की सरकार पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में हर संभव प्रयास कर रही है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए ''स्वच्छ भारत अभियान–2013'' की शुरूआत की है। स्वच्छ भारत का निर्माण कर हम स्वस्थ भारत बना सकते हैं और अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी से प्रेरित होकर उन्होंने इस मिशन को देश के लोगों तक पहुंचाया है और हम यह देख भी पा रहे हैं कि लोग साफ–सफाई के मामले में कितने जागरूक हो गए हैं।

अब प्रति वर्ष भारत में ''पर्यावरण दिवस'' बड़े उत्साह एवं जोर–शोर से मनाया जाता है। परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि केवल उसी दिन हम यह प्रण लें कि वृक्षों को नहीं काटेंगे और उसके बाद अपना प्रण भूल जाएं। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पेड़ों के नीचे खेल–कूद कर ही हम बड़े हुए हैं और जिनकी छत्र–छाया में हम पले–बड़े हैं, उनकी रक्षा करना और पोषित करना हमारा परम कर्तव्य है।

यदि हम सब मिलकर सरकार की उक्त योजना में बढ़–चढ़कर साथ दें तो वह दिन दूर नहीं जब हम गर्व से कह सकेंगे –''यह है प्रदूषण–मुक्त मेरा देश भारत''। लेकिन यह प्रण हमें मात्र कुछ दिनों, महीनों या वर्षों तक ही याद नहीं रखना है वरन् इसे जीवन का एक अंग बनाना है। अपनी भावी पीढ़ी में भी इस कर्तव्य का बीजारोपण करना है। तभी प्रदूषण–मुक्त भारत का अस्तित्व बना रहेगा।

पर्यावरण की रक्षा – हमारा कर्तव्य

हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण को दूषित होने से बचाएं। यदि हम पर्यावरण को बचा रहे हैं तो वास्तव में हम अपना जीवन सुरक्षित बना रहे हैं। यदि आज हम अपने पर्यावरण को बचाएंगे तो यही स्वच्छ पर्यावरण हमारे बच्चों के लिए और अगली पीढ़ी के लिए वरदान सिद्ध होगा। हम सभी की यह इच्छा होती है कि हमारे बच्चों को आगे बढ़ने और अपना विकास करने के लिए एक अच्छा पर्यावरण मिले। यदि आज हम ऐसा करेंगे तो हमें देखकर आगे आने वाली पीढ़ियों को भी इसका महत्व समझ में आ जाएगा। एक नागरिक यदि इस क्षेत्र में पहल करेगा तो उसे देखकर अन्य सभी नागरिक पहल करने आगे आएंगे। किसी एक की शुरूआत से ही यह संभव हो सकेगा। अपने स्वार्थ और लालच के लिए वृक्षों को न काटें अपितु जहाँ हमें प्रतीत होता है कि वृक्ष होना चाहिए वहां वृक्षारोपण किया जाए।

उपसंहार

अंत में हम कह सकते हैं कि यदि हमारा पर्यावरण स्वस्थ है तो हम और हमारा समाज स्वस्थ है। अतः हम सभी से अपेक्षा है कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। अधिक वृक्ष अर्थात अधिक आक्सीजन की उपलब्धता। जिन लोगों को सांस संबंधी बीमारियां हैं उनके लिए यह स्थिति वरदान सिद्ध होगी। आओ! हम सभी आज ही प्रण लें कि हम किसी सरकार या व्यक्ति–विशेष के लिए वृक्षारोपण नहीं करेंगे वरन् स्वयं एवं अपनों के लिए वृक्ष लगाएंगे। अपने महान भारतवर्ष को स्वच्छ और रोगमुक्त करेंगे।

जय हिन्द!

संपूर्णता की ओर

नीरू वर्मा

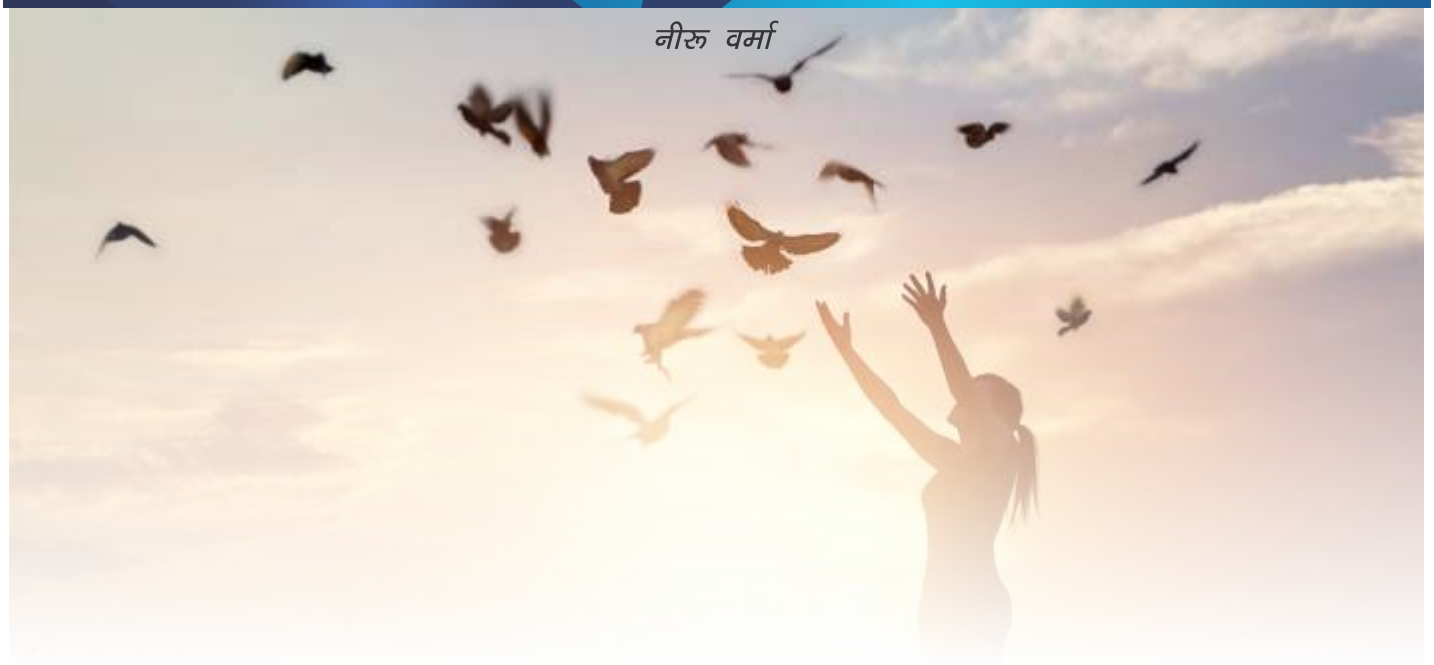

ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है ''मनुष्य''। इस संसार में कोई भी मनुष्य पूर्णतः सम्पूर्ण नहीं है। मनुष्य को ईश्वर ने इस संसार में सब कुछ देकर भेजा है जिसके द्वारा वह लगभग सभी चीजें प्राप्त कर सकता है और स्वयं को परिपूर्णता की ओर अग्रसर कर सकता है। परन्तु इंसान को संपूर्ण बनने के लिए या फिर हम कह सकते हैं कि परिपूर्णता की ओर जाने के लिए ईश्वर की महिमा चाहिए। ईश्वर इस संसार के कण–कण में है। वह हर जगह मौजूद है। कई लोग ईश्वर को इसलिए नहीं मानते क्योंकि उनका कहना है कि ईश्वर होता तो कभी किसी के साथ बुरा नहीं होता। परन्तु मनुष्य का जीवन एक ऐसी डगर है जिसमें आपको कभी सीधा, सपाट रास्ता नहीं मिलता है। इस रास्ते में कभी फूल भी मिलते हैं तो कभी कांटे भी चुभते हैं। परन्तु यह रास्ता हमेशा बदलता रहता है। जीवन ऐसा ही है और यह बात हम सभी जानते हैं। फिर इस जीवन से डरना क्या तथा इस रास्ते पर चलने से घबराना ही क्या और व्यर्थ में क्यों ईश्वर की महिमा पर संदेह करना?

आपने कई बार देखा होगा या महसूस किया होगा कि जब आप किसी मुसीबत में फंसे होते हैं और उस मुसीबत से निकलने का आपको कोई रास्ता दिखाई नहीं देता है तब आप उस समय क्या करते हैं। आपको उस वक्त अनेक भगवान, खुदा, अल्लाह और गुरू, आदि सब याद आते हैं तथा उस समय अचानक ही कोई इंसान रूपी देवता सामने आता है या कोई न कोई आशा की किरण दिखाई देती है और आपको उस मुसीबत से बाहर निकाल देते हैं। ईश्वर ने कभी हमें अकेला नहीं छोड़ा है। वह हर पल, हर क्षण हमारे साथ होता है, हमें सहारा देता है।

संपूर्णता की ओर अग्रसर होने के लिए ईश्वर का मानव–मात्र को संदेश है कि वह परस्पर बंधुत्व की भावना रखे, आवश्यकता पड़ने पर एक–दूसरे की मदद करे, प्राणी–मात्र से प्रेम करे, किसी से घृणा न करे, किसी प्रकार का भेदभाव न करे। मानवता के रास्ते को अपनाएं, सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति तथा उसका स्मरण करें और ईश्वर के द्वारा बनाई गई इस सृष्टि की सेवा करें।

''ईश्वर की सृष्टि की सेवा ही है सच्ची भक्ति,
इसी में है हमारी श्रद्धा और ईश्वर की शक्ति।
ईश्वर ने बनाई यह सृष्टि हमारे–तुम्हारे लिए,
आओ! हम इसकी सेवा करें ईश्वर के लिए।''

अतः यह सच है कि यदि हम अपने शरीर और ज्ञान का उपयोग, दूसरों की सेवा और कल्याण के लिए करते हैं तभी संपूर्णता का अनुभव कर पाते हैं क्योंकि मानव–सेवा ही ईश्वर–सेवा है।

रिटायरमेंट बनाम नई जिंदगी का आगाज़

राजेन्द्र प्रसाद

जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि रिटायरमेंट अर्थात सेवानिवृत्ति जीवन के हर पड़ाव की एक सहज प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया पर हमारे मनीषियों ने बहुत पहले ही विचार करते हुए जीवन को संतुलित बनाने का प्रयास किया है। उनका उद्देश्य जीवन के हर पल को उपयोगी बनाना था, जिसके अंतर्गत जीवन का विभाजन चार आश्रमों जैसे –(1) ब्रह्मचर्य, (2) गृहस्थ, (3) वानप्रस्थ, और (4) संन्यास में विभाजित किया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम के अनुसार उम्र के 5 साल तक बच्चा अपने माता–पिता के साथ रहता था और उसके बाद उसे गुरुकुल में भेज दिया जाता था। गुरुकुल में गुरु अपने शिष्यों को विविध विषयों का एवं चीजो का ज्ञान देते थे। मनुष्य का आचरण कैसा हो? आदि के बारे में बताते थे। इस आश्रम में विद्यार्थी अपना जीवन शिक्षा ग्रहण करने में व्यतीत करता है। ये सब चीजे ब्रह्मचर्य में आती हैं और ये मनुष्य के आयु के 25 वर्ष तक रहता था।

फिर उसके बाद गृहस्थाश्रम है जो की 25 से 50 वर्ष तक रहता था। इसमें मनुष्य की शादी हो जाती है और मनुष्य का काम घर चलाने के लिए पैसे कमाना और घर के सारे व्यक्तियों का ध्यान रखना होता था। गृहस्थाश्रम में अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष ये चार प्रमुख ध्येय होते थे।

जब घर की जिम्मेदारियां खत्म हो जाती है, तब मनुष्य का काम धीरे धीरे अपना मन सामाजिक कार्य करने में लगाना है और इसे वानप्रस्थाश्रम कहते हैं और ये मनुष्य के 50 से 75 वर्ष की आयु तक रहता था।

संन्यासाश्रम में मनुष्य अपना ध्यान घर से पूरी तरह हटाकर आध्यात्मिक कार्य में लगा देता था। जब मनुष्य की आयु 75 वर्ष से ज्यादा हो जाती है तब इस आश्रम के अनुसार उसे जीवन व्यतीत करना होता है। इस आश्रम का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति का होता था। इस तरह मनुष्य का जीवन चार भागों में बाँटा गया था।

जैसे–जैसे जमाना मॉडर्न होता गया आश्रम पद्धति को छोड़ दिया गया। अब क्या होता है कि आदमी मरने तक अपने घर के प्रति ही जिम्मेदार रहता है और हमेशा से टेंशन में ही रहता है। मैं जब भी रिटायर लोगों को देखता हूँ तब मेरे मन में एक सवाल हमेशा उत्पन्न होता है कि ये लोग सामाजिक कार्य नहीं करते अपितु हमेशा अपने से छोटे लोगों को बिन वजह उपदेश देने में लगे रहते हैं। इससे क्या होता है? दूसरे लोगों को तकलीफ होती है और साथ ही साथ घर में तनाव बना रहता है। ऐसे वक्त में किसी भी बात पर घर के छोटे–बड़े लोगों में सहमति नहीं बन पाती और घर का वातावरण तनावपूर्ण बना रहता है।

जिंदगी जीने का नाम है। अगर हम जीने के लिए कुछ काम करते हैं तो यह सतत् क्रिया लगातार चलती ही रहती है। यह दूसरी बात है कि समय–समय पर काम का स्वरूप, उसकी मात्रा और उसकी अवधि में भिन्नता आ जाती है। यह स्वाभाविक है कि व्यस्त कार्य वाली एक समय–सारणी, व्यस्त दिनचर्या, अल्प विश्राम वाले जीवन से एक निर्धारित आयु के पश्चात मनुष्य को भी विश्राम की आवश्यकता होती है। यद्यपि अधिकांश मनुष्य अपने कार्यकाल में इतना धन तो कमा और जमा कर ही लेते हैं कि शेष जीवन आराम

से व्यतीत कर सकें। लेकिन इसमें यह भी शर्त है कि व्यक्ति ने सेवानिवृत्ति से पूर्व का जीवन सादगी और व्यस्नों से परे व्यतीत किया हो। यदि कोई व्यक्ति उस कार्यकाल में अपनी कमाई का पर्याप्त हिस्सा बचत नहीं करता है और उसका अधिकांश भाग अपने ऐशो–आराम, विलासिता और फिजूल के कार्यों पर लगाकर नष्ट कर देता है तो यह स्वाभाविक है कि सेवानिवृत्ति के समय उसके पास आवश्यक धनराशि हाथ में नहीं होगी। वह फिर से उसी दोराहे पर खड़ा होगा जहां से उसने अपना वयस्क जीवन–चक्र शुरू किया था। आर्थिक जरूरतें उसके सामने मुँह खोले खड़ी होंगी।

इसके अतिरिक्त, इस बार परिस्थितियां उसके सामने एक भिन्न रूप में होगी। जहां अपने वयस्क जीवन–चक्र की आरंभिक अवस्था में उसके पास बढ़ती जवानी थी, ताकत थी, बुद्धि थी, हिम्मत और साहस था, वहीं अब ये सभी घटक अपने अस्ताचल की ओर ह्रास अवस्था में उसके पास होंगे, सिर्फ एक नया घटक उसके साथ जुड़ा होगा–जीवन और कार्य का अनुभव।

सक्रिय जीवन–शैली से सेवानिवृत्त होना जीवन का एक अनिवार्य अंग है, एक प्रक्रिया है। सेवानिवृत्त होना या सेवानिवृत्ति लेना दोनों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। किसी व्यक्ति को सेवानिवृत्ति इसलिए नहीं लेनी चाहिए कि बाकी जिंदगी को आराम करने, सोने, खाने, अखबार या पत्रिकाएं पढ़ने और घूमने–फिरने में बिताना है। बल्कि कुछ मकसद अथवा कुछ प्रयोजन होना चाहिए। कुछ काम ऐसे भी होते हैं जिन्हें किसी खेल, व्यवसाय या नौकरी में सक्रिय रहते हुए सफलतापूर्वक पूरा करना संभव नहीं होता है।

मनुष्य जीवन जीने के लिए काम करता है। परंतु काम करके सिर्फ आर्थिक सम्पन्नता को बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं है। इसमें भी कुछ और उद्देश्य हैं। हमें काम करने से ऊर्जा मिलती है, हमारी बुद्धि और स्मरणशक्ति प्रखर होती है। हमें कार्य करते हुए अपने भीतर छिपी हर प्रतिभा का उपयोग करने और प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। इससे हम लोगों पर अपनी योग्यता, कार्यक्षमता, अपने ज्ञान, पूर्व में अर्जित अनुभव और सफलता का सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इस प्रकार, हम एक अर्थपूर्ण और सार्थक सेवा अपने समाज, अपने राष्ट्र और मानव जाति को दे सकते हैं।

सेवानिवृत्ति के कुछ सिद्धांत हैं जिनके आधार पर सेवानिवृत्ति हमें सेवानिवृत्ति का आभास न देकर एक नए जीवन का आगाज देती है। अगर हम इनका पालन करते हैं तो न केवल एक स्वस्थ और खुशहाल नए जीवन की पारी की शुरूआत करने में समर्थ होंगे वरन् अपने परिवार के लिए, अपने समाज के लिए और अपने देश के लिए एक मूल्यवान सम्पति सिद्ध होंगे। इससे न केवल हमारा राष्ट्र लाभान्वित होगा वरन् संपूर्ण मानव जाति को प्रगति के पथ पर अग्रसर होने में मदद मिलेगी। ये सिद्धांत निम्नलिखित हैं:–

प्रथम सिद्धांतः
''रिटायरमेंट को रिटायरमेंट मानिए ही नहीं''

वास्तव में, रिटायरमेंट शब्द अपने आप में बड़ा बोझिल शब्द है। ऐसा महसूस होता है,मानो कुछ खत्म ही हो गया हो। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। सच तो यह है कि हम जीवन भर किसी न किसी से निवृत्त (रिटायर) होते रहते हैं और फिर किसी नई चीज से, नए काम से जुड़ जाते हैं। यानी कहीं कुछ खत्म नहीं होता बल्कि परिवर्तित होता है। मिसाल के तौर पर, हमारे बचपन की पोशाक बदल जाती है, हम हाईस्कूल से कॉलेज पहुंच जाते हैं, अविवाहित से विवाहित जीवन में प्रवेश करते हैं। फिर हम बच्चे नहीं रह जाते बल्कि बच्चों को जन्म देते हैं, माता–पिता बन जाते हैं, विभिन्न व्यवसायों, नौकरियों और सामाजिक कार्यों से जुड़कर नेता या अभिनेता बन जाते हैं। यहां तक कि कुछ लोग तो पुरुष से स्त्री अथवा स्त्री से पुरुष तक बन जाते हैं। मतलब रिटायरमेंट को हमें परिवर्तन काल समझ लेना चाहिए। फिर चाहे इल्ली से तितली बनने की बात हो या कोई किसान अथवा आम आदमी जिंदगी के किसी पड़ाव में सीएम या पीएम बन जाए।

द्वितीय सिद्धांतः
''सफलता से अधिक अर्थपूर्णता को महत्व दें''

सफलता आपने पहले ही हासिल कर ली है। बरसों तक बड़े परिश्रम से समाज के लिए काम किया, परिवार के लिए काम किया। लेकिन अब अगर आप इतनी कड़ी मेहनत नहीं कर सकते तो इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आप आगे कोई योगदान देना ही नहीं चाहते। बल्कि इसी समय आप अपने बीते अनुभव का लाभ लेकर अधिक अर्थपूर्ण काम कर सकते हैं। सफलता से भी आगे की ऊंची चीजें हैं आपके ये काम।

व्यक्ति इसलिए रिटायर नहीं होता कि बाकी की जिंदगी को रात को देर से सोने और सुबह सूर्य उगने के पश्चात भी बिस्तर पर पड़े रहने, फिर देर तक चाय के साथ अखबार चाटने, प्रातः भ्रमण के नाम पर एक चक्कर घर के बाहर लगाने, फिर आकर नहा–धोकर नाश्ता करने, टीवी देखने, देरी से दोपहर का भोजन करने और दिन में 3–4

घंटे सो जाने और तत्पश्चात उठकर सायंकाल चाय–नाश्ता करने तथा देर रात को भोजन करने और यदा–कदा अवकाश के दिन मित्रों–रिश्तेदारों से मिलने या घूमने–फिरने में बिताना है। बल्कि कुछ उद्देश्य होता है। कुछ काम ऐसे भी हैं जो नौकरी में रहते हुए व्यक्ति चाह कर भी उन्हें सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर पाता है।

सेवानिवृत्त व्यक्ति को जीने के लिए काम करना चाहिए न की केवल कमाने के लिए। काम इसलिए करना चाहिए ताकि उससे उसे एक ऊर्जा मिले, बुध्दि तेज हो और भीतर छिपी हर प्रतिभा का उपयोग करने का अवसर मिले। लोगों पर अपनी काबिलियत और अपने ज्ञान से पूर्व अर्जित सफलता का सकारात्मक प्रभाव डाल सके। इस प्रकार, सेवानिवृत्त व्यक्ति समाज और राष्ट्र को अर्थपूर्ण सेवा दे सकता है।

तृतीय सिद्धांतः
जिन लोगों को लोगों की जरूरत महसूस होती है, वे सबसे भाग्यशाली हैं।

उम्रदराज होने पर आपको हाशिए पर डाल दिए जाने जैसा महसूस हो सकता है। जैसे कि आपको यह लगने लगे कि समाज को अब आपकी जरूरत नहीं है। जमाने को आपकी सोच, आपकी चाहतों से कोई वास्ता नहीं। लेकिन यह स्थिति ही आपको आपकी काबिलियत का दोहन करने के लिए प्रेरणा देगी बशर्ते कि आप इस काबिलियत को पहचान लें। अन्यथा आप अपने भीतर तक ही सिमट कर रह जाएंगे।

समाज और आस–पास के परिवेश से कटे–कटे रहने से निराशा बढ़ती जाएगी इसलिए बेहतर है कि आप लोगों से रिश्ते बनाए रखें। बचपन अथवा युवावस्था में आप, चाहे अनचाहे ही सही, लोगों के बीच–धकेल दिए जाते हैं जैसे स्कूल–कॉलेज जाना, शौक पूरे करने के लिए किसी संस्थान में जाना अथवा अपने कार्यालय में सहकर्मियों के बीच रहना। लेकिन जब रिटायर होते हैं तो आपके पास खाली समय अधिक रहता है लेकिन बातचीत करने के लिए आपके आसपास ज्यादा लोग नहीं होते। यहां तक कि बच्चे भी दूर चले जाते हैं।

इसीलिए अक्सर परिजनों और मित्रों के परिवारों से मिलते–जुलते रहना चाहिए और उनका हाल–चाल पूछते रहना चाहिए। रिश्तों का ख्याल रखना भी सेहत का ख्याल रखने जैसा ही जरूरी है। अगर आप अपने आप में सिमटकर रह जाएंगे तो रिश्ते भी आप से कटते चले जाएंगे। नए लोगों से मिलना व सेवाकार्य करते रहना चाहिए। कभी–कभी विभिन्न क्षेत्रों के और विभिन्न उम्र के लोगों से मिलना जिंदगी को अर्थपूर्ण बना देता है।

उम्र तो एक क्षितिज है। उम्रदराज होते ही मौत के बारे में सोचना स्वाभाविक है। लेकिन यही सोच कि हमारे पास समय कम है हमें अपनी जिंदगी को मायने देने और इसका भरपूर आनंद उठाने का जवाब भी देती है। बीती जिंदगी में जो नहीं कर पाए वह करना चाहिए। अपनी अच्छाई, अपनी योग्यता को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक खुशियां बांटने में लगा देना चाहिए।

इस नए युग में, इसी तरह की सोच हमें यह चुनने में मददगार साबित होगी कि हम अपनी और अपने लोगों की खुशियां किस तरह हासिल करें। खुद से भी यही सवाल करें कि ''मैं ऐसा क्या करूं जिससे मुझे और मेरे अपनों को आनंद मिले।'' बस यहीं से आपको कुछ नया करने के सूत्र मिल जाते हैं।

जब बेहद उदास और हताश हो जाएँ

शकुन्तला अरोड़ा

हमारे जीवन में अक्सर ऐसे मौके आते हैं जब हमें सारे दरवाजे बंद नजर आते हैं और हम बेहद निराशा एवं उदासी से घिर जाते हैं। ऐसे अवसर पर हमें स्वयं को अपने परिवेश की अच्छी चीजों की याद दिलानी पड़ती है क्योंकि ऐसी चीजें हमारे आस–पास हमेशा मौजूद रहती हैं। जब हम अपनी तथा अपने आस–पास की अच्छाइयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो बाकी नकारात्मक चीजें अपने आप विलुप्त हो जाती हैं और हम पहले से कहीं ज्यादा मजबूत और बुलंद इरादों के साथ आगे बढ़ते हैं।

यहाँ पर, कुछ ऐसी ही अद्भुत बातों के बारे में चर्चा की गई है जो हमेशा मजबूती प्रदान करेंगी। जब भी उदासी और निराशा के बादल गहराएं तो इन 10 बातों को याद रखें :

1. **वक्त सारे घाव भर देता है:**
   हम जिन परिस्थितियों से भी गुजरे हों या फिर हमारे हालात कितने भी बुरे क्यों न रहे हों, ये जल्दी ही खत्म होंगे। हम इन हालातों से जूझना सीख जाएंगे और इनके साथ जीना भी सीख जाएंगे। धीरे–धीरे हमें इन हालातों की आदत हो जाएगी और सब कुछ पहले जैसा सामान्य हो जाएगा।

2. **मौके हर जगह होते हैं:**
   प्रत्येक दिन के साथ जिंदगी हमें अनगिनत मौके देती है। बस, हमें उन्हें पहचानने और उनके सर्वश्रेष्ठ इस्तेमाल करने के लिए प्रयासरत होना पड़ेगा।

3. **दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है जो हमारी मदद कर सकते हैं और हमें प्रेरित कर सकते हैं:**
   हो सकता है हम नकारात्मक सोच वाले और हमेशा जीवन को नकारने वाले बुरे लोगों से घिरे हों जो हमारे लक्ष्यों का मजाक उड़ाते हों और हमेशा हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हों। ऐसे लोगों से हम दूर ही रहें। हमें ऐसे लोगों की जरुरत नहीं है। अगर हम ऐसे लोगों के साथ जुड़े रहते हैं तो हम कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

   लेकिन यह भी याद रखें कि हमारे आस–पास अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है जो हमेशा हमें प्रेरित करते हैं और हमारा उत्साह बढ़ाते हैं। इंटरनेट के इस युग में ऐसी वेबसाइट्स और ब्लॉग्स भी हैं (जैसे हिंदी साहित्य मार्गदर्शन) जो हमें बेहतर बनने में हमारी मदद करते हैं। हमें बस उन्हें पहचानना और ढूंढना है।

4. **अगर हमें अपने बारे में कुछ पसंद नहीं है तो उसे हम कभी भी बदल सकते हैं:**
   कमियां हम सब में होती हैं। हो सकता है हमें अपना पतला या मोटा शरीर पसंद न हो या हम सोचते हों कि हमारे अंदर कुछ विशेष गुण नहीं हैं या फिर हम दूसरों से बातें करने में शरमाते हैं, लोगों के सामने बोलने में डर लगता है इत्यादि । इन सभी चीजों को बदला जा सकता है: बस हमें ये जानना है कि हम ऐसा बदलाव क्यों लाना चाहते हैं और इसके प्रति हमेशा प्रयासरत रहें। अगर हम वास्तव में अपना जीवन

बदलना चाहते हैं तो हर दिन अपनी इन कमियों को दूर करने का प्रयास करें।

5. कुछ भी उतना बुरा नहीं है जितना कि दिखता है:

कभी–कभी हम हालातों को इतना बढ़ा–चढ़ा कर देखने लगते हैं कि वे हमारे लिए सबसे बुरा प्रतीत होने लगते हैं जबकि वास्तव में सब कुछ, कुछ ही समय के लिए होता है और बदला जा सकता है।

6. जीवन सुलझा होता है इसे उलझाएं नहीं:

हमें अपने जीवन को हमेशा सुलझाने का प्रयास करना चाहिए इसलिए अपने अति–महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को त्याग दें और लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं इसका अनुमान लगाना छोड़ दें। जिन चीजों का इस्तेमाल आप बिलकुल नहीं करते हैं उनको फेंक दें और अपने डेस्क पर या घर में थोड़ा जगह बनायें। पुरानी बातों और भविष्य की चिंता में समय व्यर्थ न करें और वर्तमान में ध्यान केंद्रित करें।

7. असफलताएँ और गलतियां आशीर्वाद/वरदान हैं :

असफल होना सफलता के लिए किये गए प्रयास का सबसे बड़ा प्रमाण है, इसका मतलब है कि आप अपने जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत हैं।

किसी भी कार्य में प्रयास करने पर भी असफलता आपको अनुभव प्रदान करती है और मजबूत बनाती है और आपको सिखाती है कि किन गलतियों को दोहराने से आपको बचना चाहिए जो अगले प्रयास में सफलता सुनिश्चित कर सकती है।

8. ''जाने दो यारों'' ऐटिट्यूड अपनाएं : हमेशा आप प्रसन्न रहेंगे

कभी–कभी कुछ चीजों को छोड़ देना या किसी को माफ कर देना बहुत अच्छा साबित होता है। ऐसा करने से आपको शांति मिलती है और आपके मन से बोझ हल्का हो जाता है। शांत मन से ही आप वर्तमान में जी सकते हैं और अपने कार्यों में ध्यान लगाकर प्रगति कर सकते हैं।

9. कायनात हमेशा आपके पक्ष में काम करती है न की विरोध में :

जीवन कभी–कभी हमें अन्यायपूर्ण लगता है और हम ये सवाल पूछने लगते हैं कि ''हमेशा मैं ही क्यों'', लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए लगता है कि हम कभी कभी चीजों को कुछ ज्यादा ही व्यक्तिगत ले लेते हैं और कुछ ज्यादा ही उम्मीद लगा बैठते हैं या फिर उतना प्रयास नहीं करते जितना हमें करना चाहिए था। ब्रह्माण्ड हमें हमेशा संकेत देता रहता है लेकिन कभी–कभी हम बंद दरवाजों की तरफ इतनी देर तक देखते रहते हैं की आगे के मौके हमें दिखाई नहीं देते। आपको ब्रह्माण्ड के संकेतों को समझना होगा और आपके लिए जो सही है उसका चुनाव करना होगा।

10. हर अगला दिन आपके लिए नयी उमीदों का भण्डार लेकर आता है :

जब भी बुरा महसूस करें, आपने आप से ये दोहराएं कि अगला दिन नयी उम्मीदों के साथ आएगा और अपने साथ कुछ नया लेकर आएगा और यही सच है। गुजरा दिन कितना ही बुरा क्यों न हो, आने वाला दिन नया होता है और हमें तय करना होता है कि इसकी शुरुआत कैसे की जाए और इस कैसे बिताया जाए।

संस्थान में राजभाषा हिंदी

संस्थान अपने मूल उद्देश्य शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की ही भांति संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह सचेत और जागरूक है। संस्थान में कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

हाल ही में 14 सितम्बर 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर संस्थान को ''क'' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा वर्ष 2016–17 का ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' तृतीय प्रदान किया गया है।

संस्थान में वर्ष 2017–18 के दौरान हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार हैः–

1. **धारा 3(3) का अनुपालन** – संस्थान में सभी कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचनाएं, संविदाएं, करार, टेंडर के फार्म और नोटिस, नियम, दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले सभी सरकारी कागज व प्रशासनिक रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप में जारी की गईं।

2. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 का अनुपालन** – संस्थान के कोड, भर्ती नियम, संविधान, पुस्तकालय नियम व विनियम, अंशदायी भविष्य निधि नियम, सेवाओं की हस्तपुस्तिका, नागरिक प्राधिकार, परामर्श नियम, पुस्तकालय नियम व विनियम आदि द्विभाषी रूप से संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

   (क) सभी साइनेज, रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, लोगो, सीलें, पत्र शीर्ष, विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए जात हैं।

   (ख) संस्थान में कर्मचारियों द्वारा सभी प्रपत्र जैसे अवकाश आवेदन, चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल, यात्रा रियायत बिल, वाहन व्यय, ट्यूशन फीस प्रतिपूर्ति इत्यादि पूरी तरह द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए गए।

   (ग) संस्थान में आयोजित होने वाले सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रवेश पत्रों का द्विभाषी रूप में उपयोग किया गया।

3. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 का अनुपालन** – संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया गया।

4. **पत्राचार की स्थिति** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है इस प्रकार "क" और "ख" क्षेत्र में अधिक से अधिक पत्राचार हिंदी/द्विभाषी रूप में किया गया। इस प्रकार संस्थान में हिंदी पत्राचार की स्थिति लगभग वार्षिक कार्यक्रम 2017–18 के अनुरूप रही।

5. **संस्थान की द्विभाषी वेबसाइट** – संस्थान की वेबसाइट हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है तथा अंग्रेजी वेबसाइट के साथ–साथ हिंदी वेबसाइट को समय–समय पर अद्यतन किया गया।

6. **नराकास की बैठक** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का सदस्य कार्यालय है। संस्थान ने वर्ष के दौरान नराकास द्वारा समय–समय पर आयोजित सभी बैठकों में अपनी भागीदारी दर्ज की। वर्ष के दौरान नराकास सदस्यों कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

26.10.2017 को नराकास की बैठक में संस्थान से श्री गौरव गुलाटी उप–कुलसचिव व श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी

7. **शिक्षण कार्यक्रम** – संस्थान में शिक्षण–प्रशिक्षण अंतर्गत कुल 46 प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में देश के विभिन्न स्थानों से आए लगभग 608 अधिकारियों को हिंदी व अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा के माध्यम से प्रबंधन व अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय पर सघन शिक्षण/प्रशिक्षण दिया गया।

8. **छमाही प्रोत्साहन योजना** – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रोत्साहन योजनाओं का प्रावधान किया गया है। वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में छमाही प्रोत्सहान योजना लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2017–18 के दौरान हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले 9 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में प्रति कर्मचारी राशि ₹1000 प्रदान की गई।

9. **वार्षिक प्रोत्साहन योजना** – राजकीय कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान वार्षिक प्रोत्साहन योजना चलाई गई है जिसके अंतर्गत पूर्ण रूप से हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में राशि ₹5000 देने का प्रावधान किया गया है।

10. **तिमाही बैठक** – वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा नियमों के अनुपालनार्थ प्रत्येक तिमाही में निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यों की समीक्षा व प्रगामी प्रयोग संबंधी निर्णय लिए गए। बैठकों की तिथि निम्न प्रकार है :–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2018	10 अप्रैल 2018
अक्तूबर–दिसम्बर 2017	12 जनवरी 2018
जुलाई–सितम्बर 2017	11 अक्तूबर 2017
अप्रैल–जून 2017	14 जुलाई 2017

10 अप्रैल 2018 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित तिमाही विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

11. **हिंदी कार्यशाला** – संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की गईं। वर्ष 2017–18 में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की तिथियां इस प्रकार हैं:–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2018	28 मार्च 2018
अक्तूबर–दिसम्बर 2017	29 दिसम्बर 2017
जुलाई–सितम्बर 2017	06 अक्तूबर 2017
अप्रैल–जून 2017	30 जून 2017

12. **हिंदी में प्रकाशन** – संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2016–17 का हिंदी में प्रकाशन किया गया। हर वर्ष की भांति, हिंदी कक्ष द्वारा गृह–पत्रिका 'यज्ञ' अंक–10, वर्ष 2017 का प्रकाशन किया गया। पत्रिका में संस्थान की मुख्य गतिविधियां तथा राजभाषा नियमों के अतिरिक्त, आईआईएफटी परिवार अपने मन की बात कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आदि के माध्यम से व्यक्त करता रहा है। इससे सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है एवं विचारों का आदान–प्रदान होता है।

स्वागत

संस्थान अपने शिखर को बनाए रखने व इसकी उत्तरोत्तर उन्नति को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर शिक्षण–प्रशिक्षण के क्षेत्र में विषय विशेष के विशेषज्ञों (संकाय सदस्यों) तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों की भर्ती करता रहा है। इसी क्रम में, वर्ष 2018 के मार्च माह के दौरान दिल्ली संस्थान में निम्न संकाय सदस्यों ने अपना कार्यभार संभाला है। इन सभी संकाय सदस्यों का संस्थान में हार्दिक स्वागत है।

डॉ. अंकित केशरवानी
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – विपणन

डॉ. प्रीति टाक
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – विपणन

डॉ. आशीष गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – विपणन

डॉ. गिन्नी चावला
सहायक प्रोफेसर
अभिरुचि का क्षेत्र – संगठनात्मक व्यवहार एवं मानव संसाधन

संस्थान में हिंदी सप्ताह

संस्थान संविधान के नियम व विनियमों के अनुपालन में संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए कटिबद्ध है। प्रमाण के रूप में 14 सितम्बर 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा संस्थान को ''क'' क्षेत्र में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' तृतीय प्रदान किया गया। संस्थान में 11–15 सितम्बर 2017 के दौरान हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता ने हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। इस दौरान निबंध प्रतियोगिता, टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी तथा कथा–कहानीः कहो अपनी जुबानी प्रतियोगिता आयोजित की गई। संस्थान के अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में अपनी सहभागिता दर्ज की। पुरस्कार विजेता कर्मचारी निम्न प्रकार हैं:–

क) निबंध प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता		
श्रीमती नीरू वर्मा	–	प्रथम पुरस्कार
श्रीमती दीपा पी.जी.	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर)
श्रीशान्ति स्वरूप भारद्वाज	–	द्वितीय पुरस्कार
श्री रंजन कुमार	–	द्वितीय पुरस्कार
ख) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
श्री राकेश कुमार ओझा	–	प्रथम पुरस्कार
संजीव कुमार	–	द्वितीय पुरस्कार
प्रियंका मुंजाल	–	तृतीय पुरस्कार
ग) हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता		
श्री राकेश कुमार ओझा	–	प्रथम पुरस्कार
श्री बरूण भट्टाचार्य	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर)
श्रीमती नीरू वर्मा	–	द्वितीय पुरस्कार
श्री संजीव कुमार	–	द्वितीय पुरस्कार
घ) कथा–कहानी : कहो अपनी जुबानीप्रतियोगिता के प्रथम चार विजेता		
श्रीमती अमिता आनंद	–	प्रथम पुरस्कार
श्री एस. बालासुब्रामणियन	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर)
श्री राम सिंह मीना	–	द्वितीय पुरस्कार
श्री सतपाल सिंह	–	द्वितीय पुरस्कार

समापन समारोह –दिनांक 15 सितम्बर 2017 को हिंदी सप्ताह के समापन के अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ताकि मनोरंजन के माध्यम से हिंदी का संदेश प्रत्येक कर्मचारी तक पहुंचाया जा सके। इस अवसर पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न इनामी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत ने पुरस्कृत किया।

कोलकाता परिसर

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के अंतर्गत कोलकाता परिसर पर 11–14 सितम्बर 2017 के दौरान हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 11 सितम्बर 2017 को कोलकाता परिसर के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन की उपस्थिति में हिंदी सप्ताह का विधिवत प्रारंभ करते हुए इस दौरान हिंदी आशु भाषण, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी व कविता पाठ का आयोजन किया गया। कोलकाता परिसर से इन सभी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों/अधिकारियों/संकाय सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और हिंदी सप्ताह के कार्यक्रम को रोचक बनाया। पुरस्कार विजेता कर्मचारी निम्न प्रकार हैं:–

1) हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
श्री अतुल कुमार, श्रीमती श्रावणी मंडल	–	प्रथम पुरस्कार
श्री आयन कुमार सेठ, कु. ऋद्धि चटर्जी	–	द्वितीय पुरस्कार
सुश्री जैनब इमाम, सुश्री उमामा नसरीन हक	–	तृतीय पुरस्कार
श्री निशीत मंडल, श्री देबाशीश नस्कर	–	सांत्वना पुरस्कार
2) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
श्री अतुल कुमार, श्री आयन कुमार सेठ, श्री मृणाल कांती मंडल	–	प्रथम पुरस्कार
डॉ. श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री निलोय मुखर्जी, सुश्री उमामा नसरीन हक	–	द्वितीय पुरस्कार
सुश्री ओमश्री मजूमदार, सुश्री जैनब इमाम, श्री दिबयेंदू पात्र, श्री कौशिक नाथ, श्री तनमय रॉय, श्री देबाशीश नस्कर	–	तृतीय पुरस्कार
3) तत्क्षनिक भाषण प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
सुश्री ओमश्री मजूमदार	–	प्रथम पुरस्कार
श्री द्वैपायन ऐश, श्री रामकृष्ण दास	–	द्वितीय पुरस्कार
सुश्री उपासना आचार्य, सुश्री ऋद्धि चटर्जी	–	तृतीय पुरस्कार
3) कविता पाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता		
श्री अतुल कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
श्री रामकृष्ण दास	–	द्वितीय पुरस्कार
सुश्री उपासना आचार्य	–	तृतीय पुरस्कार

समापन समारोह—14 सितम्बर 2017 को हिंदी सप्ताह के समापन समारोह पर कोलकाता केन्द्र प्रमुख, डॉ. के.रंगराजन ने अपने संबोधन में प्रशासनिक कार्य अधिकाधिक हिंदी में करने पर बल दिया तथा हिंदी प्रतियोगिताओं के सहभागियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया ।

सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई

सेवानिवृत्त संस्थान सदस्य

एक इकाई के रूप में परिवार की उन्नति की परिधि में उस परिवार के सदस्यों की मुख्य भूमिका रहती है। आज आईआईएफटी अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक है जिसका श्रेय इसके परिवार के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों अर्थात छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। वर्ष 2017–18 के दौरान इस परिवार के कुछ सदस्य अपना सेवाकाल पूरा करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में अपना योगदान दिया है। हम सभी इन सदस्यों के समृद्ध व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

श्री कंवर सिंह
वरिष्ठ लिपिक
28.01.1986 - 31.08.2.017

श्री नेत्र सिंह
दफ्तरी
05.01.1987 - 30.09.2017

श्रीमती सरोज बाला,
वरि. निजी सहायक
01.10.1982 - 31.01.2018

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

राजभाषा हिंदी का प्रादुर्भाव

भारत विभिन्नताओं का देश है जिसमें अनके भाषा–भाषी लोग रहते हैं। स्वतंत्रता पूर्व पूरा देश अनेक खण्डों में विभाजित था जिसको एक सूत्र में पिरोने की दूर–दृष्टि के उद्देश्य से अनेक महापुरुषों ने अनेक भाषाएं होते हए पूरे देश की एक सामान्य भाषा होने पर विचार करते हुए हिंदी को देश की एक संपर्क भाषा के रूप में चुनने का विकल्प प्रदान किया। स्वतंत्रता उपरांत इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इस प्रकार राजभाषा हिंदी के प्रादुर्भाव का कालखण्ड निम्नप्रकार देखा जा सकता है:

स्वतंत्रता पूर्व

1833–86	गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833–86) ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।
1872	आर्य समाज के संस्थापक महार्षि दयानंद सरस्वती जी कोलकाता में केशवचन्द्र सेन से मिले तो उन्होने स्वामी जी को यह सलाह दे डाली कि आप संस्कृत छोड़कर हिंदी बोलना आरम्भ कर दें तो भारत का असीम कल्याण होगा। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिंदी हो गयी और शायद इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिंदी ही रखी।
1873	महेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा हिंदी में पदार्थ विज्ञान की रचना की गई।
1877	श्रद्धाराम फिल्लौरी ने भाग्यवती नामक हिंदी उपन्यास की रचना की।
1893	काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई।
1918	मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी।
1918	इंदौर में संपन्न आठवें हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था – मेरा यह मत है कि हिंदी को ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।
1918	महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की गई।
1930	हिंदी टाइपराइटर का विकास (शैलेन्द्र मेहता) हुआ।
1935	मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री रूप में सी० राजगोपालाचारी जी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

स्वतंत्रता उपरांत राजभाषा हिंदी के घटनाक्रम

15.08.1947	स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा का गठन किया गया जिसमें हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रस्तावित किया गया।
14.09.1949	संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस दिन को अब हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
26.01.1950	संविधान लागू हुआ। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान (अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351) लागू हुए।
1952	शिक्षा मंत्रालय द्वारा हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऐच्छिक तौर पर प्रारम्भ किया गया।

27.05.1952	राज्यपालों/उच्चतम तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्तियों में अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा व भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप के अतिरिक्त अंकों के देवनागरी स्वरूप का प्रयोग प्राधिकृत किया गया।
जुलाई 1955	हिंदी शिक्षण योजना की स्थापना। केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, संबद्ध व अधीनस्थ कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण।
07.06.1955	बी.जी. खेर आयोग का गठन किया गया (संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अंतर्गत)
अक्तूबर 1955	गृह मंत्रालय के अन्तर्गत हिंदी शिक्षण योजना प्रारम्भ की गई।
03.12.1955	संविधान के अनुच्छेद 343 (2) के द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए संघ के कुछ कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का प्रयोग किए जाने के आदेश जारी किए गए।
31.07.1956	खेर आयोग की रिपोर्ट राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत की गई।
1957	खेर आयोग की रिपोर्ट पर विचार हेतु तत्कालीन गृह मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में संसदीय समिति का गठन।
08.02.1959	संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अन्तर्गत संसदीय समिति की रिपोर्ट राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत की गई।
सितम्बर, 1959	संसदीय समिति की रिपोर्ट पर संसद में बहस। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा आश्वासन दिया गया कि अंग्रेजी को सह–भाषा के रूप में प्रयोग में लाए जाने हेतु कोई व्यावधान उत्पन्न नहीं किया जाएगा और न ही इसके लिए कोई समय–सीमा ही निर्धारित की जाएगी। भारत की सभी भाषाएं समान रूप से आदरणीय हैं और ये हमारी राष्ट्र भाषाएं हैं।
1960	हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि का अनिवार्य प्रशिक्षण आरम्भ किया गया।
27.04.1960	संसदीय समिति की रिपोर्ट पर राष्ट्रपति के आदेश जारी किए गए जिनमें हिंदी शब्दावलियों का निर्माण, संहिताओं व कार्यविधिक साहित्य का हिंदी अनुवाद, कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार, विधेयकों की भाषा, उच्चतम व उच्च न्यायालयों की भाषा आदि मुद्दे हैं।
10.05.1963	अनुच्छेद 343(3) के प्रावधान व श्री जवाहर लाल नेहरू के आश्वासन को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसके अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह–राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई।
05.09.1967	प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया। यह समिति सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में महत्वपूर्ण दिशा–निदेश देने वाली सर्वोच्च समिति है। इस समिति में प्रधानमंत्री जी के अलावा नामित केन्द्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रूप में शामिल किए जाते हैं।
16.12.1967	संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया जिसमें हिंदी के राजकीय प्रयोजनों हेतु उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करने, प्रगति की समीक्षा के लिए वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने, हिंदी के साथ–साथ 8वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने, त्रिभाषा सूत्र का अपनाए जाने, संघ सेवाओं के लिए भर्ती के समय हिंदी व अंग्रेजी में से किसी एक के ज्ञान की आवश्यकता अपेक्षित होने तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उचित समय पर परीक्षा के लिए संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की बात कही गई। (संकल्प 18.8,1968 को प्रकाशित हुआ)।
1967	सिंधी भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित की गई।
08.01.1968	राजभाषा अधिनियम, 1963 में संशोधन किए गए। तदनुसार धारा 3 (4) में यह प्रावधान किया गया कि हिंदी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण संघ सरकार के कर्मचारी प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें तथा केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं, उनका कोई अहित न हो। धारा 3 (5) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए आवश्यक है कि सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा (जिनकी राजभाषा हिंदी नहीं है) ऐसे संकल्प पारित किए जाएं तथा उन संकल्पों पर विचार करने के पश्चात अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त करने के लिए संसद के हरेक सदन द्वारा संकल्प पारित किया जाए।

1968	राजभाषा संकल्प 1968 में किए गए प्रावधान के अनुसार वर्ष 1968–69 से राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए विभिन्न मदों के लक्ष्य निर्धारित किए गए तथा इसके लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया।
01.03.1971	केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन।
1973	केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के दिल्ली स्थिति मुख्यालय में एक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना।
1974	तीसरी श्रेणी के नीचे के कर्मचारियों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों तथा कार्य प्रभारित कर्मचारियों को छोड़कर केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के साथ–साथ केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हिंदी भाषा, टंकण एवं आशुलिपि का अनिवार्य प्रशिक्षण।
जून, 1975	राजभाषा से संबंधित संवैधानिक, विधिक उपबंधों के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग का गठन किया गया।
1976	राजभाषा नियम बनाए गए, जिन्हें राजभाषा नियम 1976 के नाम से जाना जाता है।
1976	संसदीय राजभाषा समिति का गठन। तब से अब तक समिति ने अपनी रिपोर्ट के 8 भाग प्रस्तुत किए हैं जिनमें से प्रथम 7 पर राष्ट्रपति के आदेश जारी हो गए हैं। आठवें खण्ड में की गई संस्तुतियों पर मंत्रालयों व राज्य सरकारों की टिप्पणी प्राप्त की जा रही है।
1977	श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।
1981	केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन किया गया।
25.10.1983	केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों, सरकारी उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों में यांत्रिक और इलेक्ट्रानिक उपकरणों द्वारा हिंदी में कार्य को बढ़ावा देने तथा उपलब्ध द्विभाषी उपकरणों के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की स्थापना की गई।
21.08.1985	केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान का गठन कर्मचारियों/अधिकारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए किया गया।
1986	कोठारी शिक्षा आयोग की रिपोर्ट। 1968 में पहले ही यह सिफारिश की जा चुकी थी कि भारत में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। उच्च शिक्षा के माध्यम के संबंध में नई शिक्षा नीति (1986) के कार्यान्वयन – कार्यक्रम में कहा गया
1986–87	इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्रारम्भ किए गए।
09.10.1987	राजभाषा नियम, 1976 में संशोधन किए गए।
1988	विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री नरसिंह राव जी हिंदी में बोले।
1992	कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली भाषाएं संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित की गई।
14.09.1999	संघ की राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयंती मनाई गई।
20.10.2000	राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार वर्ष 2001–02 से आरंभ करने की घोषणा की गई जिसमें निम्न पुरस्कार राशियां हैं: (1) प्रथम पुरस्कार – 100000 रुपये (2) द्वितीय पुरस्कार – 75000 रुपये (3) तृतीय पुरस्कार – 50000 रुपये (4) 10 सांत्वना पुरस्कार – 100000 रुपये
02.09.2003	डॉ० सीता कान्त महापात्र की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जो संविधान की आठवीं अनुसूची में अन्य भाषाओं को सम्मिलित किए जाने तथा आठवीं अनुसूची में सभी भाषाओं को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने की साध्यता परखने पर विचार करेगी। समिति ने 14.6.2004 को अपनी रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत की।

11.09.2003	मंत्रिमंडल ने एन.डी.ए. तथा सी.डी.एस. की परीक्षाओं में प्रश्न पत्रों को हिंदी में भी तैयार करने का निर्णय लिया।
14.09.2003	कंप्यूटर की सहायता से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए राजभाषा विभाग ने कंप्यूटर प्रोग्राम (लीला हिंदी प्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण, लीला हिंदी प्राज्ञ) तैयार करवा कर सर्व साधारण द्वारा उसका निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया।
08.01.2004	बोडो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा गया।
22.07.2004	केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन/कार्यान्वयन के लिए न्यूनतम हिंदी पदों के मानक पुनः निर्धारित।
06.09.2004	मातृभाषा विकास परिषद् द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर उच्चतम न्यायालय ने यह पाया कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन का उद्देश्य हिंदी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं के लिए तकनीकी शब्दावली में एकरूपता अपनाया जाना है। यह एकरूपता तकनीकी शब्दावली के प्रयोग के लिए आवश्यक है। उच्चतम न्यायालय ने निदेश दिया कि आयोग द्वारा बनाई गई तकनीकी शब्दावली भारत सरकार के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की जा रही पाठय पुस्तकों में प्रयोग में लाई जाए।
14.09.2004	कंप्यूटर की सहायता से तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड़ भाषाओं के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार करवा कर उसके निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया।
20.06.2005	525 हिंदी फोंट, फोंट कोड कनवर्टर, अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश, हिंदी स्पेल चेकर को निशुल्क प्रयोग के लिए वेब साइट पर उपलब्ध कराया गया।
08.08.2005	राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तकलेखन पुरस्कार का नाम बदल कर ''राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तकलेखन पुरस्कार'' कर दिया गया तथा पुरस्कार राशि बढ़ा कर निम्न प्रकार कर दी गईः प्रथम पुरस्कार – ₹ 2 लाख द्वितीय पुरस्कार – ₹ 1.25 लाख तृतीय पुरस्कार – ₹ 0.75 लाख सांत्वना पुरस्कार (10) – रू 10 हजार प्रत्येक को
14.09.2005	कंप्यूटर की सहायता से बांगला भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया। मंत्र–राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर प्रशासनिक एवं वित्तिय क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया।
14.09.2006	कंप्यूटर की सहायता से उड़िया, असमी, मणिपुरी तथा मराठी भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया। मंत्र–राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर लघु उद्योग एवं कृषि क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया।
14.09.2007	कंप्यूटर की सहायता से नेपाली, पंजाबी, कश्मीरी तथा गुजराती भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया। मंत्र–राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर सूचना–प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सुरक्षा क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध कराया गया। श्रुतलेखन–राजभाषा (हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्सट) अंतिम वर्जन जन–प्रयोग के लिए मार्किट में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

2017	राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने आधिकारिक भाषाओं पर संसद की समिति की इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रपति और ऐसे सभी मंत्रियों और अधिकारियों को हिंदी में ही भाषण देना चाहिए और बयान जारी करने चाहिए, जो हिंदी पढ़ और बोल सकते हों। इस समिति द्वारा हिंदी को और लोकप्रिय बनाने के तरीकों पर 6 साल पहले 117 सिफारिशें दी गई।

विश्व हिंदी दिवस

विश्व हिंदी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अन्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिंदी का विकास करने और इसे प्रचारित–प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनो की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसी लिए इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

विश्व हिंदी सचिवालय

मॉरीसस के मोका गाँव में स्थित है। सचिवालय, 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी का एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में संवर्द्धन करने और विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। इसकी संकल्पना 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान की गई जब मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करने का प्रस्ताव किया।

इस संकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों के बीच 20 अगस्त 1999 को एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। 12 नवम्बर 2002 को मॉरीशस के मंत्रिमंडल द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम पारित किया गया और भारत सरकार तथा मॉरीशस की सरकार के बीच 21 नवम्बर 2001 को एक द्विपक्षीय करार सम्पन्न किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय ने 11 फरवरी 2008 से औपचारिक रूप से कार्य करना आरंभ कर दिया।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्य

1	प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक एवं अध्यक्ष, वि.रा.भा.का. समिति	अध्यक्ष
2	डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
3	श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव	सदस्य
4	डॉ. नितिन सेठ, आचार्य	सदस्य
5	श्री बिमल पंडा, प्रणाली प्रबंधक	सदस्य
6	डॉ. आर.पी. शर्मा, सह–आचार्य – कोलकाता सेंटर	सदस्य
7	श्री संजय वर्मा, संयुक्त कॉरपोरेट नियोजन सलाहकार	सदस्य
8	श्री पीताम्बर बेहेरा, वरिष्ठ वित्त अधिकारी	सदस्य
9	श्री भुवन चन्द्र, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
10	श्री देशराज, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
11	प्रतिनिधि, वाणिज्य मंत्रालय	सदस्य
12	प्रतिनिधि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय	सदस्य
13	श्रीमती दीपा पी.जी., वित्त अधिकारी	सदस्य
14	श्रीमती नलिनी मेशराम, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
15	श्री बी. प्रसन्नाकुमार, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
16	श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
17	श्री रामसिंह मीना, सहायक पुस्तकालाध्यक्ष	सदस्य
18	श्रीमती कविता शर्मा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
19	श्रीमती सुमीता मारवाह, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
20	श्री अनिल कुमार मीणा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
21	श्रीमती ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
22	श्री प्रदीप कुमार खन्ना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
23	श्री द्वैपायन ऐश, अनुभाग अधिकारी – कोलकाता सेंटर	सदस्य
24	श्री चिरंजी लाल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
25	श्रीमती मोहनी मदान, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
26	श्री गौरव गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
27	श्री करूण दुग्गल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
28	श्री जितेन्द्र सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
29	श्री राकेश कुमार ओझा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
30	श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

झलकियाँ

2017-18

IND-IB
RESEARCH WORKSHOP

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
51st CONVOCATION

अंतरराष्ट्रीय
योग
दिवस
International
DAY of
YOGA

www.iift.edu

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

दिल्ली परिसर :
बी–21, **कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–**110016
फोन : +91-11-39147200, 201, 202, 203, 204, 205

कोलकाता परिसर :
1583 **मदुराहा, चौबघा रोड, वार्ड नंबर 108, बरो XII कोलकाता–**700 107
फोन : 033-24195700, 24195900, 24432453
वेबसाइट : www.iift.edu

डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली
के लिए I'M WORLD द्वारा मुद्रित व प्रकाशित